Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

५४०१

No. ६५० क

Title श्रीरामचन्द्रचन्द्रिका

Author

Extent १६२ पत्र Age

Subject काव्य

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सं. [illegible]

श्रीरत्नचन्द्र चरित्र का

१६२ पन्नासी

[illegible]

5471/175

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

29

श्री रणबीर पुस्तकालय
सं. ८५
नं. ५५०
मन्दिर श्री रघुनाथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा १ ॐ स्वस्ति श्रीगणेशायनमः अथश्रीरा
मचंद्रकाकृतिकविकेसवदासलिष्यते
दंडक बालकमृनालनिज्यौंतोरिडारै
सबकालकठिनकरालत्यौंअकालदीहदुष
कौं विपतिहरतहठिपद्मिनिकेपातसमपं
कज्यौंपतालपेलिपठवैकलुषकौं दूरि
कैकलंकअंकभवसीस ससिसमराषत
हैंकेसौदासदासकेवपुषकौं सांकरे
कीसांकरनिसंकाहोतसनमुषदसमुष
मुषजोवैंगजमुषमुषकौं ॥१॥ कवित्त वा
नीजगरानीकीउदारतावषानीजाइऐसी
मतिकहिधौंउदारकौनकीभई देवताप्र
सिद्धसिद्धऋषिराजतपवृद्धकहिकहिहा
रेसबकहिनकाहूलई भावीभूतवर्तमा
नजगतवषानतहैं केसौदासक्यौंहूनव
षानीकाहूपैगईवर्नैपतिचारमुषपूतव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नैपौत्रमुखवानी वर्नै षट्मुखनदपिनईनई २
कवित सरनभगनसुरुषभरुषभगंनपरिह
रनवृत्तावैनबत्तावैनवत्तावैगोरउक्तिकौं
दरसनदेतजिनदासनसमुकैंननेनेत
कहैं वेदक्लाऽरिभेदउक्तिकौं जानियह
केसौदासश्रवृदिनरांमरामकहरवररहत
नउरतभनरुक्तिकौं रूपदेंहिअणमा
हिगुणदेहगणमाहिभक्तिदेहमहिमा
हिनांमुदेहिमुक्तिकौं ३ सुगीतकाछं
द सनायंज्ञानिगणाढिहैजगसिद्धम
उहभाव हलसदनपासिदहैं नहमिश्रपं
उतनव गणेससौं सुनपाइयौत्रुपिका
सीनाथुश्रगाधु श्रसेषसासीबचारको
जिनजानियोमनसाधु ४ दोहरा उप
ज्यौंजिनकेमेदमतिसुजनकविकेसौदास
रामचंद्रकीचंद्रकाकरियोभाषप्रकास ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० दोहा सोरहसैअठावनाकातिकसुदिबुध
२ वार रामचंद्रकीचंद्रकाकीनौतबअवतार
१९ दोहरा वालमीकमुनस्वपनमैदीनौ
दरसनुचारु केसवयहतिनसोकह्यौकीजो
पाऊसुषसारु ७ मुनिवचनगासतरूप
नीछंद भलोवुरोनतूगनैहथ्याकथ्यौकथ्यै
सुनैं नरामदेउगाइहै नरामलोकपाइहै ८
छपैछंद वोलनवोल्यौवोलदियोफिर
ताहिनदीनौ मारिनमार्यौसत्रुक्रोधमन
वृथानकीनैं जुरिनमुरेरनमाहिलोककी
लीकनलोपी दानसत्यसनमानसुजस
दिसविदिसावोपी मनलोभमोहमद
कामवसिभयोनकेसवदासभन पार
ब्रह्मश्रीरामहैअवतारीअवतारिमन ९
मधुछंद राम नाम सत्य धाम १० नर
नजाछंद तरहैतावर्नैवौपरउसौ देवन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रजगतकोंसरसैं ॥ प्रियाभारछंद छ
ककेंडहै रघुनंदजू जगयोंकहैं जगवंद
जू १२ सोमराजीछंद गनैंपकरूपीसु
नौवेदगावै महादेवजाकोंसदाचितला
वै १३ कुमारललिताछंद विरंचगुण
देषगिरागुननिलेषे अनंतमुषगावे वि
सेषैनपावै १४ दोहरा सुनिपतियहउ
पदेसदैजवहीभयेप्रदिष्ट केसवदासत
हीकरेश्रीरामचंद्रजूइष्ट १५ गाथाछं
द रामचंद्रपदयं हुंदारकहेंदाका द
नीयं केसवमतिभूतनियाविलोचन
चर्चरीकायते १६ चनप्यादीछंद जिन
कौजसहंसाजगतप्रसेसामांनसमां
नसरेना लोचनअग्निरूपनस्पामसरू
पनअंजनअंजतसंना कालत्रयदरसी
निगुनपरसीहोतविलंबनलागे जिन

रा॰ केगुनकहिहैंसबसुषलहिहैंपापपुरा
३ तनभागे ७ दोहरा जागतजागीजोति
जगमगरूपसुषचंद तिनरामचंद्रकीचं
द्रकाबरनतहौंबहुछंद ८ रोलाछंद
सुभसूरजकुलकलसनृपतिदसरथस
बभूपत तिनकेसुतसुनिचारचतुरचित
चारुचारुमति रामचंद्रभवचंद्रभरथ
भारथभवभूषन ९ षताछंद सरजू
सरितातटनगरबसैबसैबर अवधनाम
जसधामधरअघओघविनासीसबपुरवा
सी अमरलोकमानहुनिगर १० छपैछं
द गाधिराजकोपुत्रसाधिसबसत्रुमित्र
बल दानदयाविधानबस्यकीनेभुव
मंडल कैमनअपनेहाथजीतजगइंद्रिय
गनअति तपबलयाहीदेहभयेछत्रीतें
रिषपति तिहपुरप्रसिद्धकेसवसुमति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कालश्रुनीतागतनिगुन नहश्रुद्धाने गति
मगुणारिष्यो विस्तामित्रपवित्रमुंन २१ मं
इरिकाछंद सुनिआये सरज्जू सरिता तीर
नहूदेषे जलअमलनीर नवनिरषनिरष
हुतिगतिगंभीर कछुवरननलागे सम
तिधीर २२ छंद श्रुतितिपटकटलगति
नदापिआप वहदेतिसहगतिकुवलया
पु कछुआपुउअपिगतिगतिवलंति क
लिपतितनकोफलफलेत मदमतीज
दपिमातेंगसंग श्रुतिनदपिपततिपाव
नतरंग बहूनूरनूरूश्रुतिहूजलमनेहू श्रुत
नातस्वर्गहूकरसदेहू २३ नवपदीछंद.
जैहंजहूलसतनमहूमदमत वलवारन
वारनदलनन श्रेगश्रेगवरवेनिवेदन श्रे
उनिभुरकेदेषि लेषअभ्रषवरवंदन दी
हदीहूदिव्याजनकेकेसवदासकुमार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा दीनेराज्ञादसरथयहिदिगपालनउपहार २४
४ प्रडिलछंद देषिवागअनुरागउपजियकोल
निकोकिलकलधुंनजिय राजतिरतिकीस
षीसुवेसनि मनोकहतरतिपतिसंदेसनि २५
छंद फूलफूलतनफूलबढावत मोदनिम
हामोहउपजावत उडतपरागनचितउडाव
त भवरभवतिनहिचित्तभ्रमावत २६ पादा
कुलछंद सुभसरसोभै मुनमनछोभै सरसि
जफूले अलिरसफूले २७ पद्मावतीछंद दे
षीवनवारीचंचलभारीतदपितपोपनमांनी
अतितपमयलेषीग्रहप्पितदेषीजगतदिगं
बरवांनी जदपिदिगंबरपुष्पवतीनरनिरष
निरषमनमोहै पुष्पवतीअतिअतिपावनग
र्भसहितजलसोहै २८ छंद मुनगर्भसंजोगी
रतरसभोगीजगजनलीनकहावै जगजन
लीनानवानिवीनापियकोजियतेंभावै प
नहिरमावैचित्तभ्रमावैसोतनप्रेमबढावै सो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिनरातनिग्रहुतभांतनिकबिक्कलकीरति
गावैं २९ छंद जलचरगेलैंबहुविधबोलैं उ
रग्ररुकाहीबरनीनजांही ३० हाकलिकाछंद
संगलियेरिषसिष्यनिधाने पावकसेतपतेज
नजानेदेषतिसरिताउपवनभले देषनऊैपघ
रीकहुंचले ३१ मधुभारछंद दुचेग्रवास प्रति
भुजप्रकास सोभाविलास सोभैप्रकास ३२
छंद प्रतिसेदरग्रतिसाघु घिरुनररहतपलग्रा
धु सयतितपोमयमांन देउधारनीजांन ३३
हरिगीतकाछंद सुभभ्रोणगिरगणसिषर
परग्रतिउदितग्रेषदसीभनैां बहुवाश्वारदश्री
वेहरद्दिउरफिदामनिउतिमनो रुचिप्रचंडप्रा
ताप पावकभगरस्हरपरेकोचली किकिंत
सरितसदेसमैंस्वरकरीदिवमेलनभली ३४
दोहरा जीतजीतकीरतलई साधुनकीवहुभां
त ग्ररघरकोंघीसोभिजैमानहुंतिनकीपांत २५
त्रिभंगीछंद सुभघरग्रतिसोभैमुनमनलो
भैरिगुगनकोभैदेषिसवै बहुउदामिबाजैंग्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा रूगगाजैदिगाजलाजैसुननननवै जहुउस
५ नतिपटहीविघ्नपटहींजगजयमटही
सकलनिसा सबईसबबिपक्षमवसतज
प्याक्रमदेवभरीसमदिवसनिसा छंद क
विकुलविद्यापरसकलकलापरराजराज
वरवेषवनै गणपतिसुषदायकपशुपा
तिलाइकसूरसहायककौनगनै सेनाप
तिवृषजननमंगलगुरगनपर्मराज्ञमनवु
ड्यंनी बहुसमसुमनसुतरूकरुनामय
श्रुरुखरतरंगनीसोभमनी ३८ हीराछंद·
पेउतिगणमेंउतगुणदेइतिमनदेषियें ख
त्रियमवरपर्मश्रकरक्षवसमरलेषियें वै
ससहिरसनवरहितपापप्रगटमानियें सु
इसके वि यभक्तिजीयजगतजानियें ३०
सिंघाश्रवलोकनछंद श्रतिमुनंतनमनुत
हमोहिरसौ कक्कुउपबलवचननजाइक
सौ पसुपंकनारिनरनिरषनवै दिनराम
चंदगुनगुननतसवै ३८ मरहटाछंद·

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अति उत्तम अगार निवंनी पगार निज तुचिं
ता मन नारी बहुमत नम खूपन सुप तिश्र
गन श्रीकै सी श्रुत हारी अति विविचित्र नचित्र
निहूरि कैसी परम विचित्र निके सब दाम नि
हारी जन विस्व रूप की अमल आरसी रची
विचित्र विचारी ३५ सोरठा जगजस वेत
विसाल राजा दसरथ की पुरी चंद सहित
सब काल भाल थली जनु ईस की ५०
कैरिया पंउ तिअति सिगरी पुरी मनहु
गिरा गति गूढ सिवन जत नचेउ का मो
हति मूढ अमूढ मोहत मूढ अमूढ देव
संगादि तसी सोहै सब सिंगार सदेह मनौं
रति मन्मथ मोहै सब सिंगार सदेह सक
ल सुख सुखमा मंडित मनहु सची विधरची
विविधरची विविध विधि वरन न पंडित धा
कपै छंद मूलनि ही कौ जहां अधो गति के
सव गाइय हो मद्द तास न अधम यहै पै कै मलि
नाइय दुर्गति दुर्ग निही जु कुटिल गति सा

त्रिभंगी छंद में राम कलीका द्विमात्र तगनि लिख्यत
विजया छंद गन कै रत्नगन के साथ अथवै प० ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ लिननंहीमे श्रीफलकौअभिलाषअगटक
९ पिङ्गलकेजीमें अतिचंचलहैजहचलदा
लैबङ्गविश्वनीजनार मनुमोहिरह्यौरिष
राजजूअङ्गुतनगरुनिहारि ५२ सोरटा
नागरनगरअपार महामोहजनमभित्रसे
त्र्ष्णोतजाकुठार लोभसमुद्रअगस्तिसे ५२
दोहरा विश्वामित्रपवित्रमुनिकेसवदास
उदार देषितसोभानगरकीगरोराजदर
वार ५४ इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांश्री
मत्सकललोकलोचनचकोरचिंतामणि
श्रीरामचंद्रकायांविश्वामित्रआगमनेना
मप्रथमोप्रकासः १ हंसछंद आवतजा
वत राजकेलोग मूरतिधारी मानहुभो
ग १ मालतीछंद तहदवारी सवसु
षकारी कृतजगकैसे जनुजनुवैसे २ दो
हरा मद्दिषमेषमृगवृषभकद्रेलरतमल
राजराज लरनकट्रपाइककरभवद्दना
ॅकनरराज ३

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

समानकाछंद देषिदेषिकैसभा विसमो
हियेप्रभा राजमंडलीलसै देवलोककौ
हसै ४ मल्लिकाछंद देसकेदेसकेनरेस
सोभियैसवैसुवेस जानिजैनआदिअंत
कौउदासकौनसंत ५ दोहरा सोहत
वैठितिहसभासाततदीपकेभूप नहांराजा
दसरथुलसतदेवदेवअनुरूप ६ दोहरा
देषितिन्हैतवहरतेगुदरनिगोप्रतिहारु
आयेविस्वामित्रजूजउजयकौकरतार
रु ७ दोहरा उटिदौरेन्टपहनततहीआन
गहेतवपाउ लेगयेभातरभौनकेज्यौंगु
रकौंसुरराउ ८ सोरठा सभामध्यवैता
लतेहीसमयसुपढिउभौं केसवबडदवि बो
सालहंदरसुरोभूपसो ९ विजयाछंद
विपकेसमानहैविमानीकृतराग्रहंसविउ
पविउपजतमेरुसौअचलहै दीपतिदिपा
तिअतिसातोंदीपदीपियतहसरीदिली
पसौसुदक्षनाकौवलहै सागरउजाग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ८ रकिबहुवाहनीकोपतलछमादानप्रियकि
यौसूरजश्रमलहै सबविषमसमरसुराजै
राजादसरथुभागीरथीपथगामीगंगा।
दोहरा कोसोजलहै १० जद्यपिहैंथनजरिगयेत्र
रिगनकेसवदास तदपिश्रजाधानलन
कीपलपलहोतमकास ११ तोमरछंद
बहुभाइसजसुवाइ करिजोरिकेपरिपाइ
हसिकैकह्योमषिमित्र श्रबवैठराजपवि
त्र १२ मुनिउवाच छंद सुनिदोनमो
नवहैस रघुवंसकेश्रवतंस मनमाफजो
श्रतिनेहु इकवाततमोगोदेहु १३ नृपउवा
च दोधकछंद सुमतिमहामुनिसुनजै
तनयनसममहसुनजै मनमाफहोइस
कहिमो धनिसोजुश्रापनैलहियै १४ मु
निरुवाच छंदुदोधक राममगपजबने
वनमाही राषससवैरुकरैवहुधाही रा
मकुमारहमैनृपदीजै तोपरिपूरनजग्य
करीजै १५ तोमरछंद ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इहवात सुनी नृपनाथ जबै सब सैल गे आ
स्रचित सबै सुषते कछु वात न जाइ कही
अपराध बिना रिषदेह दही १६ राजाउवाच
छंदउ अतिकोमल के सब बालकता बहुउ
छरर लक चालिकता इमही चलि है रिष
संग अबै सजि सैंन चलौं चतुरंग सबै १७ रिष
उवाच जिनह्यापन हू विहू रषहू नतिहू रनीहू
रिनेंदउ जिनन करत संग्राम कहा मदमत्त
गयंदउ जिन वेप न सरल बल बंन्र पकव
रिकुवर मनि जिनवान नवारा हु वेप न हूमा
रतिर्मिसी चन नृपनाथ नाथ द सरथअकथक
थतवात यहू मानिये सगराजि राजिकुल
सकुल यहू बालक हुउन जानियें १८ सुंदर
छंद राजन मैं हमराज बरे अति मैसुहू मां
रैपा सुदेह महामति देवसहाइ के हैनरनार
क हैयहू कारज रामही लाइक १९ राजउ
वाच छंद मैंजकसौं रिषिदेउ सलीजै का
जकरी हट भूलन कीजै आनदियें पउजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हिदियेसब केसनरामनजाहिदियेअब २०
सिष्ठउवाच छंद राजनज्यौयउधामनजेस
ब नारिनजी सुतसोचुनज्यौनब श्रावनपै
ज्ञनज्यौनगवदाहि सउनपकरज्यौहसीचं
दुहि २१ राजवहैवहसाजवहैसुक धासु
वहैवहवंसवहैगन फूटेसोफुटेईवोपन
हैमउ छाडनहेअवसनसनानउ २२
दोहरा जान्यौविस्वामित्रकेकोधउठ्यौ
उरआइ राजादसरथसोकहौ वचनव
सिष्टवनाइ २३ छपैछंद इनहीकेतपते
जजगपकीरछाकरिहैं इनहीकेतपतेज
साकलरक्तसबलहहिहैं इनहीकेतप
तेजनेजवढिहैतपकूरन इनहीकेतप
तेजत्रैलोकहिगेमंगलगलसरन कहिके
सबजगतजनआइहै इनहीकेतपतेजच
र रूपवेगरामलछमनउवोसोपढविस्वामित्रक
र २४ सोरठा राजाउठेरनामित्र जानदविस्वा
मित्रतें इनकेअमितचरित्र रामचंद्रमयमानिये २५
दोहरा नृपपैवचनवसिष्ठकेसेंमेलोजाइ सौंपे
विस्वामित्र सोरामचंद्रअकुलाइ २६ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पेकबवाटिकछंद रामचलनन्रपकेजगलो
चन वारिभेटभयेवारिदसोचन पाइनपरि
रिखकेसजिमें नहि केसवडटिगपभीतरा
भौनहि २७ चामरछंद वेदतंत्रमंत्रसोपत्र
ससत्तैदभले रामचंद्रलछमनेहविप्रछिप्र
लैचले लोभछोभमोहगर्वकामकामना
गई नींदभूषप्याससत्रासवासनासवैगई २८
रसिमपालकाछंद कामबनरामुनहवा
मतरुदेषियो नैनहसदैनमननैनसमले
षियो इसननरकामतनकैप्रनतगरिये
छोडवहजगपपलतलोचननिहारियो २९
दोहरा रामचंद्रलछमनसहिततनमनअति
सुषपाइ देखौविस्वामित्रकौपरमतपोवन
जाइ ३० इतिश्रीइंद्रजीतविरचतायामन्स
कललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरा
मचंद्रकायांतपोवनदरसनंनामद्वितीयोध्या
यः प्रकास २ ॥ छपैछंद नरुनालासत
मालनालहितनालमनोहर मंजुलवंजुल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग ४
9

लकुचबकुलबकुलनालिकेरबर पलालल
तिलबेगसंगझुंगीफलसोहै सारोसककुल
लिनचित्रिकोकिलमनमोहै हंसराजहंसक
लहंसकुलनाचतमत्तमयूरगन अतिफूलत
फलतिसदारहैकेसबदासचितवन १ सुबि
याछंद कहूंद्विजगनमिलसुषश्रुतिपढही
कहूंहरिहरिहररुहर हरिरढही कहूंम्रगप
तिम्रगासिंहपयपियही कहूंमुनजनगन
हरिचिततहियही २ नाराचछंद विचारजेमो
नब्रह्मदेवअर्चमानमानिये अदीहमानड
छहषदीहमानमानिये अदीहमानडछह
षदीहमानजानिये अदेहमानदीनवरगदे
इमानभेदवै अपयमानपापग्रप्यपयमो
नवेडहै ३ विसषकछंदः साधुकपाहा
पीराजहूकेसवदासजहां निग्रहकेवलहैमन
कोदिनमानतहां पावनवासमदाविषकोहष
कोवरषे कोवरनैकविनाहिविलोकतहीहरषै
चंचलाछंद रक्षिवेकोजगपाल ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बैदेवीरसावधान होनलागेहोमकेजहान
हासवैविधान भीमभांतिनारिकासमें ग
लागीकर्नेग्राः वाननारिरामपैननना
रिजंगनिकारिजाः ५ रिषडवाच सोरठा·
करमकरनयहवोर विमनकौंदसहदिसा
मनसहसगजजोर नारियमोंननकारिये ९
ससिवदनाछंद हनिमुनिराई जगजसदा
ई कहैवसोई जिहज हहोई ७ छंदरिया
छंद हनाविरोचनकीहती दीरघजिहवाना
म हरिनारकवहसंघरी परमपापनीवाम
परमपापनीवामजेर उपजीकलमाना ना
रायनवहहतीचक्रविनामनिदाना नारा
यनसोहनीसकलद्विजहषनसंजना सें
श्रवत्रिभुवननाथनारिकानारद्रसिहना ७
दोहरा द्विजदोषीनविचारियेकहाभरषक
हानारि रामविरामनकीजईवाननारिका
नारि ८ मरहटाछंद हनगरवानीपरग
नानीजानीद्विजडङ्दानी नारिकास

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा. यारीदारुणभारीनारीबलप्रतिज्ञानी मारी
१० सुविज्ञसौजलपउताहौमारतो सबलसबा
हु देवनिगुणनपर्थ्यौसुखनवर्षौहरष्यौप्रति
हारनाहु ९ दोहा हरनजगभयोजन्ही
ज्ञात्यौविस्वामित्र रानुसुजगणकीसुभकथ्या
लागेसुननिविविचित्र १० चंचरीछंद प्राइयौ
निमिकालवाभतुजगणकोधलदेखकै ता
हिसलुनवौलिकैरिषिभानभानविसेषिकै
सगसुंदरुरांसुलक्ष्मणदेषिदेषिसहर्षई ११
सार्दूलविक्रीडितछंद सीतासोभनध्याहुउ
त्सवसभासंभारसंभावना नत्काजेसुसम
ग्रमिघुलावासीजनासोभना राजाराज
पुरोहितादिसुहृदमंत्रीमंत्रमहामंत्रना ना
नानादेससमागतान्नृपगनास्सन्नापरः स
र्वदा १२ दोहा पैरपरदेसकौसोभिजै
सभामध्यकोवैउ मोनहुसेसु असेसधर
परनहारुबलवंत १३

नचत मेव पंचालिका करि संकल तिन्ह पार
राजति है जनु नृपनि की चित हरन कुमार
देषि कबंड सोहत मंचन की अवली राजत
नमई छवि उजलताई ईसमनो बहुपमें सु
भारिसुधाधर मंडल मम मउ जनु न्हाई तामहि
केसव दासु विराजत राजकुमार सबै सुषदा
ई देवनिसौं जनु देव समासुभ सीय सुयंवर
देषन आई १५ सोरठा सभा मध्य गुन ग्राम
वंदीजन है सो भजे सुमति विमति इह नाम
राजनि कौं वर्नन करै १६ सुमति कबंड दोह
रा कोवह देषत आपने उल्लकित वाहु विसा
ल सुरभि सुयंवर जनु करा सुकिलन साष
रसाल १७ विमति सोरठा जिह जस परम
लमनत चंचरीक चारन फिरत दिसविदि
सनअनुरत: सुतौ मलका पीडुनृपु १८
सुमति दोहरा जाके सुष सुषवास के वास
निरेतन दिगंत सज्जन कहै पहकौ नृपु
सो मत सोमअनंत १९ विमति कवित·

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
॥ सोरठा राजराजदिगवाम भालनालललोभी
सदा प्रतिप्रसिद्धइहनाम कासमीरकोति
लकयह २० ॥ समति दोहरा निजप्रतापदिन
कारकरत लोचनकमलप्रकास मानषात
मुसकातमरुकोयहकेसवदास २१ विमति
सोरठा रुपमानकुसुमबेस रखुनत्रियजि
यभावनैाकदन्तटसपटसुवेस कलकाची
कियमंडली २२ समति दोहरा कुंडलम
रसनमिसकरनकहैाकोनयहराज्ञ संभ
मरासनगुनकरौकनौलेबनग्राज्ञ २३ वि
मति सोरठा मानदिबुद्धनिधान मत्तराव
प्रवगाहिके २४ समति दोहरा अंगरागरं
जतिरुचरभूषनभूसनदेह कहनविरुषन
सैांकछसुगुनकहैान्तगुपह २५ विमतिसा
रठा चंदनचित्रतरंगसिंधुराजयहजानिये
वहनवाहनीसंग मुक्तामालविसालउर २६
समतिदोहरा प्रासिगरेराजसमाजकेक

होगोनगनग्राम देसहभावप्रभावसम कुल
वलविक्रमनाम २७ विमतिकवित्त यविक
पवनतुमनि पन्नग पतंग पिवजितेजोतवंत
जगजोतिषनिगापहै असरयसिद्व नीरयस
रितसिंधुकेसवचराचरजिवदनवतापहै
भुजरभ्रमरभ्रजभ्रगिपोष्वनेगसववरनसना
वेभ्रेसेकोनगुणगायापहै सीताकेस्वयंवरको
रूपअवलोकवेकोंभूपनिकोरूपपरिवि
स्वरूपप्रायपहै २८ विमति दोहरा कह्यौवि
मतियहठेरः सकलसभादिसनाइकें चहुं
ओरकरफेर सवहीकोंसमुकाइकें २९ गी
नकाछेउ कोलूग्राजराजसमाजमेंवलसंभु
कोपनुकर्षिकें पुनकर्नकेमरिमानग्रान
जचित्तमेंप्रतिहर्षकें वहरंकहोइकिराज
केसवदाससोसुषपाइकें नृपकंन्यकाय
हतासकोंउरमुष्यमालानाइहै ३० दोहरा
नैकुसरासनग्रासनैननजैनकेसवदास उ
मकैउचकेसवैराजसमाजप्रकास ३१ विम

रा तिहंदरीछंद सक्तिकरीनहिभक्तिकरीग्रव
१२ सोननयोपलसीसनपसव देषहिराजकुमा
रनिकेवर चापचढायोनग्रापचढेघर २२
ग्रपरंचकवित दिगपालनकीभुवपालन
कीलोकपालनकीकिनमातगईहवै भाउ
भयउदिग्रासनतेकहिकेसवसंभुसरासन
कोहवै सनकाहचढायोनकाहुनवायोन
काहूउठायोनग्रंगुलहैकछुस्वारथभौन
भयौपरमारथुग्रायेहैवीरचलेवनताहै २२
इतिश्रीमनइंद्रजीतविरचितायामरसिक
ललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीराम
चंद्रकायासीतास्वयंवरवर्ननंनामत्रतीयो
प्रकासः दोहरा सवहीकौसमुफौसव
निवलविक्रमपरिमांन सम्मामध्यतेहैं
समैग्रायेरावनवान १ इलछंद नरनारि
नवे भयभीतसवै ग्रचरजयहे सवदेसके
हे १ दोहरा हैराघसदससीसकोदतवाड
रनार कियैसवनिकौचितरसग्रद्भुतभ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यसेचार ३ रावनससिवदनाछंद सिभु
कोदंडदे राजसुत्रीकिनैं हूकहैतीनकै
जाइंलेकालिहै ४ दससिरआवो पनुषच
ढावो कछुवलकीजैजगजसलीजै ५
गीतकाछंद दससिरआवो देसकंटरेसढका
रिहैहठवारवारनवोलिई अवआज्ञराजसमा
ज्ञमैवलसाज्ञचितनजोलिये गिरराजनैंग
रुजांनियेंहरराजकोपनुहाप्पलै सुभपार
ताहिचढारकैचरजाहिरजसहापुलै ६
वानउवाच मधुराछंद वानीकहीवानीकी
नीनसोकान अपापिआंनीन रेवंदकोनीन
वानमालतीछंद जैपैजियजोर तजौसवसो
रु सरासनुतोरिलहोहितजोर ८ रावनक
वित वज्रकोंअषर्वगर्वगंज्योजिनपर्वतारि
जीत्योहैसपर्वसर्वभागेलैलैअंगना षेउति
अषेउआसकीनीहीजलीसपासंचंदनसीचं
दकासोकीनोचंदवंदनां हरीकमैकीनो
कालदंडहीकौंमाउषंडुमानोकीनीकाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा हूंकीकालषंडषंडना केसबकोदंडुविसंड
१३ पैसेदंडेश्रवमेरेवाहूदंडनिकीवडीयैविडंबना
वाना रावनप्रतितरंगमछंद बहुनवदन
जाके विवधवचनताके बहुभुजजुतजोई
सबलकहियेसोई १० रावनदोहरा प्रति
प्रसारभुजभारहीबलीहोइगेतान ममवा
हूनकेजगतमैसहनिदसकंदविधान ११ तान
सवैया हैजवहीजवसृजनजानतपितापद
पावनपापप्रनासी देषिफिरैंतवहीतव
केसवसातौरसातलकेजिविलासी लैश्रा
पनेभुजदंडप्रचंडपरौंछिनमेउलछवप्र
भासी जानेकोकेसवकेतकवारनसेसके
सीसनिदीनीउसासी १२ रावनमालती
छंद तमसबलजोहते भुवबलनिसंजुते
पितहिभुवलावते जगतजसगावते १३
वानतोमरछंद पितराषियाकिहूडोकदि
यदछनासवलोक यहूजानरावनदीन
॥ ॥

13

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पितव्रतकेरसलीन १४ अनःकवित्त कै
टभसैानरकाम्हरसौपलमैसुरसौमधुसौजि
ह्रमाखौ लोकचतुरदसरतुकेसबपरन
वेदपुरानविचाखौ श्रीकमलाकुचकुंकुम
मंडतचंडतिदेवनिहाखौ सोकतमांगन
कौबलिपैरनारहकेकरितारिपसाखौ १५
रावन दोहरा हमैतभैनहिह्याकियेविक्र
मवाकुअखंड अवजय हैकहिदेरगौमदन
कदनकोदंड १९ संज्ञत छंद वनवानरा
वनकौहतौ सिरराजमंडलकोधुमैां
जगदीसअवरच्छाकरौ विपरीतवातसवै
हरौ १८ वानसवैया केसवगैरतेगैरभई
गतिजानीनजाइककूकरतारी हुरनि
केमिलवेकहिआयेमिल्यादसकेटसदा
अविचारी वाढिगयोवकवादहथापहपु
लनभाटहनावहिगारी वापुचढाईयेकी
रतिकौयहराजकरौतेरीराजकुमारी १९
विमतिदोहरा रावनिवानमहावलीजान

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नृसवसंसारु जौदोउपंतुकर्षहैताकौक
१४ हाविचारु १९ रावनवंधुकेतु मोकहरोक
मकैकहिकोरे जड़जेरेजमहूकरजोरे रा
जसभातितुकाकरिलेषौ देषिकैराजसगना
पतुदेषौ २० वानउवाच सवैया वानक
हौतबरावनकोग्रववेगिवषाइसरासन
कौ वानवनाइबनाइकहाकहेब्राह्निदेश्रा
सनवासनकौ पैसेंहीकैसेमनोरथपज
नहमैविनारूपसासनकौ जाननहैंग्रव
नाहिंनेजाननितूथपनेमदनासनकौ २१
रावनउवाच वंधुकेतु वानननवाततमैहूं
कहिश्रावै सोईकहौजियतोहिजभावै का
करिहैहमयौंहीहरंगे हैहयराजकरीसक
रैगे २२ रावनकवित भोरज्योंभवनिभूति
वासिकगणेशकनमोनैमकरंदवंदमाल
गंगजलकी उउपपरागपटनात्मसीविसा
लवाहुकहाकहौकेसोदाससोभापलपाल
की श्रीश्रुसगनसर्वमंगलासमेतसर्वपर्व

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नउदाइगनिकी नींही कमलकी जानतस
कल लोकलोकपालदिगपालि जानत
वानवाउमेरेवाहूबलकी २३ मधुभारछं
द नजिकैहरावि रिसचितमारिपउछि
यौपान लेकेसग्रान २४ विमानिछंद
तुमबलनिधान पउप्रानिप्रान यौं सजडूग्र
ग नहिहहोहिमेंग २५ कवित षेउनिमो
नभयौसबकौनदपमंडलहारिरसोजगनी
कौ व्याकुलवाहूनिराकुलहइथकौवल
विक्रमलेकपतीकौ कोपिउपारकरैकहू
केसबकौ हूनछोडत भूमथलीकौ भूरवि
भूहहभावप्रभावहीसौ नचलै चितजोगजती
कौ २६ पद्धरिकाछंद पउप्रानिप्रान लेके
सजानपहूवातवानसोकहीग्रान हैपलक
मोकलैहोचपारकछुनमहूयौदषोउदा
र २७ वान दोहूरा मेरेगुरुकौपउषयहूसी
लामेरीमार डहूभांतप्रसमंजसेवाउचलेछ
उपार २८ मोदकछंद प्रवसीयतिपेविहूहैं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नरसौं कहूं जाउ न तौ लग नैंह पसौं जब लौं न
८५ सुनैं श्रपनै जन कौं श्रति श्रारत शब्द हूं तेतिन
कौं २९ श्रलउवाच छंद काहू कहू सरमा
सरमारिय श्रारति सहू श्रकास सुकारिय
रावन के वहू कोंन परी जब छाडि स्वयंवर जा
त भयौ तव ३० दोहरा जब जान्यौ सब कौं
भयौ सब ही विपव्रत भंग धनुषधर्यो सौ लैभ
वन मैं राजा जनक श्रनेग ३१ इति श्री इंद्रजी
तविरचितायां मत्सकललोकलोचनचा
कोरचिंतामणि श्रीरामचंद्रकायां रावनवा
नसंवादवर्ननं नाम चतुर्थः प्रकाशः ४ बा
लमीकउवाच तारिका छंद जब श्रोन भई सब
कौं दुचिताई कहि काहू पै मेटी सु कौहू न
जाई सिय संग लिषे रिषि कौ सिय श्राई २ कु
भजा मनु महा सुषदाई ५ मोहन छंद सु
दर पशु श्रति स्यामल सोहै देषति हारि नरि
कौ मन मोहै श्रोनि पतिषि सियकौं वरु तैसो
राम कुंवर यह देषि पै जैसो २ तोटक छंद

रिषिराजमुनीयहवानजाँही मुषपाश्चले
मिथलाहितेही बनरामसिलादरसीज
वही त्रियहदररूपभईनवही ३ विस्वा
मित्रउवाच सोरठा गौतमकीयहनारि इ
हदोषदुर्गतभई देषितमैनरकारि परम
पततिपावनभई ४ कुसमविचित्र छेउ
तिह्यतिरूरेरघुपतिदेषे सवगुनसरेतन
मनलेषे यहवरुमागयोदियउनकाहू न
ममभजियनेकबदूनजाहू ५ कलाहस
छेउ नहनाहिदेवरूचलेश्रीरघुनाथज
नगसिंघकेसुतउवौंसिंघहिस्त्रीरराबन
जीवदेषनपौसवैमिथालागप ६ विस्वा
मित्र दोहरा काहूकौनभयोकहूंमेसोस
गुननहोत ७ रपैरतिश्रीरामकौभयोमि
त्रउदोत ७ चौपाई कछुराजननसुरजप्रक
नषेरे जनलछमनकेप्रनरागभेरे चितव
नचितनुमरदनीउसे श्रुतिरोरिचकोरवि
लासीलसे ८ लछमनउ· छपै प्रकृनगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नसुतिप्रातपद्मनीप्राननाथभय मानहु
१९ केलखदासकोकनदकोकप्रेममय परि
हरनसिंहरहरकैघौंमंगलघट किधौसक्र
कोछत्रुमल्यौमानकमयूषपट किंधौश्री
नतकलनिकपालयहकिलकापलका
कालकौ कलितलालकैधौलसतुदिग
भामनिकेभालकौ ४ तोटकछंद पस
रीकरिकैंमदनिकालमनौ किधौपद्मनि
कोसुखदेनमनौ जनुकृत्तमवैरहूत्रासभ
गे जनुज्ञानकेदानचकोरउगे ५ रामजी
वेचरीछंद औंमसेसुखदेखिपत्रतिलाल
श्रीसुषसाजहीं सिंधुमेबडवाग्निकी
जनुज्वालमालविराजहीं पद्मरागनिकी
किधौदुगीअतिलगनपरकीनेहहीं ६
विस्वामित्रमोरहा चल्यौगगननहजार
दिनकरुवानसुघरनमुख कीनोकुककार
गइ सकलतारिकाकुसमवित ७ लमम
नदोहरा यहीवारुनीकीघरी रंचकसव

16

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिजराज बित्तसंपतिसम्राज जहांकसौं
भगवंतज्ञू १३ तोमरछंद चहूंभागवाग
तडाग अवदेषपवंउभाग फलफूलसोभ
सेजुक्ति अलियोंरमेजन्तुसाक्ति १४ श्रीरा
म दोहरा त्रिनिजिनकागरीपतिपदहंस
किहीन जलजहारसोभतनजहं अगरम
योधरपीन १५ सवैया सातहुंदीपनके
अवनीपतिहारररहे जियमैं नवजाने वी
सविसे ब्रतभंगभयोसकहो अवकेसव
कोधंतुतोने सोककीआगलगीउरमैंत
बिआइगयेजनसाम विहाने जांतकी
केजनकादिकके सवफूलउटेतरुपुंनपु
राने १६ दोधकछंद आइगयरिषराजहि
लीनें मुष्यसतानंदुविप्रपवीनें देषिडवौ
भपपाइनलीने आसिषसीरषवासलेदी
नें १७ विस्वामित्रसवैया केसवपमिथुला
ज्ञिउहैंसगयैसंजिनकीजयावेलबईहै दा
प
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा निज्ञपोंनविधाननिकौंसिगरीवसुधाजि
१० नहूंघलईहै ग्रंगछमातकयावटकसौंभव
तीनहूंलोकमेसिद्धभईहै वेदचुईश्रुरुरा
जचुईपरिहरनतामहिजोगमईहै १८
जनकमोरठा जिनघ्रपनैतनउस्तउमे
लतपोमयध्रग्निमैकीनौंउत्तमबर्ने तेई
विस्वामित्रप १९ लक्ष्मनमोहनछंद
जनराजवंत जगतोगवंत तिनकेउदो
त किहिंभांतहोत २० श्रीरामकवित
छत्रनिसाद्दिदेकाहूछिपेनछिपाबिजना
दिकवातउगे नवेरैनवढेनिसवासरके
सवलोकनिकेतमतेजभगे भवभूषन
भूषतिहोतनहीमदमत्तगजादिमषीनल
गे जलहूंथलहूंपरिपूरनश्रीनिमकेकुल
श्रद्भुतजोतजगे २१ जनकतारिकाछंद य
हकौनजौनरेमनसोहै सुनिदेवग्रदेवनि
कोमनमोहै हमकोवउराखहिजेरिझाई

सबगांवबछ्मानककीटकुराई २२ मित्रा
मित्रकवित्त आपनेआपनेठौरनिनौभुव
पालसबैभुवमालौंसदाई केवलनामही
कौभुवपालकहावतिहैभुवपालीनजाई
भूपनिकौनमहींपरिदेहविदेहनैमेकलि
कीरनिपाई केसवभूसनकौभवभूषन
भूतलतैंतनयाउपजाई २३ जनकदोहरा
ईहिविधकीचितचातरीतिनकौकहाग्रक
स्थ लोकनिकौरचिनारुचिररचिबेकौं।
जिसमस्थ २४ सवैया लोकनिकीरचि
नाकहचित्तजहीपरिहरनउविचारीहै
गकिसबदासनहीसमभूमग्रकासथकासि
नभारी हद्दसलाकसमांनलसीग्रतिरोष
रचीटिगदोहनम्हारी होनभयेजनबहर
हपापरुजावकस्वग्रस्वपारंगपारी २५
श्रीरामदोहरा केसवमित्रामित्रकीरोष
भईहिगंजानसंधा त्योंबलोककैसैकिहिना।
पासीआन २६ जनकतारिकाछंद पस

रा.
१८

18

तकौंनकेसोभहिसाजहि संदरस्यामसु
गौरविराजहि जाननहौंजियमोदरहोऊ
कैकमाविमलायगिकोऊ विस्वामित्रकहे
उ संदरस्यामसुरामजुजोनौगोरसुलछ
मनुनामदषानौं ग्रामिषदेनरहैसवैको
ऊ सूरजकेकुलमंडनदेऊ २८ दोहरा नृप
मनिदसरथराजरा जकेसगटेचारिकुमा
रि रामभरथुलछमनुललिनग्रतिसत्रघउदा
र २९ सोरठा राजादसरथभूममैसुषेसो
गेसुरराज जादिनतेसुरलोकमै जवनेबे
ठेराज ३ स्वागताकेंउ पज्ञुराजदसरथ
जनेजु रामचंद्रभवचंद्रवनेज सौंविदेहु
तुमहेंग्रवसीता सोंचकोरननियांसुभ
गीता ३१ विस्वामित्रतारिकाछेंउ रघुना
थसदासउचाहतदेष्योग्रतिडछकरराज
समाजनिलेष्यो जनक रिषहैवहूसंदर
माकमकाऊ गहिलावीहहौंजननृथ्यवु
लाऊं ३२ विस्वामित्रजोटककेंउ ग्रवलो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गकहाकरिवेश्रपार रिषराजकहीयह
वारवार २नराजकुमारनिदेह जानसव
जानतहैंवलकेविधान २४ जनककवि
न ब्रह्मनेकटोरहैकैलासतैंविसालकाः
लदंडतैंकरालसत्रुकालकालगांवई
केसवत्रिलोककेविलोकहारेदेवसवछो
डिचेहचूरुपकुगेरकोचफावई पनग
मचेइपतिसभुकीपनवसीनपर्वतारि
पर्वतलमांनमोउपावई विनापकश्र
नेकहेपेस्रावैरपिनाकुनाहिकोमल
कमलपानहिसकैमेलावई २५ विस्वा
मित्रदोहरा रामुहसौंमारिवुजिहिश्रुत
तारिकासुवाहु लछमनकौंवहुपठउ
दे हमपिनाककरुजाहु २६ जनकवि
भंगीछंद सिगरेनरनाइकअसुरविना
इकरक्षसपतिहियहारररहे काहुंन
उठायौंपलतनछिउयौटस्यौनटास्यौभी
नभय २न्हराजकुमारनिग्रतिसुकुमार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० निलैआयेसंगपैजकौरें अतनभंगहमारो
१९ भयौतम्हारोरूषतनपतेज्ञनजोनिधारै ३०
विस्वामित्रतोमरछंद सुनिरामचंद्रकुमार
धनुआनियेंशहिवार धनिवेगताहिचढाई
जसलोकलोकपढाई ३१ जनकदोहरा०
रिषहिदेषिहरषौहियोरामदेषिकुम्हिला
देखि इधनुषडरपैमहाचिंताचितडुलाई ३२
स्वागतापतिहारजीछंद रामचंद्रकरिसौं
चढ़ावाध्यौ लीलाहीहरकौधनसाध्यौ ने
कताहिकरिपलुवसोडे हलहलसमहूक
कल्यौहै ३३ सवैया उत्तमगाथसनाथज
वैधनुश्रीरघुनाथनहाथकेलीनौं निर्गुण
तेगुनवेतकसौसबकेसबसंतनश्रसंतनदी
नौं येचनहीतवहीकीयोसज्जनतिछन
राचकटाछुनवीनौ राजकुमारिनिहारहि
सनेहसौंसभकौसांचोसरासनुकीनौ ३४
सतानंदसंदरकछंद प्रथमटंकारिककिका
रिसंसारमडंदंडकोदंडुरह्यौमेरनवखंडकौं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

चालिअचलाअचलज्वालिदिगपालिव
लपालरिषराजकेवचनपरचंडकौंकोप
उपजाइभृगुनंदवलवंडकौं चापचरस्वी
कौंसाधिअपवर्गकौंभृगुपतसहुगयोभेद
अखंडकौं ४२ जनकदोहरा सतानंदआनं
दमतितमभजेउनसाथ वरजहकाहिनज
वयतुषपेंच्योहोरघुनाथ ४३ सतानंदतो
मरखंड सुनिराजराजविदेह जवहींगयो
उहिगेह कछुमैंनजानीवात कवनोरि
योपउतात ४४ प्रतिहारनीसषीदोहरा
सीताजूरघुनाथकौंअमलकमलकीमा
माल पहिराईजउसवनिकीहरयावलि
भूपाल ४५ चित्रपदखंड सीपजहीप
हिराई राममहिमालसुहाई इंडभिदेवव
जाई फूलतहींवरषाये ४६ इतिश्रीइंद्रजी
तविरचितायांसकललोकलोचनचको
रचिंता[illegible]श्रीरामचंद्रचंद्रकायांपउष
भगवतनंनामपंचमःप्रकासः ५ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० डेडतोडपछंद विनतीरिषराजकीविन
२० पसौ चहूंभैयनकेअवध्याहूकौ भूनवोल
हूवेगवरातसवै विटीपासभदौंहुपार
अवै । दोहरा मटही नवदीलगतलिष
अवपत्रीहमवात राजादसरथहूनतस
जिचारौंचलीवरात २ मोटकछंद आपद
सरथुवरातसजैं दिगपालगईदनदेषिल
जैं चास्योदलहलह्लचारवनें मोहूस्गाऊे
रनिकौंतुगनै ३ नाराकछंद वनिचास्यो
वरातवहूदिसआई रथवाजिचमूत्रगिवांन
मदाई जेतुसागरस्यौंसरितापगुफरी तिन
केमिलकेकहवाहूपसारी ४ दोहरा छा
नैटीकौचारुकरिसहितेकेसवधुत्रहूप ५
मरहटाछंद दसरथुवरातीसकलसंघाती
वनितनिमेंरूपमोकगाप आकासविलासी
प्रभाप्रकासीजलनगछजतुनषततनुप अ
तिसुंदरनारीसवसुषकारीमंगलगारीदी
नलगी वहूवाजेवाजनजनुघनगाजनल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्रानहासोभाकुनगी ८ दोहरा श्रीराम ग
वेदसीतावनेसोहतहैंतिहिठौर सवरन १५
मनिमयसुषदसनसुंदरश्रीसिरमौर ॰
कछे वैठेमागधसूतविवधविद्यापरचार
न केसवदासप्रसिद्धसिद्धसमसुखमनि
वारन भारद्वाजजाबालि-अत्रिगौतम
कस्यपमुनि विस्वामित्रपवित्रचित्तमति
वामदेवमुनि सवजगतप्रसिद्धजिनिह
मानितहवसिष्ठजनकलस सतानंद
सुषउच्चारनिसाषोचारुसवैसरस ८ श्र
शुकलाकंठ पावकसज्योसमधिसुधा
री श्राद्धनदीनीसवसुषकारी दैनवकंन्या
वहूपत्रुदीनैं भावरिपारजगतजसली
नै ९ स्वागताछंद राजपुत्रकनिसौंव
विलाप राजराजसवडेरेहिश्राप हीर
चीरगजवाजनलुटाये सुंदरीनमेगलिव
दुगाये १० सोरठा वासरचौथेजाम स
तानंदआगेदिये दसरथनृपकेधाम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ग्राये सकल विदेह वनि ११ भुजंगप्रयात छं
२१ ३ कहूं सोभना ईद भी दीह वाजें कहूं भीम
भेकार कर्नालि साजें कहूं दरी वेनवी नाव
गावें कहूं किन्नर किन्नरी लैसगावै १२ छंद
कहूं नृत्यकालीन चैमोम साजें कहूं भाउ
बोलैं कहूं मल्ल गाजें कहूं भट्टि भाघो करै
मोनपावे कहूं लोलनी वेउनी गीतगावैं १३
छंद कहूं वैल भैसा भिरै भी मभारे क
हूं पंनीन के हूंनकारे कहूं वीक वांके क
हूं मेष सूरे कहूं मत्तदंती लरैले हिरै १४
दोहरा आगे ह्वै दसरथ लिये भूपति आवति
देषि राजराज मिलैं वैठि ये औज्वल ज्वल निष
लेषि १५ सोमनछंद सुनि भागि विद्यराजि
वसिष्ठ वजवाल विस्वामित्र सवै ह्वै तत्सब
लति षसंसार सह्दचरित्र कीनीज तमयावं
सकौ कारि पकग्रसनजार स्वाउ कहि हिके कौं
समर्पु नगंगजैसौं गरषार १६ सुषदा छंद
ज्यों प्रतिप्यासी पावै मगमैं गंगाजल प्या

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हन पकुड कारड फैवई नापवत सौंनम
तेंहूमकौ न भयौ श्रव पकसड हम्यौमनस
वकौ मुज्ञदेख्यौं सेमसुड १८ जवककवित
सिडसमाधि समेप्र नहूज्ञकरू जगन्नगनि
देखिनपाई रुद्रकेचित समुद्र वसे निनिव्रल
हू पैवरनीज्ञनजाई ३ेशुनरूपनरेशविसष
श्रनादिश्रन तज्ञु वेदन गाई केसव गायकेनं
दहमें वहज्योति समूरति वंतदिखाई १८
नारिकाछंड जिनके भरषासुवगंगगहिला
प नगरीसवस्वर्गसदेहसिधाए जिनह
निपाहनतें त्रियकीनी हाकेपंडभेगश्र
में भरतीनी १९ छंड जिनश्राश्रनेक
श्रदेवसचारे सवकालभरंदरकेरषवारे
जिनकी महिमाहिश्रनेनश्रंतनपायोह
मकौवपुराजसवेदनिगायो २० छंड:
विनतीजिनजुमजनज्यौंजियलेषौं डष्ट्वदे
षियोकालिहू सौंश्राजहींदेषौं यहजानहि
येविठईसुषभागी हम हैं चनीदककेश्र।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ मिलाषी २१ तोमरकंड जवत्रिषराजावि
२२ तोकरिलीनौ हनिसबकौकरुनामत्रभी
नौ दसरथराजयहजियजानी यहवह
एकभईरजधानी २२ दसरथदोहरा॰
हमकौंतमसेरथनिकीदासीडुलभराज
श्रनितमदीनीकैम्याकात्रिभुवनकीसिरता
ज २३ भारद्वाजतोमरकंड सुषद॰॰ श्रादिस
वेतमजीते सरनरकोवश्रावलरीते कु
लमहहोइवजेलहकोई श्रतिश्रषानिवजे
लहकोई २४ वसिष्टसवैया एकसषीर
हलोकविलोकियैहे उहलोकनिरपदया
री एकईहांडुषदेषतकेसवहांतजहांश्रा
त्रिलोकविहारी एकईहांडुडहा श्रनिदीन
सदेतउहंदिसकेजिनगांरी एकहीभांत
सदासवलोकनिहैप्रभुतामिथलेसतिहा
री २५ जावालिसवैया मौनमलिमैंश्रनिजो
तहजीरविनेश्रवजेरकत्रकविकाई चैयहि
वंदनतेसवकेसवईसतेनवदकतात्रनिपाई
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भागीरथीयो जह्नुतीमन पावनतेअतिपा
वनताई मौंनिमवंसबडोईहृतौभईसीय
संजोगवडीयेवडाई २६ त्रिस्वामित्रमाल
तीछंद गुणगणिमनिमाला चित्रचात
जैमाला जनकसुषगगीताप्रकापाइसी
ता अलिषभुवनभर्ता ब्रह्मरुद्रादिकर्ता ।
थिरचरअभिरामी कीयतांमाहनामी २७
दोहरा सुजराजरिषब्रह्मरिषिइंद्रमिदेह
वजाइ जनककनकमंदरगयेगुरुसमेत
सुषपाइ २८ चामरछंद आसमुद्रकेछि
तीसकौरदेवकोगनै राजभौंनभोजकोस
वैगपवनेबनै भांतभांतअंब्रपांनविज
नादिजैंवहां देतिनारिगारिसरभूरसे
वहां २९ हरिगीतकाछंद ३ अवगाहितम
कहदेहिहमकाहिहलहरामजू कछुवाहु
रुपपरदारसुनिपतकरीकहतकुयाम
जू कौगतैजितनेपुरषकीनेकहतहैस
सारजूसुनिकवरिमानदेवरननाकेकहां
सबकौहारजू ३० छंद कहैरुपसोनवजो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० वनावहूरतनमयवस्रुमोंनिये पनिषहन
२३ रक्ताकरुबन्यौं तनचित्तचेंचलजोनियें स्व
भकेषफनि मनिमालपालिकापरनिप
टतिग्रवेंपनू करिसीहपात्तिमपाउव्रत
गानसहूनसहगेपनू ३१ छंद बहूहरीह
टिहिरनाकदैयनदेषिसुंदरदेहसौंवरवी
रजगपवराहूनूनवलईहीनसनेहसौंहूग
ईविहवलग्रंग्रष्टिग्रफिरसजेसकलसिं
गारनू नवकक्कुकदिनचसभईताकेदि
येसबरससमारनू ३२ छंद बहूगयेप्रभु
परलोककीनौं फिरापकसाग्नाग्रनू
त्तिद्धिभांतभांननिभागईप्रमिपलनक्का
चौसापनू वहूश्रहरश्रीनरसिंहमासौ
लईसबलक्कि॥३कैलैदईहरिहरीचंदरा
जरिवहूनजियसहुपारके ३३ छंद॰
हरिचंदविस्वामित्रकोदईद्रष्टननमन
जानिकेतिरवसौंवलिवलवंडबरहीवि
सनपसीकानिके वलिवाधिकलवल
लईकंचनदईइंद्रिझानके इंद्रनजियपति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कहौ अर्ज्जुन सहसकरि कौतानिकै २४
छंद॥ नवनाह कविमदबककौ अर्ज्जुन
हमैं रिषजमदग्निजू नवपरसरामैंदस
कौ लिजातौ प्रवलबलकी अग्निजू जिह
वैरनवनि हि सकल छवियमारिमारिव
नाइकै इकईसवीरजदईविप्रनिरुहरज
लग्रन्हावाइकै २५ छंद वहराहरेपित्र
करीमत्रीनजी विप्रनि रुहरजलग्रन्हा
वाइकै झूककै इह्लाजमरिजन्ननादि
नमसौंभयौंनाजौनापुजू अवझौरसुष
निरषैनज्यौं त्यौं रषियेरघुनापुजू २६ सो
रठा ध्यानभयेसबभूप आयेमंडममोफ
वनिजहांहूयवहदूप ठौरठौरसवसोभि
तै २७ प्रमानिकाछंद रंचीविचित्रवास
सौ निपाभरजिकाभली जहांनहांविद्या
वनेवनेचनेंपलीपली विनौनसेनसप्पा
मपीतलाललीलकारगे मनौउहूदिसों
निकेसमांनविंबसेजगे २८ पद्दवकाके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ तु गगमोननिकीअवलीअपार कलसनि
२४ परउरमनिअनिहदार हरतनिरतनिजउरचर
34 धार जैंहूनहैंअकासगंगाउदार ३९ छंद
नगादंननिकीअवली सुवेस नहैंकुसमुरा
जिराजतिसुदेस जनुदेवनिकेपुष्पकविवा
निसभनरपंक्तिमारिकाकरनगौन ४० नौ
मरछंद रतनउनसौंभनहुंदरडोलै अर्थअ
नेकनिबोलनिबोलैं सुषमुषमंडलिचित्र
निमौंहै मनहूंअनेककलानिधसोहैं ४१
छंद मकटविलासप्रकासिनदेषौ पंच
षमनोजमनोमयलेषौं चरचितहासचं
द्रकनिज्योंनौं सुषिमुषवासनिवासितमौ
नौं ४२ छंद अमलकपोलेआरसी बाहैं
चंपकमारः ४३ दोहरा गतिकोभारुम
हावरीअंगअंगसुकेभार केसवनषसिषसो
भियेसोभाईसिंगारः ४४ वैठेजरादनरे
पलिकापरसोभसियासवकेमनमौंहैं जो
तिससहारेसमटिकै हरिभूलरहेवसुगानर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कोहैं केसवतीनहूंलोकनिकेअवलोक
हुण्याउपमाकाविटोहैं सोभनिहूरजमेउ
लमोकमनैकमलाकमलापतिसोहैं ४५
दोहरा गंगाजलकीपागसिरसोहतिश्री
रघुनाथ शिवसिरगंगाजलकिधौ चंद्रचं
द्रकासाथ ४६ तोमरछंद कछुभृकुटकु
टिलसुवेस अतिअमिलसुमिलसुदेस वि
धलिषसोपहतेव जनुजयाजयकेमंत्र ४
दोहरा जदपिभृकुटरघुनाथकीकुटिल
देषियतजोत तदपिसुरासुरनरनकीनि
रषसुदगतिहोत ४८ दोहरा श्रवनम
करकुंडललसैमुषसुषमामकरत ससिस
मीपसोहतमनौंश्रवननिमकरनछत्र ४९
पद्धरकाछंद अतिवदनसोभसरसीसुरं
ग कमलनयननासातरंग जगजुवति
चित्तविभ्रमविलास नेइभवतभवरसरू
पप्रास ५० तिसपालकाछंद सोभितदप्र
तिहुदिसहप्रउदम्रोनिधैं समप्रवरूपजनुभू

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

र॰ पकवषांनियं श्रीठकचिरेषसविसेषरसहे
२५ रये सोपिजडईसमभलक्षनसवैद: यें सा
भ्रमनों वचकासकीमानों लिषीविरेष ५२
सुंदरीछंद सोभनदीरचवाङविराजत दे
वसिहातअदेवुनिलाजत वैरनिकोंअरि
राजवषांनहे हैहितकारनकोभुजमांनहूं ५३
छंद जौंउरमैंमृगलातवषांनहे श्रीकर
कौसरसीरुहमांनहे सोहतहेउरमेंमनि
यांजेउ जोंतुकीकौअनुरागरलोमेंउ ५४
सेहरा सोहतियेंनरनगमउरदेषतितिन
कोभाग श्रागरयोउपरमेंनोंअनरकोअनु
राग ५५ सुंदरीछंद मोतनिकीउलरीह
देस जेंउदेवनिकेयाषरसुवेस गजमोति
नकीमालाविसाल मनमोनहसंतनकेर
साल ५६ विसेषकछंद स्पांमडकौंपग
लालसैं उतियोंनलकी मांनहूंसेवति
मोतिगिराजें सुनोंमलकी पारजरीषु
तिसेतनहरीगतिकीअवली देवनदीकेंनमां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नहूं सेवति भांति भली ५७ दोहरा कौंव
रनौं रघुनाथ कवि के सब उड्ड सार जिन
की सोभा सोभियत सोभा सब से सार ५८
कवित्त को है दमयंती इंदुमती रति राति दिं
तुहो हिं न छवी ली छैं न छवि जैसी गारि
ये केसव लज्जाति जल ज्ञान नाजबे देवो
पैं ज्ञान रूप वा डरे गवि रूप से निहारियें म
दन निरूपति हीरू पतोर निरूप भयो व
दवद रूप अनुरूप को विचारिये सीताज्
के रूप परदेवता कुरूप को विचारिये स
हे रूप हूं के रूप कतो वार वार डारियें ५८
गीतका छंद नहूं सोभ मै जउ सुंदरी स
खि दामिनी वपु मेंडि के चंद न सांमको जं
उसे वहूं जउ मे यगे व निछंद के रस भंग च
वे ति चारु चेद न चंद कान निचंद को जउ
राहू के उम सेवहूं रघुनाथ आनंद कंद को ६०
छंद सुघ चंद है नन लोल लोचन लोक लोच
न कौ हरैं नतजों उकी सैंग सोभियें हम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰
२९
28

लाजदेहनिकोंथरें तहँएकफलनकेविभूष
नएकमोतिनकेकियें जेतुछीरसागरदेवता
तनछीरिकीछीटेंनिछीयें ९१ सोरठा म
हिरेवसनसुरंग पावकसंगस्वाहामनों स
हजसुगंधितअंग मोनोदेवीमलयकी ९२
चामरछंद मत्तदंतिराजिराजिवाजिराजिरा
जिकै हेंमहीरमत्तवीरचारुसाजसाजकै
वेषवेषवाहिनीअसेषवस्तसोपियौ दाइजौ
विदेहराजभांतिभांतिकोदियौ ९३ छंद
वस्तभौनसौंविनानआसनेविछावनें अस्त्रश
स्त्रअंगत्रांनभाजिनादिकोगनें दासिदास
वासिवासपाटपाटकेकियें दाइजौविदे
हराजभांतभांतकेदियें ९४ दोहरा ज
नकराजपहिराइयौदाजादसरथसाथ
छत्रचौरगजवाजिदैग्रामसमुद्रछितराज ९५
निसपालिकाछंद दोनिदियराइदसरथ
सुभपाइकै सोपितिखल्लखिसराजनिवुला
इकै बोलिजाचकसकलदानुहमसूरसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मद्यजिमवर्षगाज्ञिवाजिप्रयश्रिसे ८४
इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांमन्मकललो
कलोचनचकोरचिंतामणिराजचंद्रका
मांश्रीचिंतामणिश्रीरामसीताविवाह
नामषष्ठमःप्रकाशः दोहरा विस्वावि
त्रविदाभयेजैनक्कफिरेमद्गचार मिलेश्रा
गलीफोजिकौंपरसरामप्रकलाइ १
चेचलाछुंड मेनदंतिश्रमतिहैगयेदेषिदे
षिनगजंही टोरटोरहदेसकेषवंडभी
नहिवज्रही उगिउगरहप्पारहरजिजीव
लैलैभजंही कातिकैतनत्रोनप्रकनिना
रिषषनिसजहीं २ दोहरा वामदेवरिषि
सौंकह्योपरसरामरंनधीरमहांदेवको
धनषकहिंकिहिंतोप्यौबलवीर ३
दोहरा वामदेवकोधनषलषिपरसरांम
रिषराज तोत्योरायहकहतिहीसमज्यौं
रौंवनराज ४ परसरांम दोहरा श्रतिकौं
मलनपसतनिकीग्रीवांदलीप्रपार श्रव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
२७

27

कटोरदसकंटकेकाटहिंकंटऊटार ५
अथवासवैया वाँधिकैवांध्योंजकीलव
लीपलनापरलैसनसोंहितटाटैं हैहय
राजलियैगाहिकेसवआयोहोकुइजाछि
इनिजातैं बाहरिकाटिदियोवलिदासनि
फारिपसोजपनालकीहाटैं सोकौंकहा
रवगईकहाकहिनादेसकंटकेकंटनिका
हैं ६ सोरठा जद्यपिहैअतिदोउ सोहित
ध्यापिसमारतैं गरुअपराधीलीउ केस
वकैसंकारियैं ७ सवैया वरवांनसिषीन
अरुषसमुद्रहिंसोषिसषासुषहोंतरिहैं
उनलैकहिंगैरकलैकनकैफिरयैकक
नैकहीकीभरिहैं सुजिकैएषसषाषहै
उषदीरषदैननिकेहरिहैं सिनकंटकेकं
टनिकौंदसकंटकेकंटनिकौकफुलाक
रिहैं ८ रीजताछंद यहकौंनकोदल
देषिपजहैंरामसोअभुलेषिप कहिकौंन
रामविचारियै सरनागिकाजहिनारिय ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राम त्रिभंगीकंड तारिका संघारी त्रिपन
विचारी कौंनवउ आई ताहि हने मारीच हू
तौ सेग सबल सकल संग सुरन सुबाहु काहू
न गनै करि कित रष वारी गुरु सुषकारी
गौतम की त्रिय सुद्ध करी जिन रघुकुल मं
डो हर चाप तुरंत भयो सीया स्वयंवर मांझ वरी ९
राम दोष सो हरा हं हो तो दंड दे पतु छ च पाव
ति काहू देष हुम हि मां काल की कियौं हन
रासि सुन हू ॥ सवैया तोरौं सबै रघुबंस कु
ठार की धार मैं बारन बाज सरथहि बांन
की बाइउ गाइ लछ्मन लछ्कर्यौं अरि ह्रास
मरथ्यहि राम हि बाम समेत पठैं बन कोप
के बान मैं धू जौं मरथ्यहि जो पं सुराष लियौ
रघुनाथ तौ आज अनाथ करौं दसरथ्थहि १२
सोरठा राम देष रघुनाथ रथ तें उतरे वेग दै ग
हन भरथ को हाथ आवत तांसु बिलोकियौ १३
कीवत श्रमल सजल चैन स्यांम वपु के सौदा
सबै दहैं तैं चारु सुष सुष मां कौ ग्रांस है कौंम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा०
२८
लकमलदलदीरघविलोचननिमोदरसमौं
नरूपमारोमारोनोमुहै वालकविलोकि
पतसरनप्रगटगनमेरोमनमोसोयतपे
मोपकुपामुहै वेहमोनिवामदेवकोयंतगु
नोघोरनजोनवहोवीसविस्वरामदेवकौ
गुहै १४ अथ हरिगीतकाछंद कुशमुद्रा
कासमयैस्नुवाकुसकाकेमंडलकौलियें
कटिसूलस्रोनननकसीम्रयलनासीस
मुकौंहियें यंत्रवोत्रनिबकुदारिकेसव
मेषलामगवमंकौ रघुवीरकौयहदेषि
येरससवीरसातकयमसौ १५ नराजछंद रं
घुनाथ प्रचंडहैहयादिराजदंडमानंजानियें
प्रदंडकिनिलेयभूमिदेवमानमौं निये प्र
देवदेवजेसभीनरछमोनलेषियें श्रमेय
नेयभगमकभागवेसदेषियें १६ तोमरछं
द सहअथलछमनरांम वहुकियेंग्रान
मगनंदग्रासिषदीन रंनहोरु प्रसेप्रवीन १०
रामछंद सुनिरामचंद्रकुमार ममवचन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हांसउदार रघुवंसके अवतंस मनवतिहैं कि
किअंस १८ रामः मंदिराछंद तोरिसरासन
संकरको सुभसीय स्वयंवर मांझ वरी ताते
वढ्यो अभिमांन महां मन मैं कहूं मेरीन सं
ककरी सो अपराध अगायु परयो सव कौं
सपरेम कही यौं कहो वांढे देदौ कुठारनि
केसव आऊने धांमको पंथुगहौ १९ श्रीरघु
नाथ कोउ रिपा हूटे टूटन सहकनरुदीजे वा
नहि दोष सौं अवरहाके पंन षसौं हम सौं
कीजनरोख हैं मसहैं कीजनरोख कालग
ति जांनी न जाई होनहार कहै हमिटै मेरी
नमिटाई होनहार रहे रहै मो हमदस कौं ह
है होइ जिनका प्रजवज तिनकोनहटै २०
रामकवित्त कैसव है हयराजको माह ह
लाहल कोरनिषाइ लियोरे ताल गिमेद
मही पनकौ हतवीरदियो न सिरायो हियो
रे तालगिमेरमही मेरो कसौकरि'''म
करालजौ चाहत है वह काल जियोरे जो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा लीनेंहीसबषेलछतैंरघुवंसकौंश्रीरघुपा
२९ नपियारेः २१ अथ नदीछंद बोलनकैसे
29 मयुपतिसनिसें सोकहियेनेंनमनवानिश्रा
वै श्रादिवडेहैवड्डपनगाषौजिहतेंसतुजय
सुपावै चेदनहेंमेश्रनियउचरमेंश्रागिउ
देयहसनिसुनकीजे हेहयमारेल्तपनिसें
धारेजगजसलेकिनजगज्जगजीजे २२
रोमः नारायणछंद भलीकहीभरंथुनै
उदाउश्रागिब्रंगतैं चपाउचौगुचौगुश्राउवा
उलैनिषंगतैं सभाउश्रागुनौदि.षाउवालभा
उछेउदे रिपाश्यराजगुत्रमोहिरोमुरारिमारि
कै २३ सोरठा लियेचापजवहाथ जीनें
भेषनरेसकै तवबरजेरघुनाथ तुमबा
लकजानेंकहें २४ दोहरा भगवंतनि
सनजीतिपकवहेंकीनेंसक्ति जीतिपप
क हैवाननेंकेवलकीनेभक्ति २५ ह
रिगीतकाछंद जवरुस्यौ हेहयराजर
त्रविउछत्रछितिमंडलकसो ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गिरवेपुषन्कुरवसीतनतारिकनंदकौजव
न्मौकहौ हतमैंनजायौ रामसौयहका
लौपर्वतनंदनी वहरैजकाविरपंनप
रनीमैंभईजगवंदनी २६ तोमरछंद
हनिसेमसीलसमुद तमवेगसौंतम
कुद ममवाडवानलकोइ सवकीयेचा
हतिलोइ २७ सवैया दोपकछंद होम
गुनंनवलीजगमांही राघुविदाकरिजवै
हजांही हैतमसौंगुनजद्वहिमांडो छ
विपवंसकौवेहलैक्यांडे २८ तोटकछं
द यहवातसुनीभगुनायजवै कसौ
रामहिलैचरनांडसवै इन्हपैजगजीव
नजौवचिहैं रंचहैं तमसौंफिरकैरवि
हौं २९ दोहरा निजश्रपराधीक्यौं हनौ
हश्रपराधीछांडि तातैंकटनिकुटारश्र
वतमहीसौंरंडुमांडि ३० सवैया भूतल
केसवभूपनिकौभिरिभोजउनौवहमां
नकियौई मोदसौंतारिकनंदनमेरुपदा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा. वरिपीनसिरायोहियो३ पीरुनिषोउनि
३. कौमउकेसबमालमैं३हिपानकियो३ रा
मनिहारीईकेटकोओगानपायौकोचा
हेकटारिपियो३ ३१ लछमणः तोटक
छंद तिनकौनम्रउप्रहृहृइकरैं तिनकौ
केसैनियम्रचितधरैजिनकेजगश्रुदानसौ
सधरै तिनकैंतैंनसकतकौंनकरै अबहा
तकिस्लैंकिसोकष्रसोकसमूरो केचित्र
सारीचंदेंकिचितातेनचेंदनचित्रकिपाव
कसूरो लोकुमैंलोकपहोआपलोकजके
सबदासज्ञहो३सहोक विप्रनिकेकुलकौं
भगनेउउसरनसूरजकेकुलको३ ३२
रामविसेषकंछंद हापधरैंहृपियारस
वैतमसोहतहै मारहिहारहिटे,षिकहूंम
नकोमतिहै छत्रियकेकुलहैको ३वैंन
नंदीनरचै कोतिकरौउपचारनिकेसहूंमी
चबचैं ३४ लछमनः छंद छत्रियदैउ
रलोगनिकेमतिपालकरैं भूलहूतौतिन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

केगुनजैगुनजीनपरैं ज्यौंवमहीअपनीजन
नीसबसुपाइहनी ३५ रामछंद लछमनके
पुरुषानिकियौभरषारसुसोनकस्तोपरई
वेसुबनाइकियौवनितानिकौंदेषतकेसवरू
रुरई हूरटोरिनिहारनज्यौफलताकौपरे
जहियौजरई आजतेकेसवताकौमहांपिजछ
त्रियकौंजदयाकरई ३६ गीतकाअपरचे नव
पकाविंसवरमैंविनछरकारदपवीरची वट्
केवधौंनितसौंभरेपितुनर्पनादिहुपासची
उवरेगछत्रिसछुरछतलसोपितोपिसंचा
रिहैं अववालहदननरुनछाजोपभुनिर्दय
पारिहै ३७ रामचंद्र दोहरा भयकुलकमल
दिनेसहुनिजीनसकलसंसारु वेगौंवलहि
इनसिसनसिरउरतिहैअविभारु ३८ राम
सोरठा रामसवेधसहारि छाडतिहैंसरमो
नहरः देकरूप्यारनिडारि हाषसमेतनिवेग
है ३४ ३९ श्रीरामचंद्रपद्धतिकाछंद सुनि
सकललोकगुरुजांमग्निनवविसिषअसे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा·
३९
31

षनिकीजसग्नि सविसेषक्काति सहिहैंस्र
षेउद्दारपजषुकसौंजिहषेउषेउ ४· परम
रामकवित्त वानहूमारनिकेतनत्रीनति
चारिविचारिविरंचकरेहैं गोकुलवालन
नारिनिषुसकजोजनदीनसुभावभरेहैं ए
मकहासहिहैंतिनकौंतुमबालकदेवघ्रदेव
उरेहैं गाधिकौंनंउतिहारीगुरुजिहिपोरष
पेषाकियेंस्रवरेहैं ५। श्रीरामचंद्रजुष्प·
मयुभयौभवपैंउषसालषुनितमकौंस
ले हृथ्याहोइस्रवसिष्टईहस्राषुनतैंचाले स
कललोकसवरहैंसेउगिरिजेंपरिहारैं स
मासिंधुमिलजाहिंहोहिंसवहीनः सुभारे
ग्रतिग्रमलजोतिनारायनीकहिके सब्ब
किनाइवरु भगवाध्यसमूारकुवानमेंकि
यौसउजनकसरु ५२ स्वागजाकेउ रामरे
मजवकौपुकसौंज लोककलोकभवभूर
भसौंज वामदेवतवस्त्रापुनस्त्राये रामद
रसोठसमकाये ५३ दोहरा महादेवकौं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देषिकरिझहैरांमसबविसेष कीनौंपरमस
रांमउनत्र्यामिषदियेअनेक ॥४४॥ चनप्पदी
सदासिव भगुनैंदनसनियैंमनमैंगुंनिये
रघुनंदननिर्दोषी निजराघ्रविकारीसबह
षकारीसबह्वींवियसंतोषी पकैंनमदे
ऊश्रौंहनकोऊपकैनांमकह्यौ श्रीर्इवल
ह्रस्यौचांऊजड्डह्यौमैंतैंनमैंनहऊपायौ ॥४५॥
पद्धरीछंद तमग्रमलघ्रनैंनग्रनादिदेव
ननवेदवषांनतैंसकलभेव सबकौंसमां
ननहिंवेहनैंहूँसबभक्तनिकारनपरनदेह ४६
छंद श्राविश्राऊनयोपहिचांनविश्र सउक
रह्याग्रागिलोकाज्ञछिम तवनादायनकोय
उगांनि भगनाप्यदियौरघुनाथुहाथु ॥४७॥
मोटकिछंद॰ नारायनकोपंऊपांनिलि
यौ पंच्यौंहसिदवनिमोदरियौ सिरीरां
मकस्तोत्रवकाह्रिहनौंत्रैलोककंप्यौभय
मांनचलौं ॥४८॥ दिगिदेवबहेवदवानवहेग्र
कंपमयौगिरराजफहे श्राकासभ्रमांनविमां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा०
३२
नकुसौ हाहासवहीभुवसक्षमयौ ५९
परसरोमससितदनाछंद जगुगुरजोम्यौं
त्रिभुवनिमांम्यौं ममगातिमारोसमौविचा
रौ ५० दोहरा विषईकीज्यों पुष्पसरमति
कौंहरनपुरनेग रामुदेवजूमोंकियौभयप
तिकौं रुघुभेगु ५१ मरहटाछंद सुरिषु
रिगनिभांनीमासनमोंनीभगपतिकौं
सुघमारो शासिषरसभीनेंबलसवहीनेग्र
वरसकेहिमारो ग्रतिग्रमतभयेरविरागन
बहीछविदेवनिमंगलगाप सुरकुलस
बहुषौं पुष्पनिबर्षौंडंदभिदेवबजाप स
मंगले ५२ दोहरा सोवतिसीतानाथकौं
भगुरीनींही लानभगुपतिकुलकीगति
रतीमनमोहमयपरकान ५३ मधुभारछं
द रसरघुजगाइ संभ्रमभगाइ चलेरामरा
इ डंडभिबजाइ ५४ सवैया नारिकाना
रिहवाहुकौंमारिकेगोतममनारिकेपान
करारे चापरुस्यौ हरकौं रुसिकेसवदेवन्न
देवहनेसवहारे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सीतहिंत्यागिहियभीतनचलेगिरिगर्वचपे
रघुनंदडनारे श्रीगरुडध्वजकौपंडलैमरु
नंदन गेपडरीपदघापारे॥ ५५ इतिश्रीरंदनी
नविरचितायांश्रमनसकललोकलोचन
चकोरचिंतामणिरामचंद्रचंद्रकायांश्री
रामपरसरामसमागमयोनामसप्तमः
प्रकासः समुषीछंद सवनगरीवहू
सोरभये जहंतहंमंगलचारठये वरनत
हैंकविराजचंचैं तेनमनबुद्धविवेकसनैं
मोरकछंद ऊंचीवहुबनेपताकलसैं सो
नैजरदीपतिश्रीवरसै देवीगनदेखनत्यौं म
वसै सोभैंतिनकेसभमंद्रबलसै २ दोहरा
कलसनलीनेकोटपरषेलनिसिहचहू
औरअमलकमलपरपरमनोंचंचरीकवि
नचोर ३ कलहंसछंद धरघाटघाटदववा
रविराजे जनघाटघाटघाटसैंनावलसा
जैं रहैंचारिचारिचटिकापरिमाने घरजा
हिं औरजवघावतिजांनैं ४ दोहरा घा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा· ठौरि सकेसी सगुन भाषा वेष विचार बाँदन
३३ तमन विलोकिय तनके सतपकही वार: ५
कुसुमविचित्रा छंद अतिसुभ वीथी रजपर
हरै चंदनिलीपी सुरूपन परै उहंदिसि मोहैं
सुवरनमय सकल विराजैं मनिमय नप ६
कुसुमविचित्रा छंद चरचर चेटनिके खरा
मैं विचविच सेय सुकाल रवाजैं पटरूप
षावक स्नावक मोहैं मिलसरूना इनसोंम
त्रमोहैं ७ हीरा छंद सुंदर सब सुंदर स्त्रनि
मंदर परियौं वनी मोहन गिरि छ्रिगगन पर
मोन छुमहि मोहनी भूषन गन भूषन तने
भूरचरित चोर ही दोषित तनु मोहित मैंत्र
बांतन यंनकोरही ८ सुंदरी छंद संकर
सैल चढी मनु मोहैं सिद्धनि कीतन व्याह
मसोहैं पसनि ऊपर पसनि मोंन हूं रूपनि
ऊपर दीपति जोनहूं ९ छंद कीरतिसी
जयसंजुत सोहति श्रीमति मेदल ऊपर मो
हति ऊपर मेरम कैं मनरोचन स्वर्नलताज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उलोचनि लोचन ९ विसेषक छंद पक
लियैं कर दर्पन वेदन चित्र पैं मोहनि हैं म
उमैं नह चों दिसैं चेदपैं पकनि केतैं न
सकमसारी जराइ जरे मैं वनकी डुति मो
नहूं दामिनी चितपैं ॥ सरकावलि श्री
जनु पद्मनि देहि पैं तोटक छंद नैन विसा
लनि भ्रुव तिलालनि जोनन जोगी मोंनहूं राग
तिराजनि हैं थै उरागरंगी नीलनिचोल
निकौं पहिरैं इक चित्त हरैं मेचनिकी डुति
मोंनहूं दामनी दरसावैं १० छंद वरषैं ज
मावलि पकवैंनी सुभ सोभन कोमलता
सी वनी वरषैं फल फूलनि भाइक की ज
उहैं नरुणी दतिना इक की ११ दोहरा म
रहटा छंद फलि फूलनि एवेन रवव रहरे
कलि कोकिल रव बोलै भ्रनिमानि मचरी
पियरा सपूरी नहैं नहैं नाचित डोलैं १२ दो
हरा भीत भयें गज पर चढ़े श्रीरघुवीर वि
चारि तिनहिं देखि वनंत सवै नगर नागरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नारि ॥ १५ तोटकछंद तमपुंजलस्यौग
३४ हिअंतनमनौ गिरश्रृंगजनुपरसोभमनौ जैत
राजतिकोमुसिगानकिरै किधौभामतलोभ
हिदांतुयरैं १६ मरहट्टाछंद आनंदस्यकासी
सबपुरवासीकरतिहदौरादौर आरितीउता
रैंसर्वसवारैः अपुनीअपुनीयोर पढिमंत्रअसे
षनिकरिअभिषेकनिआसिषसवैविसेष कुं
कुमकर्पूरनिमृगमदचूरवर्षतिवर्षावेष १७
तोमरछंद इहिविधिश्रीरघुनाथ गहेंभर्थकौ
हाथ पूजतलोकअपार गयराजदरबार १८
छंद एकएकहीबार चार्योंराजकुमार स
हितबंधुनसनेहु कौसल्याकेगेह १९ त्रिभं
गीछंद वाजेबहुबाजतनारनिसाजतिसु
निसुरलाजतिदुषभाजत नाचतिनवना
रीसुवनिसिंगारी गतिमनिहारी सुषसाजत
वीनानिनिजावैमुनिनरिझावैंगीतनगावैं
मनभीजै भूषनपटदीजैंसबरसभीजैंदेष
तजीजैहसिलीजै २० सोरठा रघुपतिपूरन

34

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद देखि देखि सब सुखपावै दिन हूँ ने आनंद
[illegible] ता दिन तें नित हूँ पुर च पके २॥ इतिश्री
रुद्रजीत विरचितायां श्री मत्सकललोकलो
चनचकोर चिंतामणि श्री रामचंद्र का यां नग
र शाजाे [illegible] मो नाम अष्टमः प्रकाशः ८
दोहरा रामचंद्र लछमन सहित घरा राषे द
सरथ विदा करे न न सार कौं संग समुद्र भर
थ । तोटक छंद दसरथ महा मन मोद र
ये तिलक सिह समेत उलषे दिनपक केस
भ सो भर यौं हम चाहत राम है राज दयौ १
छंद यह बात भरथ की मात सुनी पठऊं
वन राम हि बुद्धि गुनी तिहि मंदिर मैं न्रपसौं
विनयौ वर देहु जु तौ हम कौं ज दयौ २ छं
द न्रप बात कही हसि हेरि हियो वरु मांगि
सुलोचन मैं दियो न्रपता सुविसेष भरत्थ
है वरषे वन चौदह है राम रहै ३ पहिरी
द यह बात लगी उर वज्र तूल दियफ
नैं जोरन उतल उठि चले वि पन मैं सुंनन

रा सु तजितात मातु त्रिय बंधु धाम ५ हरिलीला
३५ छंद छूटे सबै सुतन जितिन के हुतभयपास विधावि
नोद उनगीत विधान वास अश्वादिक ग्रंथ जन
ग्रंथ अनेक लोग भूले अरसे सबसविसेषनिराग
भोग ६ मौक्तिकदाम मोदकद छंद गये उन
हूं रामु जहां निज मात कही यह बात सहीं व
न जात कछु जिन जीउ दुष पावहु माइ देहु अ
सीस मिलौ पुन आइ ७ कौसल्या उवाच रघु
बुपके सुत कौं बन जांहु न देषस कैं जिन केउ
रदाहू लगी अवबाम तुम्हारइ हिवाइ करे उल
टी विपकौ कहि जाइ ८ रामबलरूपक छंद
अबदेहु सीष देहु रामलेउ मौन जानराजा बाप
कौ लले को न देहु पोषिगात ९ दास होइ
अब होइ सिख होइ को इमाइ सागमनान मांन
इक को रिजन्म न कै जाइ १ कौसल्याहरनी
छंद मारिच लौ वन संग लियें पुत्र न मैरह
मैरह जियैं गेयधरी महैंगा नज परैं कहवरा
नमरणकौ १० राम तोमर छंद तुम कौंव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लौवनशात्र ज्ञिनसी सराजन्नराज्ञ जिसजोनि
जेयतिदेह करिमर्वभांननिसेउ ॥१ छंदु प
तिदेहमोग्रनिहस मनमांनलीजेसः स सव
नेनजोंनिश्चमिन्न पतिमांनकेवलमिन्न ॥२
स्रमतिगतिछंद नितप्रतिपंथहचेलिय स
सुउसकौदलदलियें तेनमनसेवनपतिकौं
तवलहिहैंसभगतिकौं ॥३ सोगताछंदः
जोगजागव्रतआदिजकीजेः न्हानदांनगं
गांनजदीजेः धर्मकर्मफलिनिर्मलदेवा
होसफलकौंपतिकीसेवा ॥४ छंद ताल
मानसनसोदरुजोंनौं देवविजेदसगेसवषा
नौं शुद्धसत्रतस्रीछविकाई हौंविहीन
भरताहषदाई ॥५ छंउलिपाछंद नारित
नेनआपनौंसपनेहूंभरताहू मंग्रगुंजैवीरा
वपिरुसंस्रसग्रनापुग्रपाहू संसुसनापुग्रपाहू
हडुवाननस्रतिरोगी वालक्रुषदुक्ररूपसदा
क्रवचनक्रुजोगी कलहीकोरीक्रूरचोरज्ञा
रीविमचारी स्रपमस्रभागीक्रटलक्रपतिम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नितजैननारी १६ पंकजवाटिकाछंदु नारि
३९ नजेनमेरभरनारहिं जासंगसहितपंचजौज
36 रहिं कौंहूंमिसकरितारूजितावडूं नौतिनकौं
यहूवातवतावडू १७ निसपालकाछंद गौन
विनमोनविनहासविनजीवहीं नमनहिंषा
हिंषाहिंनलसीननलनपीवहीं नेलननजिषलन
जिषारनजिसोवहीं सीतजलन्हांहिं तेनउ
न्सवनजोवहीं १८ छंदु षारसपुरीनहीं पार
पैनहींधरैं कायमनवाचसबधर्मकरिवीक
रैं क्रुछउपवासवसंरद्रयनजीतहीं घुउमिषली
नतैनजैलहृयनीतहीं १९ दोहरा पतिहित
पितपरतैंउनजैसती साषिदेदेव लोकलो
कसुनतिभरतनसीपतिकीसेव २० दोहरा
मनसावाचाकर्मनोंरमसौंछांडहेनेंह राजा
कौंविपदापरीनमतिनकीसुधिलेहु २१ मद
रिकाछंद अतिरामचंदलछमनसहेत नव
गएजनकजानिजानिकेत सनराजपुत्रकाप
कवात रूमवनपठयेहैंनृपतितात २२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंदः तमजननीसेवाकरौंजोम केशागजा
हूनिजजनककपाँम सुनिचेदवदनगजगां
मिपैंन जियकुचैसकी जैजलजनेन २२ सी
ताजू: नराजछंद नहीराहैंनजांहुजविदेह
पाँमकौसुवै कहीजवातमोनसैसमुाजू
मैंहनीसवै लगैकुपाहिंमांविपत्तिमांफल
रियें पियासजासनीरुवीरुजडमैंममहारि
यै २४ लछमनः हमियाछंद वनमैंविव
पिविकटकुसहनिपैं गिरगहूरहिंमग्रगामि
नगुनिपैं कहूंग्रहिहरिकहूंनिसचरहरी
कहूदवदहनडसहूडुदरही २५ सीता
जूकवित केसौदासनीदभूषप्यासउपहा
सजासडषकेनिवासविषमुषहूंगसोपैरे
वाइकौबहूडुबनदवकोदहूडुबडीवाउवा
ग्रनिलज्वालजालमैंरसौपैरे नीरननम
जातजोरजरचोरयारिसनसगारयरितागुवों
ककौपैर महिहौंतपनतापपरकेपतापर
गुवीरकुवीरकौविरहुवीरमोपैवौसस्तो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ परै॥ २८ रोमविसेषछंद यौं मरस्यौ तन मलक्ष
३० मनिराजकी सेवकरौं मातनिके सुनिजात स
37 दी रघुउः सहरौ श्रौनिभरणुकह्यौ केरयह
वात सुनौं जो तुष्टदेश नौ लैउर गौ पहवात सुनौं २२
दोहरा मामनमेटी जाइ कौं जीवत्तुमेरौ हा
सु श्रैसी कै संत्तुपाये सेवकु उचरवनचापु २९
विलंविताछंद विपनमारगरोमविराजही
सुषदसुंदरसोदरसाथही विवधश्रीफलि
सिंधुमनौं फल्यौ मकलसाधिनिसासिद्धहिले
चल्यौ २८ दोहरा रोमचलत सबपुर चल्यौ
जैसन हैं सरितउदारि मनौं भगीरथ पथ
लगेभागीरथीयवारि २ चंचलाछंद रोम
चंद्रयौं मनै चले हनै जवैरपाल ब्रह्मरंध्र
जोविफोरियौं मिल्यौ त्रिलोकि जाइ गेहरह
यौं चकोरु चंद्रमैं मिलैं उदार ३१ कुमारि
ललिताछंद रूपहिदेषतिमोहै ईसक
होनरकोहै संभ्रमविह्वलरूजो रोमहि
सौं मनउवंचौं ३२ चित्रपदछंद दोहरा॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोरठा निसवीतेंविवजांम रघुहिंपढाऐ
गैपछुर फिरलोगलविषांम सीयपतिलछ
मनवनपसे ३३ चित्रपदछंद कौनहैकि
ननैंचलेकितजातहौंकिहिकांमज्ञ कौन
कीविटियावहूकहिकौंनकीपहूवांमज्ञ
एकगांउवसौकिसाजनमित्रवंधुवषांनि
यौं देसकेपरदेसकेकिधौंपंथकीपहिचांनि
यौं ३१ कवित्त किधौंराजपुत्रीयरवरही
वरीहैकिधौंउपाधि वरेहैंरहिसोभाअभिर
तहै किधौंरतिरतिराजनाथजससाथ
केसौदासजाततपोवःनसिववैनहमरति
है किधौमुनस्त्रापहितकिधौं ब्रह्मदोषर
तिकिधौंसिद्धजतसिद्धपरमविरक्तहै
किधौंकोउठगहौठगौरीलीनैंकिधौजम
हरिहरसिवाश्रीहिचाहतफिरतहै ३४
मतमागलीछंद मेंद्यमंदाकिनीचारुसौरं
दामिनी हूपहूरेलसैंदेहधारीमनौं भूरभा
गीरथीभारतीहंसजाअंसकेहैंमनौंभाग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा भारीभनौं देवराजालियेंदेवरानी किधौंपुत्र
३८ संजुकाभूलोकमैंसोलिये पद्धरसंपियसंप्या
38
सपीहै किधौलछपलछपतछहीमोहीयैं ३५
अनेकसेषरछेउदंडछ तड़ागहींननीरकेस
नीरहोतिकेसोदासपुंडरीकक्रंडभौरमंडली
निमंडहीतमालवल्लरीसमेतसाषिसाषिकै
रहैतिबागफूलिफूलिकैसमूहफूलसंडही
बिनैंचकोरनीचकोरमोरमोरनीसमेतहं
सहंसनीसहेनसारिकासबैपढै जंहींतहीं
बिरंमुलेतरोभुजंतहैंतहेंअनेकभांतकेअ
नेकभोगभागसोंचपै ३९ सुंदरीछंद चौं
मकोरोमसमीपसबैजल सीतहिंलाग
तहैअतिसीतल ज्योंषरसंजतदोभिन
केतेन हौतहैंदूषनकेभूरभूषन ३७ छं
द मारगकीरजनायतिहैअतिकेसबसी
तहिसीतललागत ज्योंपदपंकजऊपर
पाइन देजचलेतिनतेसुषदाइन ३८ दो
हरा प्रतिपरष्ठहमपतिग्रामकीमतिनगर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नकीनारि सीताजूकोदेषसुषवर्नतहेंस
षकारि ३५ कवित्त तासोंभगुप्रेंकहै
तोसोंभगुनैंनीसववासोंसपापपुन्नहीसपा
पहमांनियें वहद्विजराजनेरद्विजराजराजेंव
हकलानिपतहीकलाकलितवषांनियें
रतनाकरकेदोऊकेसवप्रकासकरप्रेंवरि
विलासकुवलपहिंमगोनियें ताकेप्रति
सीतकरचंद्रमासीचंद्रमुषीसवजगतां
नियें ४ अमच्य कलितकलंककेसके
तप्रहसेनगातभोनजोगुकोप्रजोगरो
गहीकोंपलसो ऐसोहीकोंसरतपैप्रति
दिनहनोंदीनछिनछिनछिनैछिनविकील
रकेजलसोचंदसोजिवरनतरांमचंद्रकी
उदाईनेईमतमंदकविकेसवकुसलसोंस
दरसवासप्रहकोमलोप्रमलप्रतिसीता
जकोमुषसषिकोंवरु कमलसो ५। अ
मच्य पककहैंअमलकमलमुषसीताजू
कौपकैकहैं चंदमयआनंदकोकेउरी है

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
३५
39

तौ जौ कमल तौ वैरन मैं न सकु वैरी चंदु जौ
तौ वासर न होइ दुति मंदुरी वासर मैं कमल
रजन ही मैं चंद सुख वासर ही रजनी विराजै
जग वंदुरी देष्यौ सुख भावतिन देष्यौ इक म
चंदु ताते मुष सुख सबि कमलन चंदुरी ४२
मदिराछंदु दोहरा सीताते न चकोर सषि
रवि वंसी रघुनाथु रामचंद सिय कमल मु
षि भलौ वन्यौ यह साथु ४३ मदिराछंदु वं
न वाग तड़ाग तरंग नि नीरन माल कौं छांह
विलोक भली घटकाइक वेद नहैं सुष पार
विकाइ नहीं कुसुमसकौं सपली ममकौं श्र
ग्री पति हरि कैरसि प्रकौ सु विवा कलश्र
लकै ष्यौं सुनें इह तौ तिन कौं कहि के सब चंच
लचारु दृगं चलकै ४४ सोरठा श्रीरघुप
ति के रूप श्रम बलि तसी तानयन सांची क
री अदिष्ट फूटी उपमां मीन की ४५ दोह
रा मारग मैं रघुनाथु जू सुष दुषसब ही देत
विरह रूर पर्व न गये सो दर सिया पास में न ४६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांमसकललोक
लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रका
यांश्रीरामचंद्रवनवासगवनंनामनवमः
प्रकासः ९ दोधकछंद आनिभरथपुरी
अवलोकी थावरजंगमजंतससोकी।
भाटनहीबिरदावलसाजैं कुंजरगाजैंनडुंडु
भिबाजैं १ छंद राजसभानविलोकतकोऊ
सोचगहैनवसोदरदोऊ मंगलमातुविलो
किअकेली ज्यौंविनवृक्षविराजतवेली २
तोटकछंद नवदीरघदेषिसनामकियें उ
टिकैउनकंठलगाइलिये नपिपेजजग्रेभ्रम
फूलरहैं नवमानमातसौंवातभरथुकहैं ३
कवित मातकहाँन्यनाथगयेसुरलोकन।
कैंसुनतसोगलप सुतकौंसुरामकहाँ
हैंवंनलछमनसीयसमेनगप वंधुकाजक
हाकहिकेसवमोसुतुनोकौंकहासुषपामै
भप तमकोंप्रभुनाथिकुतोकौंकहांअपरा
धविनांसितगरेंहृप ४ दोहरा भतीसुन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा. हिः विदोषनी सबही कौ दुषदाइ यह कहि कै
४. देषि भरथ कौसल्या के पाइ ५ तोटकछंद
नव पाइ न जाइ भरथु परे उनमेट के अंक उठा
इ धरे सिर संचबिलो चिबलाइ लई सुत तो
बिछुरया विपरीत भई ६ नाराचछंद सुन
मात भई यह बात ज्यों अनेसी जु करी सुतन भली वि
नासनि जैसी यह बात भई जन जांन मैं जा
कैं दिगहि जदोषपरैं सिर ताकैं ७ छंद
जिनके रघुनाथ विरोध बसैं जु मट पावनि
के तिनो पाप ग्रसैं नजु रस रंग मरयौ मनु जाहि
नताकौ नरमैं सब जन्म न पराजय ताकौ ८
कौसल्योवाच छंद जिन सौंह करौ तुम घु
र सप्तौने अति साधु चरित्र तुम्है सब जांनैं स
ब कौं सब काल सदा सुषदाई जिय जांनत नहीं
सुतन्मौं रघुराई ९ चेचलाछंद हाइ हाइ जहाँ
तहाँ सबहै रही सिगरी पुरी धाम धाम नित्य
दीसगंरी सवैं जहाँ ती डुरी लै गये न प्राननाथ पा
कौं सब लोग भी सरि ज्यू तर्थे राजपथ समैत घु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्रनिविप्रलाप्रगंहीरंही १० सोमराजीछंद क
रीप्रग्रिप्रची मिटीमेनचची सबैराजपांनी
भईदीनवांनी ११ कुमारललिताछंदकया
भयीकीनी वियोगरसभीनी सजीमलिन
हीनी मुकंदपदभीनी १२ तोटकछंद परि
हैवकलाहुजरापरिकै निजमाइनिंपच
लेप्रतिकेतरिगंगगपग्ररुसंगलयो चित्रकू
टविलोकिसुकाउदयो १३ कवित्त सवसा
रसहंसभपषगषेचरवारिदज्योंवद्भवासन
गाजे वनकेनरवांनरकिंनरवालकलैमृ
गज्योंमृगाई प्रुनभाजपे तजिसिइसमाइ
निकेसवदीरघदेरिदारीनमैं आसनसाजे
भूपरभूतलहाले अचांनकआ: नभरथके
दुंदुभवाजे १४ दोहरा तवरामचंद्रलछम
नडवौंसोभतिसीतासंगकेसवदासमहास
उदचलेपरनिपरसंग १५ लछमनःमोहन
छंद देषोभरथचमूसजिप्राप जनिआवे
लहंमकौंउदिपाय हौमनहसबद्भवारनगा
दीरघदेषोदुंदुभीवाजे १६ नारिकाछंद ॥

रा॰ गजराजनिऊपरपाषरसोहैं अतिसुंदरासी
४८ ससिसीमनुमोहैं मनिहेचरवंदनकेरवरा
जै नरिनाजनतमोनदवारदगाजे १७ सवै
या जदकौंआजभरथचटेचतुरंगचमूकी
दुसहेदिसपाई आतचलीचतुरंगचमूंवर
नीसवकेसवकौंहूनजाई ज्यौंसवकेतन
त्रौनतेसौंफलकीअरुनोदयकीरजऊपर
आई १८ तोटकछंद उटकैपरहूरथअकाम
चली वहुवेचलवाजधुरी निदली भुवहा
लतजौंनिअकामहियौं जनुयौभतिदौर
निदौरनिदौरकियौ १९ नाराचछंद रेंन
राजकमुमारअरुकरिहैगेज अतिसोमुहे
वोंदननजकहिंगेज जनुदौरनिदौरनिप्रेम
नवीनो तिनकेचपवेकहेमारगकीने २०
गीताजछंद रहीहरविमाननिअौंमयली
तिनकहेंजनुहारनिभूरचली पारिरथअका
सहूपरवही हगपमितहूरथकामनमही २१
दोहरा अपनैंकलकौंकलहकौंदेखेरविन
गवेत यहैजोन अंतरकतोमोनैमहीप्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तोटकछंद॥ बहुनामहिदीहपताकलसैं
जनुधूमअनगकीजालवसैं रसनाकिधौं
कालकरालचनी किधौंमीचुनचैचहूंवो
रचनी २३ सीताजूदोहा देषिभरथकी
चलधुजाधूंननमैंसुषदेति जइजगरनकों
मनहूंसुषदेति जइजगरनकोंमनहूंपति
गोपनवोलैंलेत २४ लछमनदंडकछंद मा
तिगरौंसुखजसमेतरहिषेतसुवमेटउगौंके
मोहवववतिजगरको सीतासीयसीता
नाथुवैरदेषिकरतनाहरविपरषेसोऊ
सवहीकेउरको केसोदाससविलासुवे
सविसेवासहोरकेकेइगगुडजगरको
रघुनाथजूकोसाजसकलछिनाइलेउ
भरथहि ग्राजुराजदेउतेनगरको २५
दोहा पकराजेमैंहोतजेंरूदैमभुकेस
वदास तहांवसतहैरानिदिनश्रगतिव
नविलास २६ जमालजलताछंद तव
उनसेनाउहिमालरासी सुंनजनलीने

रा० मेंगरुअभिलाषी रघुपतिकेपाइनसिरनाय
५२ उनहूंमिकैलैकेंदलगाए २७ दोहरा मा
तसैवमिलवेकहेंघाई ज्यौंसुतकौंसुरभी
धलवाई लछमनिसौंउठिकेरघुराई पा
इनजाइपरेदोउभाई २८ छंद मातनिके
दउठाइलगाए पौनमनौंसरनेदहूनिपाए
प्रानमिलीतबसीयसभागी दौरिकैसास
निकेपगलागी २९ तोमरछंद तबसा
खियोरघुराई सबुहैपितानतमाइ तब
पुत्रकोमुषजोइ सिगरीउहीतबरोइ ३०
दीपकछंद श्री: सनिसौंसबपर्वतयौयौ जे
गमकोनरजीवनरोयौ सिउवधूसिगरीस
निआई गजवधूसिगरीसबुकाई सुषदाछंद ३१
पतिचिनधीर गयेगंगातीरसुचकैसरीर पित
तर्पनीर ३२ नाराचछंद भर्थोवाच घर
कौंचलीयप्रवधीरघुराई जेतेहैंतुमराजसदा
सुषदाई यहबातकहै जलसौंगलभीमौ उठि
सोदरपाइपरेतबतीनौं ३३ श्रीरामोवाच:

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राज्जदियो हैं मकौं बनरहसै राज्जदियो तुमकौं
सबरहसै सो हम हूं तुमहूं सबकीजै बापकौ
बोलन नेकहूं छीजै ३४ दोहरा राजाकौ ग्रह
बापकौ बचनमेट्यौ कोइ जौनमानिये भर्थ
सुनमारेकौ फलहोइ ३५ भर्थ स्वागता छंद
मध्यफोननरसी जितकोइ संतपानजनवा
लजकोइ देषिदेषितिनकौ सबभागैं जारि
हूतनति ग्रबयाकुनल्लागै ३६ भर्थ्याछंद ३
तई स्वजगदी स्वबषांन्यौं बेदिबाकबलतैं
सबजांन्यौं ताहिमेटदूटकैरहिहौ गंगतै
रजनकौं तजिहौंतौ ३७ दोहरा मौनगह्योपहू
बानकहि छांड्यौसबैविकल्प भरथजाइभागी
रथ्यौबैठकियौसंकल्प ३८ इंद्रबज्राछंद भागी
रथ्यीरूपअनूपकारी चंदाननीलोचनकंज
धारी बानीबषानीदिषतस्म सोध्यौ गंगजै
ग्रानिसबैदुबोध्यौ ३९ छंद अनंतअलादि
नअंतपारसा अनेकधावेदनगीतगायौ ति
ह्नैंनगांमेंजनबंधुमानौ सुनौं सुइ्पीकेब
लब्रह्मजानौ ४० छंद निजेकायामतल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
५२ देहुरारी अधर्मसेचारकधर्मचारी चलेदसश्री
वहिंमारिवेकौं नपीछलीकेवलमारिवेकौं ५१
छंद उदेहहीद्रोहनकाजकीजै कहैजोक
छुराजसोमांनलीजै अदोसतेरीतमभातसो
है सकौनमाथपाइन्हकौनमोहै ५२ दोहरा
यहकहिकैमागीरथीकेसबभईअदिष्ट भरथ
कहीउत्तरामसौंदेहुपाउकारह ५३ उपेंद्रव
ज्राछंद चलेवलीपावनपाउकालेकै अद
ष्टिलीरामसीताहिदेकैगयेतेनेवदुरवाह
कौनौं सबैपुण्यश्रीरामहिंचित्तदीनौ ५४
दोहरा कैसबभरथहिआदइदेसनगरकेलो
ग वैनसमौंनचरचरवसतसकलविगतसं
भोग ५५ इतिश्रीरंदजीतविरचिताचिंतामनस
कललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरा
मचंद्रचंद्रकायांभरथपाउकाग्रहनंनाम द
समोप्रकाश: उक्काछंद चित्रकूटरघु
नाथजूनमौ नारदजगधवलछत्रकौ मनौ
रोगलालिकमनसमेनदेखियौं आशुनयोजनज्ञ
नपललेखिसौं । अत्रवचनवेसलागतांले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

३ अनेकधाप्रनवअवलूकसौ किंपालहै
श्रीरघुनाथजूपसौ पतिव्रतादेवमहर्षकीन
रा सहडसीसषदागईतहाँ २ दोहरा पति
व्रतानकीदेवताअनसीयासुभगा सीताजू
अवलोकिजरासषीकेसाथ ३ वेनसुपदीछं
३ सिरुसेतविराजैकीरतिराजैजनुकेसवतप
वलकौतनवलीपलितजेंनुसकलवासनां
निकसगईथलथलकी कांपतिसुभग्रीवा
सवअंगसीवांदेषतचितभूलाहै जनेंअने
मनपतियहूउपदेसनपानगमैंकछुतारि ५
प्रमिताछंद हरवाइजाइपगसीयपरी रि
षनारिसूंघसिरअंकधरी वहुअंगरागअंग
रागरय अरुभाँतभाँतकेउपदेसदरा ६ अस
नीछंद तंसुआगेचलेमध्यसीतावली वंधु
पीछेभयसोभसोभाभली देषदेरीसवै
कोटधाकैमनौं जीवजीवेसकेवीचमाया
मनौं ७ मालतीछंद विपनविरोधवलि
षुटेविधो रूपननयाभयभीरलेषियो नव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० रघुनाथ चौंकु कै हृयौ निज निरवान पंथ प
५५ ठायौ ८ दोहरा रघुनायक साइकपरै सा
44 कल लोक सिरमौर गये कृपा करि भक्त व
सरि षग गल के ठौर ९ वसंत तिलक छंद
श्रीरामलछमन अग्र गल सनाति देषि ता हूम
मे तन सम पावक रूप लेषि श्रंगो गढ़ि खमि
वंदन जाइ कीनै सदा नंद श्रासि षग्रसे षरिष
दीनै १० छंद वैठारि आसन समै शुभि लाष
हुजै सीता समेत रघुनाथ सबै षुहृजै ताकै न
मित हम जगम ज मो सुपायौ बल्लोड मेउ न सम
रूप अर वैर गाहौं ११ पद्धरीया छंद बल्लोंद वे
दन अविनय कीन नटक्कीर सिंधु ।।
है पस्म लीन तुमकुसौ देव अव तारु ज्ञाहि
तनमें दसरथ कौ होन आइ १२ छंद हम
न व तें मन आनंड मोंनि चितवत मगग आ
यो सुजांनि हरि रहियै करि रादेवकाज म
मह लपत्तैन पहुचु आज १३ श्रीरामउवा
च भिखी अग हरि विराज जाव वनु इकमेरै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सोहनैं अमल सब भौंन भूजल सुदेस जीमैं ग्य
नैं सजीरन रूषेउ छिडेन समद्र सोभा यरें ज
हाँ हम निवास कौं विमल साला करें: १४ प
द्मावती छंद जद्यपि जग करता पालन हरता
हेदन परिहरन गाये अद्भवतब पिरूपा करि
माया वपु धरिय ललक्षन हम कौं आये हरि
हरि वरना हूँ करन्छ सचार कसबाखंडम: नि
जमहली जै सुभगोदावरितट विसदपंचव
टय भु पर्नकुटीन हकीजै १५ दोहरा केस
वकहेगुगल के पंचवटी के तीर पर्नकुटी
पावन करी रामचंद्र रनधीर: १६ छंद फलि
फूल ने सेन खेरहै कल कोकील रव बोलें
अति मनन मसूरी हयरसहूरी वेनवन पतिनाव
नसोलें देषे रघुनाई अति सीपसराइ कमनैम
दनरति जोनै सारो हक मेंडन गगन गन मेडा
नि भावन मसवचन न राषो नै १७ लक्षमन
सवैया सवज्ञानफरीडपरीडुषकीकप
रीनरहै जहैं पकठरी निवरी हचमीठवरी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा.
४५
45

हूंवटीजगजीवजंटीनिकीछूटीचंटी ग्रव
लेवकीवेरीकंटीविकटीनिकंटीअगटीगु
रंग्यानगटी वेंदूलेरनिनाचतिसुक्तिनटी
गुराभूरजंटीजटीपेचवंटी १८ ह्राकलि
काछेउ सोभतिदंजनिकीवदूवेंनी भौंत
निभोंननिहेदरवेंनी सेववडेन्रयकीज
उलसैं श्रीफलभूरभावजहैंलसैं १९
छेउ विरमयांनकसीअतिलगै ग्रकस
मूहनहांजगमगै नैंननिकौंवदूदौनाथ
ते श्रीहरिकीजेउमूरतिलसै २० सीता
जू दीपककछेउ सोहनहै यहजौं कुलके
ज्यों धारविराजतहैवदूधंज्यों केसपली
जउश्रीगिरजाकी सोभधरेसितकंवप
भाकी २१ श्रीरामनराजछेउ अतिनिकट
तवेसगोदावरीपापसंचारिनी अतित
रलतरंगतुंगावलीचारुसेचारंनी ग्रम
लकमलसोभसौंगंपली लामणोहारएी
वदूनयनहरेसकेअंगसोभामनैंयावनी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद रीतमनौअवबेककीपापी साधनकी
गतिपावनपापी कंजजकीमतिसीवउ
भागी श्रीहरिमंदलसौंअनुरागी २३ अ
अतिगतिछंद निपटनिब्रतधरनी मग
जंनकेसुषकरनी निगरसदागतिहनि
षें अगानिमहांमतिगुनिषें २४ दोहरा
विषमजयहगोदावरीश्रमजनिकेफल
देत केसवजीवनहारकेउषअसेषहरि
लेत २५ त्रभंगीछंद नवजवधरवीनाअ
गरअवीना वहरसलीनासुषसीना पिय
जिअहितकावेउषनभगावैविवयवजावै
गुनगीता तजिमतिसंसारीविपनविहा
रीउसुकारीचिरआवैं नवजवजगभूषन
दिउदलहूषनसवकौंभूषनपहिरावै २६
तोटकछंद कवरीकुसुमालिसिषीनट
ईगजकेंमनिहारनिसोभभई मुकतास
कसारकनाकरचे करिकेहारकिंकनि
सोभमचे २७ छंद इलरीकुलकोकिल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ केटवंनी म्रगाषंजनिश्रंजनभांतिभली त्व
४८ चहंमनिहपरसोभाभिरीकलहंसनिकंव
निकंदसिरी २८ छंद मुषवासनिवासत
कीन्हनवै नगगुल्मलतानरु सैलसवै
नलहूथलहूंदरीनरमैं वनजीवजहां
तहांसंगभ्रमैं २९ दोहरा सहजसवास
सरीरकीवंनउपवंनश्रैं विगारि हतीद्वैश्रा
इलियेकेसवसपनषाहि ३० मरहट्टाछं
द एकदिनरघुनाइकसीयसहायकरति
नायकमुरहारी सुभगोदावरतटनिक
टपंचवटवैटेइते मुरारी देषतहीमनमद
नमथ्योतनतसपनषातिहकाल प्रतिसंद
रवसुपरिकन्हयारनपरिवोलेवचनरसा
ला ३१ सपनषाविजयछंद किन्नरहौन
रहूयविचक्षनसबकसरीरनिसोहै चितच
कोरकेचंदकिपौंम्रगलोचनचारुविमान
निरीहौं श्रंगपरैंकिम्रनैंगरहैकेसवश्रगीश्र
नेगनिकेमननमोहै वीरजनानिपरैंपैंनहां

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गलियैंवनमांवनमैंतमकौहै ३२ श्रीरा
म मनोरमांछंद हमहैंदसरथसुअवपति
केहनरांसुसलछमनेंनांसुहसंजन य
स्मासनिदैपदराइहिंकौंनन सुनिपारहि।
मारहुराषसकेगेंन ३३ दूपनरवामनो
रमांछंद नृपरोवनकीभगनीगतिमोक
है जिंनकीठकुराईतिंतीनहूंलोकहंहति
गैडुषमोचनधीरजलोचन ३४ श्रीराम
छंद नवयौंकलौहसिरांम श्रवमोहिजो
निसवांम त्रियजाइलछमनदेषि समरू
पजैतनलोषि ३५ दूपनरवा दोधकछं
द रांमसहोदरमोतनदेषौ रोवनकीभग
नीजियलेषौ राजकुमारिरमौसंगमेरे हो
हिसवैसुषसंपतितेरे ३६ लछमनछंद
वैमभुहौंजनजोतुमदाई दासभयेमहिंकौं
नबडाई जौभजियेप्रभुतौप्रभुताई दास
भयेमहिहुउपहाससदाई ३७ मलकाछंद
हासकेविलासजोन देहमांनषंडमांनि म

रा॰ ५८ छिवेकौंचितचाहि सौंमुद्देमईसियाहि ३८
दोहराछंद नवरामचंद्रप्रवीन हसिथ्रुवज
57 सौंदृगवीन गुणगहन्तासहलीन श्रुतना
सिकाविद्रहीन ३९ दोहरा श्रौंनछिद्र
छूटतवदनभीममईतिहकाल मानौक्रु
ताक्रुदलजत पावकज्वालकराल ४० १
तिश्रीइंद्रजीतविरचितायामत्तकललो
चनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रका
यां॥ रूपवर्णनप्रकास तोटकछंद॰ गई
छमनषाषरहृषनयै सजिलाईतिन्हैजग
भूषनयै गदसत्रुत्रिदोषज्यौंहरकेरवर
त्रिसिलाषरज्यौंनष्ठनंदनकेसर १ तोट
कछंद गईछूपनरवाषरहृषनयै सजि
लाईतिन्हैजगभूषनयै सरपकप्रनेकन
हरकिये रविकेकरज्यौंतमपुंजपिये १
मनोरमाछंद छूसकेषरहूंषनज्यौंषरदूष
न नवहरकरेरविकेकुलभूषन गदसत्रु
त्रिदोषज्यौंहरकरेवर त्रिसराषरज्यौंरघुने

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दनकेसरः २ छंद भजिरूपनषागाईऐव
नयैनव त्रिसराषरदूषननासकहेसव न
वरूपनषामुषवानसवैसुनि उठिरोवनगै
नहूंमारीचुमुनि ३ दोधकछंद रावनवा
नाकहीसिगरीसौं रूपनषासुविरूपभ
ईज्यौं राषसरोमप्रसेषसचोरे हषनसौं।
त्रिसराषरुमारे ४ छंद नेश्रवदेहरसहा
रुमेरौ हौंवडूतौ गंनजांनततेरौ हमह
रिसीनहिंत्यौंवनपैहैं वेभ्रमसोगनिहीं
मरिजैहैं ५ मारीचुः दोधकछंद रामहिं
मांनसकैजिनजांनौ एरनचौदहलोक
वषानौ जाइजेंहांत्रिमलेहनदोषौं हैंह
रिकौजलहूथललेषौं ६ पंकजवाटिछंद
नेश्रवमोहिसिषावतिहैसठ मैंवसजंक
कियौंहठहींहठ वेगचुहिं श्रवदेहनउजह
देवसकलजैंनपकुनहींहन ७ दोहरा जौं
निचुलेमारीचुमनमरनठहेविपश्रासरा
वनकेकनकुहेहरिकरिहरिभरवाह ८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ श्रीराममंदरीछंद राजहनतारकमंत्रहनौंग्रव
४९ चाहतहैंभुवभारहरयौसब पावकमेंनिज
46 देहदिराषी छायासरीरमरगैंग्रभिलाषौ ९
नाराजछंद ग्राइयौकुरंगपकवाहहैमहीर
कौ जौंत्रकीसमीतविनमोहिरंगमवीरकौ
राजत्रत्रकासमीपसाध्वंयुराषिकै हाथवो
प्रवांत्रलैगपगिरीसनाषिकै १॰ दोहरा॰
रघुनाथजबहीहैंग्यौसाइकसकमारीच
हालछमनयहकहिगयौश्रीपतिकेह
रनीचु ॥ निसपालिकाछंद राजननयां
नववोलसुनियौंकहौं नाहवलदेवरनजा
रहैमपैरसौ हेमम्रगहोइनहिरैउचरुजां
निसैं दीनसुररामकिहिभांनउरग्रांनिसैं १२
लछमनछंद सोचुग्रतिं पोत्रुउरमोचुउस
दांनिसैं मातग्रवदातयहवातमनमांनि
तरुरामकवहैनसुभाषिहौ दीन
उ पक्कराजकराजमेतराजजातयौंत्र १२ चंचलाछं
देवत
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रदेवतानरदेवताजितेजहाँत्र पर्वतानिग्रबं
षर्वसर्वसर्वप्याँवषाँन कोटकोटसूरचंदरा
मचंदूदासमान १४ सीताजूचामरढुंडरा
जपुत्रकाकलौहगैरकोहूनेकहेहनें कान
छूँदवारवारसीहवीहथाँपुँनैं चाँपकोरी
चकढिदेवसाषिदैचलै नाकितिभसहा
र्नीवजेत्रुलोभले १५ छिद्रताकिछुदखढ
लेकराजग्राइयो भिछुजांनजांत्रकीसभी
षकोत्रुलाइयो सोत्रुभात्रुकेसैंकोचपोच
भीमभैप्रुकौ अंतरीछहीकरीजौराहचंद
रेषकैं १६ कवित धूंमसरकेनिकेतमनैं
धूमकेतकीसि षाकि धूंमजोनिमध्यरेषा
सुपापरधाँमकी चित्रकैसीपुत्रकाकि
हरीवचहरेमाँक सेवरछिगइलईकौ
मनीकिकांमकी पाषंडीकीश्रद्धाकिमठ
सकपकारसीलीनीकिहमचराजहदसा
षासांमकी केसवप्रादिहसापजीवजोत
जैसीलेकानाथहापमरीछायाराँमकी १७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ सीताजू हरिलीलाछंद हा रांम हा रम
५९ न हा रघुनाथ धीर लंकाधिनाथ बस जा
नहुं मोहि बीर हा पुत्र लछमन छुडावहुं
वेगि मोहि मार्तंड वंस जस की सब लाज तोहि १८
छंद॰ पंछी जटाउ यह बात सुनै न धाइ रोक्यौ
तुरंत बल रावन दुष्ट जाइ कीनौं प्रचंड रथ खं
ड खंड ता विहीन की .... नब जब भौ प
छहीन १९ संयुताछंद देह के असि तहि
लै चल्यो अति हर्ष मीय हिंयो गौद ल्यौ चित
जांनु की प्रवची कीकियों हरिनीन है प्रविलो
कियों २० छंद यद्यपि यह की सुभ ह्वै धरी म
निनील हाटकि सौं जरी जात उपरी यों विचा
रिकै भूषन डारि दीय गदारि कै २१ दोहरा सी
ताके पद पदु के नुपर पट किन नाजांनों मो
नैंकि सौ सुग्रीव चर राज श्री हनुमान्यो ज २२
दोहरा सोदर सहित नाकिलोकियो रघुपति
सैनौं सैव सुभ नासो भस मंगध जात ज्यों प
यवित्र पशु २३ दोहरा जद्यपि श्री रघुना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

यज्ञसमसर्वगसर्वगय नरकैसीलीलाक
रनजिममोहितसवग्राणय २४ श्रीरामजी
चंद्रकलाछंद निजदेषौंनहीं समसीतहिंगी
तहिंकारनकौंनकहौअबहीं अतिमोहित
कैवनमोंजगई हरमारगमैंभ्रमुमासोजा
हीं कहुबानककृतमसौंकहिआईकिधौंति
हिजासउराइरही अबहैअरूपनंजुटीकिधौं
अरूपनंजुटीहोइनहीं २५ छंद पीतजसौं
अपनौंमनुरोकौं गीधुजराउपसौअवलो
कौ [illegible] कछुधजारघुदेषिकैघ
यौ पक्षिकसौरेनकौंनसोजुयौ २६ ज
टाउवाच छंद राघवरौंतुनलैगाशीसीतहिं
हारतुनाथुरटेसुभगीतहिं मैं विनुछत्रघना
रघुकीनौं हैगरौहौंवलपक्षविहीनौं २७
छंद हौंगजमैंसवतैंवडभागी देहदसान
नकारनलागी जोवढ्ढभांततनवेदनगायौ
रूपसोमैं अवलोकनिपायौ २८ श्रीराम
उवाच छंद साधुजटाउसदावडभागीजो
मनमोंवधुसौंअनुरागी कह्यौसरीरहनौ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा.
५.

50

यहवोंनी रोंमहीमैंनबजोनसमानी २४ तो
टकछंद दिसदछनकौंकरिदाझचले सरिता
गिरदेषतिहछफले ननग्रंपकवोग्रविलोकन
ही सुरलोकगयौसहलागजही ३० छंद स
रनाइककेसवसोभभई अवलोकिनहोंचक
वाचकई उरमैंसिग्रीनसमाश्रहीतिनसौं
रघुनाइकबातकही ३१ छंद अवलोकति
हैंजवहीजवहीं उषहोतनमैंतवहीतवही
यहवैरुनाचितकहूपरियै सियदेहवनाइक
याकरियै ३२ छंद किनचिंतचकोरककुक
परौसियदेहवनाउ सहाउकरौ ससिकेअव
लोकनहरकिय जिनकेमुषकीरुचपीयजि
य ३३ लछमन चंदकलाछंद कहिकेसव
जायककेअरचेपकसोकअसोकलियेहरि
कै लषिकेनककेनकीजालग्रलालनतक
नचितनतजैररकै सनिसाधुनमैंदमएछन
प्रायरहैमनमौंनकहापरिकै सिषकोकछु
सोधकहैकरुनाकरुनामयसौं करुना
करिकै ३४ श्रीरामनराजछंद दिसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हहरसौभयौहवातनवत्रसौवहै निसाँनरैं
हुसाँनजौविलेपअंगकौंदहै विसेषकाल
रातजाँनिये वियोगसीयकौनकाललोकहो
नमानिये ३५ पद्धटिकाछंद रहुभाँनवि
लोकेसकलटौर गपसवरीपैदोउदेवमो
र लियौतिहचारानोदकपदपषारि नवधवी
दिककीनैंसुपारिः ३६ छंद हनदेनमेउ
जिनकौंविसाल सुभकोसीमहिउनमरन
काल तेश्राये मेरेपैंमश्रान सफलकरन
गपतपसमाज ३७ छंद फलभोजनकौं
तिहँपरैंश्रांनि भषेजगपुरषि श्रतिप्रीत
जाँनि तिहँरामचंद्रलछमनस्वरूपतवपरे
चितजगजोतरूप ३८ दोहरा सवरीयौंव
नपंथतवहरषिगईहरिलोक वननिविलो
कतहरिगपपंपातीरश्रसोक ३९ तोटक
छंद श्रतिसुंदरश्रतिसीतलसै जहँरूप
श्रसेषनिसोभवसै महूपंकजपंछविराजतहैं
रछनापुविलोकनलाजतहैं ४० छंद सिग
रीरितसोभतितिहग्रजहाँ लसैंग्रीषमपैनय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ वेनुहां नवनीरजनीरनहां सरसैं सियसभलो
५१ चनसेदरसैं ४१ विनयछंद सुंदरसेतसरो
रुहमैं करहाटकहाटककीद्युतिकोहै तापर
भौरुभलौम नरोचनलोकविलोकनिकेरुचि
कोहै देषिरईडपमों जलदेवनिदीरचदेवनि
केमनमोहै केसवकेसवराइमनौंकमला
सनिकेसिरऊपरसोहै ४२ लछमन चंदक
लाछंद मिलचक्रिनचंदनवानचलैघ्रति।
मोहतन्याइनहीमतिकों मृगमित्रविलो
कतिचित्तजनैं लियेंचंद्र तृसाचिरमइति
कौं प्रतिकूलसुकादिकहोहिं सबैजियें
जांनैं नहीं इनकीगतिकों उडुदेततडाग
तजैनवनैकमलाकरकौं ४३ सोरठा
हुष मूलपर्वतगयेकेसवश्रीरघुनाथ
देषेवांनरपंचतिनुमांनौदछनहाथ ४४
कुसुग्रीवविजयाछंद नवकपिराजारघुप
तिदेषे मननरनारायनसमलेषे दिजव
पुकैतवहन्वंतआय बहुविधदेष्यासिषम
नभाये ४५

51

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीहनुमानछंद सबविपन्हरेवंनमहँकोहै
तैंनमैंनहरेमननमथमोहै सिरसिजटाव
कलवपुधारीहरिहरमांनोंविपतविहारी ४८
छंदु परमवियोगीसबरसभीनै मगनत
नप्केजगतैंनकीनै ग्रवहमकोहैकाल
गिबंनआये किहिंकुलहैकौंनेपुनजाये ५०
श्रीरामोवाच चंचरीछंद प्रथश्रीदसरथवन
राजसासनआइयौ सियसुंदरीसंगहीसवि
कुरीमहइसोपुनमाइयौ रांमलछमनुनोंमु
नोंनहूसरवंसवषानैयौं रावरेवंनकोंन
हैंकिहिकाजकौंपहिचांनियौं ४८ हनू
मनदोहरा यागिरपरसुग्रीवनरपतासंगम
त्रीचार वांनरलैइछिद्रारद्वियदीनौवालि
निकारि ४९ दोपकछंद वाकहैंजोआपनौ
करिजांनौमारैवालविनौंयहमांनौं राज
देदेहूजयाकीतियाकौं मोहूमरेहिंवताइस्त्रि
याकैं ५० लछमनउवाच आरतिकोमसुग्रा
रतिटारैं दीनअनाथनकौंमतिपारैं थावरजं
गमजीवनिकोई सन्मुषहोतहूतारथसोई ५१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा छंद वानरहै हूँनवंन सिया सौं सुरजनकौ सु
५२ नपाइन पासौं रामकहैं उठ वानरराई राजसि
रीसखिसों वियपाई ५२ दोहरा उठि राजा सु
ग्रीव जनवतेंन मैं नम्रतिसुषपाइ सीताजूकेम
हिसहितनन्दू परदीनेंआइ ५३ ताटकाछंद·
रघुनाथजनैं वपटभूषनदेष कहिकैसबवांनस
मांनलिलेष सबलोकनिलछमनककति
दीनैं उभिग्रादरसौं सिरमांनलिलीनैं ५४ श्री
रामोमनसिंउदेउकछेतु पेजरकिषंजरीडुनैं
ननिकौंकियौंनीनमनसाकौकेसोदासगत
हैकिजातहै षंगकौकिश्रेगराजगेंउवाकि
गलसूईकिपौंकटिजेवहीकी उरकौंकि
हारहै वैषतहमारीकौमकेलकौंकिनाउि
वेकौनाजिनौं है विजनुकिचवरुविचारहै
मांनकीजेंमनकाकिकंजमसुशूंदवैकौं
सीताजूकौउतरीयुसबहसषसारहै ५५
स्वागताछंद वांनरेंद्रनवयौंहसिबोलौं
भीनभेउजियकौसत्रुबोलौ श्रागिवारिप
रजनछकरीजू रामचंद्रहसिवांहगहीजू ५६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद हाथुवनवजीवनजोंम्यौ वालिजो रू
वद्धवद्धभांगनिवधाम्यौं नारिकीजिद्दभांत
लईजू सोग्रमेषविनतीविनईजू ५७ छंद
एकवेरसवएकहुनैतो सानजालवलवे
जगनैतौ रामचंद्रजबवांहचलायो ता
लवेधफिरकैकरआयो ५८ विजयछंद
रावनकोपहलोकनिमांपिकै वामनके
वपुमांकसिपायो केसवदाससतापल।
सिंधुनिधरम्यौं सूरहीकोपदपायो रांम
कोसाहुसातहुतालनिभेदकैरामहुतीके
करआयौं कांमकेवानजवासवछेदकै
कांमपैआवनज्यौंजगुगायो ५९ सुग्री
वा नारिकाछंद यहअद्भुतकर्मनकौरपैहाइ
सरसिद्धप्रसिद्धनिमैंजमकोइ निकसीम
नतेंसिगरीउविनाइ जमसौंप्रभुपायौंम
हासुखदाइ ६० लक्ष्मन सोरठा जिनके
नांमविलास सकललोकभेदनकहो ६१।
श्रीरामः नारकाछंद प्रतिसंगाजवांनर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ कीलछुताई अपराधविनोद्रुपकौं त्रवराई
५३ हूनिवालीहंदेउतमेह्नेन्टपासिक्का अवहैक
53 छुमोमद्रुयेसीयेरक्का ६२ इतिश्रीइंदजीत
विरचतायांमन्सकललोकवलोचुनचा
कोरचिंतामणौश्रीरामचंद्रकायांसु
ग्रीववाँनुग्रहूंनकरननामद्वादसप्रकासः ११
छंद रविभुववालसौंहोतजउ रघुनाथु
भयेमनमोंकाछूप सरपकहूसोउरामित्र
कोम नवधूंमगिसौकहिरांमरोम १
छंद कछुचेतभयेजिहूवलनिधान रघुना
थुविलोक्योंहाप्यवांन देनचीरजदासुभ
स्यामगात मनिमालहियेअरुविसला
त २ वालिउवाच पद्धरीयाछंद जगआ
दिमध्यअवसानपक जगमोहनहैवसुपरि
अनेक तमसदासहुसवकोंसमान किह
हेतहूसोकहनोंनिधान ३ श्रीरामछंदह
निकासवसानिउदिवलनिधान मैंसरनागत
हितहरेप्रोन यहूसोहैलैकछुओंरनाथ तम
हैहैमवसंसारपार ४ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद रत्तुराजरंकनैराजकीन जनराजवि
रत्नश्रेणादहिदीन नवकिं: किंपानाराससमे
नः सुग्रीव गयेसुपननिकेन ५ दोहरा कि
सौरपतिसुग्रीवहनिवालवलीरनधीरु:
गयेसुशावनसुदसौंलछमनश्रीरघुवीरु ६
त्रिभंगीछंद देष्यौसुभगिरवरसकलसो
भयरुहलवरनवद्रुफलनिफवैं संगरिछ
सुयलिकेसरकेगननमनहूंथरनसुग्रीवपवैं
संगसिवाविराजेंगजमुखगाजैपरभनवोलैं
चित्रहवैं: सिरुभवेंदकुपरुपरमदिगव
रुमानद्रुहरुग्रहिराजपवैं: तोमरछंद
सिससौंलसैंगगपार वनमालज्यौंसुरवार
श्रीहिराजसौरहिकाल वहुसीसमैंमनिमा
ल ८ स्वागताछंद चंदमंदइनिवासरदेष्यौ
भूमहीनधुवपालविसेष्यौ मित्रदषियरु
सोहनहेत्यौं राजसाजविनसीनहिहैज्यौं ४
दोहरा मननीयतिविनदीनपतिविजयति
नीयतिमेड चंदविनाज्यौंजामिनी ज्यौंजा

रा
५४

मनिविनुबेरु ८ स्वागताछंदु देषिरांम
बरषारितुआई रोंमरोंमबहुधादुषदाई
आसपासतमकीछविछाई रातिद्यौस
कछुजांननजाई ११ छंदु मंदमंदधुनि
सौंघनगाजै तूरतारजनुआवझबाजैं ।
ठौरठौरचपलाचमकैंयौं इंद्रलोकतिया
नाचतिहैंज्यौं १२ मोटकछंदु सोहैंघ
नस्यामलघोरघनौं मोहैंतिनमैंबग
पांतिमनौं संषावलिपीबहुधाजलसौं
मांनौंतिनिकौंउगलैबलसौं सोभाअ
तिसरासनमै नौंनांदुतिदीसतिहैघ
नमैं रत्नावलसीदिवद्वारभनौ वर्षाग
मबंधियदेवमनौ १३ छंदु घनघोरघनैं
दसहूंदिसछाये मघवाजनुसूरजकौ
चढ़िआये अपराधविनांछिवकेतनताये
तिनपीडरपीडतह्वैउडिधायें १४ छंदु अ
तिगाजतवाजतदुंदभीमांनौं निरघात
सबैपविपातवषांनौं धनुहैयहगौरमदा

इननीहीसरगालवैहैजलधारहयांही ५
छंद भटचाटकदाउरुमोरनतोलैं चप
लाचमकैनफिरैषगुपोलै उतिवेननि
कौंविपदावहकीनीधरनीकहंचेदवधूग
हिंदीनी १६ छंद नउनीग्रहश्रुतिबीस
रकीसी उरमैंग्रहचंद्रभामग्रदीसी वरन
सनैंकिलकौंकिलकाली सवज्योनन
हैमानिमांग्रहिमाली १७ छंद अभिसार
नीसीसमफौंपरनारी सजमारगमेट
नकौंअधिकारी मानिलोभमहामदमो
दछाईहै दिजराजसमिवयदोषमईहै १८
दोहरा वर्ननकेसबसकलविविधमगा
फनमरुह ऊघरउमेवाजौंभईसंनति
निर्फलदेह १९ चंदकलाछंद कलहं
साकलानिधिषंजनकंजनहंदिनकेस
वदेषिजिप गनिश्रोननलोचनपाइन
केमुख…कसेमनमौंनालिप इहका
लकरालनिसोभसवैहटकैवरषानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० तहरीकिऐं अवयौं विन आनप्रियारहिहैं
५५ कहिकैं नहिवैंअवलंबहिय २० दोहरा
वीतेंबरषाकालज्यौं आईसरदसुजाति ग
55 यें अपंरीहीनज्यौं चारुचांदनीराति २१
मोटकछंद दंतावलीकेंदसमौंनगनैं वं
दाननकें नलचौरमनैं भौंरपंछषंजननैं न
वनैं राजीवनिज्यौं पदमांनमनैं २२ छंद
हरावलीनीरजंहीनरमैं हेलीनपयोधरअं
बरमैं पारीरजन्हाईहअंगपरैं हेलीगति
केसवचित्तहरैं २३ छंद श्रीनारदकीर
नदरसैमतिसीलायैनमताश्रपकीरतसी
मानैंपतिदेवनिकीमतिकौं सन्मांनगकी
सनुकैगतिकौं २४ रामजीदोहरा लछि
मनदीसौहईसीआईसरदसुजान मनौंज
गावनकौं हमैंबीतेंबरषाराति २५ मरहठा
छंद सुग्रीवसचानौअसडतिरानीकेसवआ
रधुहरनप आकासविलासीसरमकासीत
नंहीवौंनरआऐं दिसदिसअवगाहनसीत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रिं चाहन हूधाप हूधा पदय नलनील विछप
नि अंगद के संग दछन दिस कौं विदा भय २९
दोहरा नृप विक्रम विवसाइजु न साधु समुक
रघुनाथु बल अनंत हनुवंत के सुंदरी दीनी हा
थु २७ हीराछंद चंडवरन छंद उपरांति मंग
ग गगन धांवहीं दछन हू दछन दिस लछिन
हीं पावहीं धीरधयरन वीर वरन सिंधु तट
सभा तहीं नाम धरम धाम पर मुरा रामकर म
गावहीं २८ अंगद अरु कलाछंद सिया
न पाइ अवधि विनासी होइ सबै सागर तट
वासी जो वरमै जे सकति अनंता मोहि न छा
इ जनक नि हंता २९ हनूमान अंगद रछा
रघुपति कीनी सोधन सीता जल थल ली
नी आरस छाडै कि तउ अरु आनो होइ किन
हीं जिन तिष मोंन हं ३० अंगद कवित जीर
नजरा सुगीधु पंषपक जिर ये करा वन वि
रथ कि अैसो सहीं नि ज मान हां ति हनेरहं नवं
न वलवंत नरहू पंच मेन दीनेहू ते मन कछ

घ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा कनरूपजौंनि ॥ आरतउकारतिंहीबारबार
५९ रामरामलीनींनकिंशरनमसीताअतिभीत
56 मौंनि ॥ ३० ॥ द्विजराजप्रियकाजनउकारला
गैभोगवैनरकचोरचोरकेअभयदौंनि ॥ ३१ ॥
दोहरा ॥ मुनिसंपातिसपक्षह्वैरामचरितसुष
दाइ सीतालंकामौकहैषगपतिदैवताइ ३१
कवित्त ॥ हरिकेसौबाहूउकिविपकेसौहृदू
हैमुलीकसीलिषजननपौहनकेअंगकौं
तेजकैगुनिपौनुरामसुद्राकौविवाउकियौं
लक्षमनकौकूदौबानुरावननिसंककौगि
रगजगाजतेउऔनौकिउवनेअलसीतामदपे
कजसदाकनंकरंककौ ॥ हवाइ पेसीकूदौके
सौदासप्रासमौनमैकमैनकैसौगोलाह्वैमौं
नचलैपालंककौं ॥ ३४ ॥ दोहरा ॥ मैनाकनाक
पतिसत्रुकौउदितजोंनिवैलवंग ॥ अंतरीक्षह्वै
लक्षमदक्षककपौहूंनवंत ॥ ३५ ॥ तारकाकेउ
ककुगातिगयेंकरिदंसदसासौ ॥ सुरमांफच
लेवैनराजविलासौ ॥ जवहीहूंनवंतचलेनजोम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

का मोरगरोकरहीत्रिपलेका ३५ छंद
लंकाउवाच कहिमोहिडलंघचले तुमकोहो
ग्रतिसुछमरूपधरैमनमोहो पठयाकिसुका
सनकौनचलेहो सुरहोकिधौंकोउहरेसम
लेहो ३६ हमवोंनरहैरघुनाथपठाये तिन
नरुनीग्रवलोकनिग्राये हतिमोहिमहोंम
तिभीतरजैजैतरुणीरिहिहूतेंकवतेसुधपे
सै ३७ लंकानामरमछंद तुममोरहोपधु
रपैटनयेहो हठकौनकरौघरहोफिरनेहो
हेनवंतहटीवहपापरमोरी तुजदेहमरेत
वंहीवरनोरी ३८ लंका छंद पंनदपुरीहें
गौवनलौनी वहविपमापनकेरसभीनी च
तरोंनतुकौंचितचिंतुकीनौं वहकरुना
करमोकहंदीनौं ३९ छंद जबदसकंधुसिया
हरिलेहे हवहुंनवंतविलोकनजैहे जबवह
तोहिहनेहनसंका तबयहहोइविभीषन
लंका ४० छंद चलननलगेपाजवंहीनवकी
नै मनकसरीरहिंमावकदीनै यहकहिंजा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा. तुमईवहुनारी सवनगरीहूंनवेंननिहारी ४१
५८ छंद तहहरीगोंवनसोवनतपायौ सुनिम
यपलकाकीछविकायौ नहूंनकनीवछ
भांतनिगावैं ४२ छंद मनकाचितापर
मौंनहूंसोहै चहूंदिसपेतनवघूनिविमोहैं
नहैंजहैंजाहिनहूंडुरुनौं सियविउहै सि
गरौंउरहनौ ४३ भुजंगप्रयातछंद छंद
कहूंकिंनरीकिंनरीलैवजावैं सुरीआसु
रीवांसुरीगितगावैं कहूंयछनीयछि
नीकोंपढावैं नरीकेंनकापनगीकोंन
चावैं ४४ छंद पिपपेकहूंलागहूंपकमा
ला वनीपकवालानचैंविचुसाला क
हूंकोकलाकोककोकारिकाकों पढा
वैंसुवालैहुकोसारिकाकौं ४५ छंद
फिरदेषकेंराजसालासभाकौं रहेरीफकै
वाटकाकोप्रभाकों फिरेवोरवौहूंचिनैंसु
डुगीता विलोकीभलैंसिधुपामूलसीता ४६
छंद परैपकवैंनीमिलीमैलसारी सवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीमनैं एकसोकाधिकारी सदारोमनो
मेरमैं दीनवोनी वहेग्ररहे राखसोदुःख
दांनी ५७ छंद प्रसीद्धसी चित्तचिंता
निर्मानै कियौंजीनदंतावलीमैवषांनै
कियौहेरकैराहूनारीनलीनी कलाचंद
कीचारूपीयूषभीनी ५८ छंद कियौंजी
वकीजोतमायनिलीनो जुविद्यानिकेम
ध्यविद्यानवीनी मनोंसेवराहीनमेंकाम
वामा इन्हूंवंतमेमेलदीरामरामा ५९ न
हांदेवदेवीदसथीवध्यायो सुमौदेवसी
नामहंडष्युपायो सवैग्रंथलैग्रंगहीमैंड
रावै स्रुयौंदष्टकैस्पष्टपारान्हूवावै ६०
रावनउवाच सुमोदेवमोसोकहू छिद्रदी
जै इतोसोदुतोरामकामैनकीजै वसैदं
उकारामदेषनकोई जुदेषमहांवैवरीहो
इसोइ ६१ छंद कानकीकुदांताककेमा
हिचारे हिन्हूनगंभीरनहेकोसदारे ध्रना
येहन्योमैंप्रनाथ्याउसारी वसैचित्तदंडी
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रा॰ जटीमुंडधारी ५२ छंद तुम्हे देवह्लेषरहितू
५८ तुम्हें मानें उदासीनु तोसों सबै नाहि मानें उ
58 दासीनु तोसों सबै नाहि जानें महा निर्गुनी
नों उनाको न लीजे सदादास मैं हौं कृपा कीं
कीजे ५३ छंद तुम्हे देव द्वेषरहितू नाहि
मानें उदासीनु तोसों सबै नाहि जानें महा
निर्गुनीनों उनाको न लीजे सदादास मे
हौं कृपा कीजो करीजे ५३ छंद ग्रदेवीनिंद
वीनकी ह्लेहरानी करै सेव वानी महानी
स्रानी लिखें किन्नरी गीत गावें सुकेसीन
बैठे बसीमों नु पावें ५४ सीताजू माला
नी छंद निवोली विशुदे सिया गंभीर वा
नी दसशुत्र किह कोन तेकोन की राजधा
नी दसरथ सुत दोषी सुद्ध ज्ञान भासे नि
सा चर पापी नंबलों नसों मूलनासे ५५
छंद प्रतिन तु पंडुरेषा नेकनाषी नजा
की पलषगसरधाराकों सहे निकृ ताकी
विकरन वैन हरे भक्त कों बाजनीवै सि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वसिरमसिश्री कौतुहकेसमकीवैं ५६
छंद उदउदिमदस्नातेभागिनैलौंश्रभागे
मनवचनविसर्थ्यौमपंज्जौलौंनलागे विक
लमकलटे,छोश्रामहरीनाहहैनेरी ऽ निपट
स्तनकतोकौरोषमारेनमेरो ५७ दोहा
श्रवपदईहेमासकोकस्तोगांसनिवोल न्यौ
समुकैसमुजाइपैंजगानिकुरानितउधो
ल ५८ चामरछंद देषिदेषिकैश्रसोगुपा
लपुत्रकाकस्तो देषिकोहियागिनः ज्ञा
श्रागि श्रंगकोंवस्तो टौरमाइपैनहतनउ
रिसुहकादई श्रासपासदेषिकेउवाइसुह
कालई ५९ तोमरछंद कछुलगीसीरी
हाथ यहस्यागिकैसोनाथ यहकलोल
खितबनाहि मागिजदनसुंदरीश्राहि ६०
छंद नववौविदेषोंनोंउ मनयहौसंश्र
मभाउ श्रावालनेरघुनाथ यहपरीश्रप
नेहाथ ६१। विकुरीहकोनउपाइ कहिंस्यौ
निस्यौंरघुहंतु हपिलहैकौनउपाउ श्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰
५४

वकाहिरुकनजाउ ९२ चहुँदिसिचितैसकृा
म ग्रवलोकिःपोग्राकासा तरुसाखवे
ठौनीर नवपल्लवावानरुतनौरी ९३ सीता
डवाचे तवकलाकोतन्नाग्रारि सतध्यवेर
मोतनुचारि कैजच्चपक्कुविरूप दूसकै
तुवाँनरूप ९४ छंद कारखायमोनभे
तु ग्रतिचिउपज नषेउ कालिबगवोनर
पाय ननतोहिदेहौंसाप ९५ वानरप
डेरियाछंद करजोरकसौवाडुरुज त्रिय
जननिजोंनरघुनाथपटत रघुनाथकोन
दसरथुनंद रमरथुकोनग्रजतेनयचेउ ९६
छंद किहिंकारणायटयेरहतनिकेतनि
जलैंनदैनसंदेसहेत गुनरूपसीलसो
भासभाउ कहुरघुपतिकोलछतुवनाउ ९७
वानरछंद ग्रतिजदपि हमिचानंदमन्क
ग्रतिसेवकग्रतिहौ हरसलक ग्रतिग्रवजन
नदपिमप्रुभावनानिदान ९८ छंद मोना
गायनश्रीउरवंसतिसौरघुपतिउरकछुर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निलसंत जिगजितनेहैंसवभूमहरूप स
रग्रसरसमांननरांमरूप ६९ सीताजूनि
सपालछेद मोहियरनीनकिहिभांतउ
पजैनई पीनकहियौंजनरबांनरगनिकौं
भई बानसबबर्नैपरनीनकपिसोरई
प्र" ग्रन्हबाइउरलाइहदरीलई ७० दो
हरा प्रभुवर्षिहियहूषकछुसीताहष
दहभाउ निरषनिरषछयुमुदकहिवर्नै
नहैवहभाउ ७१ सीताछेद यहहरकि
रणानमउःषहारि ससिकलाकिधौंउ
रसीनकारि कालिकीरगनिघुभमसहि
ननाम किधौंराजसिरीयहनजीरांम ७२
छेड किधौंनारायणउरसमलसंतह
भग्रेकनडपरष्टीवसंत बरविधाष्टीग्रा
नेदरांन नडुग्रणापरमनसिवामांन ७३
छेड नड्रमांयांग्रबरसाहिनदेषि किधौं
पक्षीनिभ्रैरादंपिलेष पिग्रमनिहारनी
सीनिहारि श्रीरामोजयउद्धारकारि ७४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
६०

छंद प्रियपदईमनौं सषी सषी सजोंन ज
गभूषनकौ भूषननिहोंन निज्जयाई हमक
हें सीषदैन यह्कि पौं हमारे मरमलैन ७५
दोहरा सषदामिषदाग्रदीदाजू सदारस
दानार रामचंद्रकी मुद्रकाकिपौं परमगुन
नार ७६ छंद वहवनीसहजाप्रयातमग
नहारपमान जगुमारगुदरसावनीसरज
किरनसमान ७७ छंद कहिकुशलमुद्र
केरामगात सनलछमनसहितसमानता
नयरउनघरेरनतुरवेत किहकारनकहि
हनवंत [illegible] त ७८ हनूमान तमसछंतक
हिमुद्रकेमौंनहोतहहनाम केकनकीपद
वीदईपाकहनमविश्राम ७९ ईडकछंद
दीरघदरीनवसैंकेसौदासकेसरज्यौंकेसर
कौदेषवनकरीज्यौंकपतहैं वासरकीसंप
तिउलूकज्यौंनचितवनचकवाज्यौंचंद्रचित
वैंगनौचपतहैं केकाहनव्यालज्यौंविलाइ
जातघनस्यामघंननिकीघोरजीनवासेज्यौं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जरतहै भौरजैसें भवनवनजो गीजैांजगत
रैंनसापककज्यौंरांमुनोमुतेरोईजपतहै १०
तेटरीछंद राजपुत्र रकवातकहैंहुनि रा
मचंद्रमनमांफकहोगुन रानिदीरहेजेमरा
जजनीजउ जानतनाहितेंउजांनतकेमेंउ ११
दोहरा दुषदेषेंसुषहोइगोउ: षनसु: षविहो
न जैसेंसतपसीतपनयेहोतपरमपदलीन १२
दोहरा वरषावैभवदेषकेदेषीसरदसकोम
जैसेंरेंनमेंकालभटभेंटभेंटजेमवाम १३ उ:
षदेषिकेदेषिहोनममुषआनंदकेउ तपन
तापतपिघोंसनिसजैंसेंसीतलचंदु १४ छं
द अपनीदसाकहाकहोंदीपदसासीदेह
जरतिजातवासरनिसाकेसवसहितसनेह १५
छंद हगतिसकेसीहनैंनिहनिहमुछ
हेरतसमग्रोने दरसावैगोवेगहीतमकोस
रामजजैंन १६ चर्चरीछंद कछुजनतिदे
हमतीतजैसें रामचंद्रहिम्रावई समसीस
कीमनिदईयहकहिसजससनवजगगावई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ सबकालदैहैग्रमस्थतिग्रहग्रमरजपप
९१ उपाश्यौ हनुमजतेंरघुनाथकौतमप
रमभक्तकहास्रो ९ छंद करजोरमवि
पगनोरिउपवनकोरक्षिकरमारियो पु
नजंउमालीमिवसहनअरुपंचमिवसुवारि
यो रनमारिअक्षजमारिवद्धविपिरंइजित
सैंउद्दकै अतिवलसहनुपमोनअोनहवस
भौमनगहडकै १० इतिश्रीरघुनीतविर
चितायांमनसकललोकलोचनचकोर
चिंतामणिश्रीरामचंद्रकायांहनुमान
बंधनंनामत्रयोदसः प्रकास १३ विज
यछंद रेकपिकोनतूं अक्षकोघातकु
हनवलीरघुनंदनकौ कोरघुनंदनरवि
सराषाहूषनदूषनउभूषनउभूषनभूको
हागरकैसंतनलोगैंसोगोपउकाज्ञ
कहासियचोरनोदेषौं कैसंवपायौस
हंदरनेरी कुंडगसोवनपानमलेषौ १
रवनचौमरंछंद कोरिकोरिफोरिकोरि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नाजनेनमारिये काटिकाटिफांटिमाह
कांटिवांटिडारियें षालिषेंचषेंचराउभुंजदं
जथाछ्रे पोतिरांगिभूउहें उलेंडगाइजाद्रे २
विभीषनोवाच हनुमारियेनरानिराजिक्रो
उदीजिइ मेघनिचराक्षकेसभेगुडं उदीजई
पक्रुरेक्रुमारिकैंावउोकलंकलीजई हंद
हाषिगोकहांमहांसमुद्रबीजई ३ कुंडः
हलनेलवोरिवोरिजोरिजोरिवासरो ले
श्रपारपालडेंनहेनहनसैंकसी हेक्षपोंन
सनकीसवारिवारिदीजहीं ग्रंगकोंचरा
इकैद्विउाइजानभैनहीं ४ चंचरीछंद
धामधामनिग्रागकींवञ्जालमालविरा
जहीं धोनकीजकोरतेंकफरीफरोषें
निवाजहीं वाजिवारनसारिकाहकमो
रजोरनिभाजहीं कुद्रज्यों विपदाह्रिश्राव
निकाउमाननलाजहीं ५ भुजंगप्रयात
छंद जरीग्रमज्वालाश्ररावेतहैं योंसनें

रा॰ कालकेमेचंसंध्यासमैंज्यौं लगीज्वालयुं
९२ मावलीनीलरागैं मनौस्वर्नकीकिंकनी
नागसाजैं ६ छंद लसैंपीतक्षौमफौ
ज्वालजाँनौ फबैवोफनीलंकवक्षोज
माँनौ जैरैंनरूस्नीरीचर्धौचित्रसारी म
नैंचित्रकामैंमनौंसत्नधारी ७ छंद कहूं
रैनचारीगहूं जोतगाफैं मनौंईसरोषा
ग्नमैंकामजाफें कहूंकामनीज्वालमा
लानिभौरें नजैंलालसारीअलंकारको
रैः ८ छंद कहूंभौंनरानेरचेहूंमक्षाहीं
ससीसूरमानौंलसैंगमाहीं जैरसत्त
मालामिलीगंधमाला मलैज्वरमानौंल
गीदावज्वाला ९ छंद चलीभागिचौ
हूंदिसाराजधांनी मिलीज्वालमालाफि
रैंडः षरांनी मनौंईसवाणावलीलाल
लौले सवैदैत्यजायानिकेसंगगौले १०
विजयछंद लंकलागाइदईहैनवंतविना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नवबेश्रातिउच्चरुषीहै पारपरटैउरवरैवड़
ग्रामनिरानीररैपानीपानीउषीहै कंचन
कोपहिलैपाउररुरपकोनिपमेंपरसैतिस
षीहै गेगारुजारुरुषीगनिकैसोगिगमि
लीमानो आपरउषीहै ॥ दोहरा हैंनवंत
लगाईलंकरवववचेविभीषनधाम सैांध
रुनोदयमैरमैपंकजनहरवजाम १२ सेज
ताकेउ हैंनवंतलंकलगाइकै घनरक्ष
सिंधुकाइकै हुमदेषसीतहिपापरै पनि
पाइ आनंदजीभरेः १३ छंद रघुनाथपे
जवंहीगए उटखेकलावनकौंभये स
भुमैंकहाकरुनीकरीसिरपाइकीपं
नहींपरी १४ दोहरा चिंतामनिसीमन
दईरघुपतिकरहैनवंत सीताजूकोम
लुरंगपौंजनुअनुरागअनंत १५ दोधक
छंद श्रीरघुनाथजहींमनदेषी जीमहि
भागदसासमलेषी रूलउद्योमतुम्मों
निधवाई मानुहंसंपतीउमहाई १६ ना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा मरमछंद मतिहोइनहीमनुश्राहिप्रिया
९३ कौ उरमैमगटैततछेमुद्रियाकौ सजुभा
63 गिगयौजहत्तौतमछायौ श्रवमेंश्रुपनेम
नकौंमनुपायौ १७ छंद दसमैंहमकौंवर
हूंदससावै उरलागतश्रौनिवस्याइलगा
वै वोलेनहीजकछुचुपसाधी जियजौंन
तहैहमकौंश्रपराधी १८ हनूमानउवाच
छंद कछुसीयदसाकहिमोहिनश्रावै व
रकाजउवातसुनेउषपावै सहसोपनिवा
सरुवासुरलागै नैनचाउनहीमनयोनवि
यागै १९ छंद पतिश्रगनिकेसंमहीदिन
नासैनिसहौमिलवाफतदीरउसासैं नि
सनेकहूंनीदनश्रावतजौनै रविकीछवि
सौंश्रपरातवषानैं २० कवित्त भौनसौंजौं
भवतिरहतवनवीथ्यकौंनिहंससनीज्यौंगछु
लमनालकावहतहै पीउपीउरटनरह
तचितचातकीज्यौं चंदुचितेचातकी
ज्यौंचुपकैरहतहैं हरनीज्यौं ॥

हैं तिनके सरके कोन निहूं के काहूनि
आलीसौं बिलांन हूं कहूं न है सनद्वंद
पतिरांम बिरहूनि हारेये सी सूरतिन सी
ताजू की हूरतनगरहूनै है २१ सीताजू कों
मेरे सम्र अभिम्यान दोहरा चीन्ह सिंचम
हलाद की वेद जिगावत गाथ गये ग्रास
हौ दिजु मा सहौ रूखी है है नाथ २२ कउ
श्राम कनक उरंग के कहीवान सम्पार
कोनल जरि जाइ जिन सोक समुद्र उपार २२
श्रीराम सोचौ पद्धनाः सुहरिडोनाम प
रहूलीने सबदुःख हरन रहूर दाराहे बांन
रन होइ ज्यम मेरे बांनर सुसम वेली मुख स
रवली श्रवनिज गायहैं साषासृग ना
ही तुप बलन के साषामृग किधौ वेद सा
षामृग के सबु कौं भायहैं साधु हूं न वेनु
बलवंत जग सबत निति गायपक कांम कौं
अनेक करि आयहै २४ हनूमान नोमरके
उ गई मुद्र का लैयार मनि मोहि लाई वार

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा· कहृकहौमैंवलरंक निजमस्तकमारी
६४ लंक २५ छंद श्रुतिहूमोवालकशचलेग
यौवांपितिविमकु जङ्विवकुनोरेंदीन मैंक
ह्रोविक्रमकीन २६ छंद नित्यविजयद
सीपाइ उद्दचेलेश्रीरघुराइ हरिजप्पजप
प्रसेग विद्रुपक्षकेतृपतेग २७ छंद सम
फैंनसुरमकास श्राकासवलितविलास
पुनरिकलक्षनिसेग जत्रजलपगगम
नितरंग २८ सुग्रीवदंडककेउ छंद काहि
केसौदासराजचंद्रमनोरामचंद्रगावरीजव
ह्रिसैनाउचकचलतहै इरनहैभूरभूरोद
सीहूशासमासदिसवरषाज्यौवलहीवा।
लतहै पवगयतेगतरुगिरगिरराजग
जराजमरगराजनिदलतहै जेहतेहै
परपञ्चालपश्रुशाइजातअरहनकैसौपो
नअरुमीहलतहै २९ लक्ष्मनदंडककेउ
भारकेउतारवेकौंअवतारेरामचंद्रकिधो
केसौदासभूरभारतनमवलदल हूटतहैमर

वरगिरैंगिरगिरवरसुषैंसवसरवरसरि
तासकलजल उचकचलजहरिदचक
निदचकतमंचश्रेसमचकतभूजलकेष
लष्यल लचकलचकजातसिषकेश्रसेष
फनभागिगईभोगावतीश्रजलवितल
तल ३०३ नगीनवंड रघुनाषजूहैंनवे
तऊपरसोभिजैनिरुकालजू उदघाद्रि
सोभनस्रंगमानरूस्रराग्रविसालजूस
भंश्रगश्रेगदसगलकेमनलाक्षिनैवद्द
भांनजू जेउसोभमेंदश्रश्रश्रुनचंडगा
जवदातिजू ३१ दोहा वलसागरलंक
मनसहितकपिसागरवैंनधीर जससाग
ररघुनाथजूमैलेसागरतीर ३२ सेनका
विजयवंड भूनविभूषपिउषहूनेविषर
ससरीरुकेपापविपोहै हैकियोंकेसव
कसपकोवहदेवश्रदेनकोमनमोहै संत
हियेकिवसैंहरिसंतनिसोभश्रनंतकहै
कविकारे चंदननीरतरंगनरंगतनानारु

रा· केउकिसागरुसोहै ३३ ·· जकाछेउ
९५ जलजालकालकरालमालतिमिंगलादि
कुसैंवसैं ३रलोहुछोहविमोहहैकोहैस
काम ··········· बहुसंपदाजनमा
निसैंग्रजिपातिकीसमलेषिये कोहमोग
नोग्रहुपाहनोनहीनीरुग्रचवनदेषिये ३४
इतिश्रीइंदजीतविरचितायांसकललो
कलोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामच
न्द्रचंद्रिकायांसागरआगमनंनामच
तुर्दसप्रकासः १४ रावन गीजकाछेउ·
हरपाविलभूतलपालहैसवमेंजभूलजि
जोनीसैं बहमेंजवेदउरोनउत्तममध्यमाध
ममानीसैं करिजैजिकारजग्रादिउत्तमम
ध्यमध्यमजानिसैं ३रमध्यग्रोंनिग्रहतेमें
तिगपतिकाजवषांनिसैं १ स्यागताछे
उ श्राजमोहिकरनैंमकहौहै श्रापमोफ
जिनरोसुगहौहै राजिपर्मकहिजैकवतिका
सैं रामचंद्रनहिजोलगिश्रासैं २ प्रहस्त

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद रांमदेवनमकौंवरुदीनें लोकलोक
सेवासैवसकीने इंद्रजीतसतकौंजयमोहै
रामदेउनमवानरुकोहै ...... छंद
सत्रुपोसभुजजोरनिजोरे कालदंउतमसौं
करजोरे कुंभकनेलघुसोदरुजाकें जैसक
ह्रामनआवनजाके ४ कुंभकर्नेचतुष्पद
छंद जगाउनसवजोननकहीनमांनजकी
जैजोककुमनभावै सी.. तमश्रांनीसीउ
नजोंनी अवकोमेउवतावै जिनवलजगजी
सोसवहअनीसोतसोकहावसाई अतिभू
लगपतवसोउकरतहोजवसिरुधराआ
ई ५ मंदोदरीविजयछंद रांमकीवांमत
आंनीउराइसलंकमैंमीचुकीवेलवईज्र
कौंरवनीतउगेतिनसौं जिनकीपंउवेषन
नाषीगईज्र वीसविसेवलवंतद्धतेईदुनी
दिगकेसवरूपरईज्र सोतिसमामनसंकरा
कोपियसीयसवयंवरवौंनलईज्र ६ अपरं
चछंद वालवलीनवचौपरसोरसकौंव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा. चिरैंतमकौंनिजषोतिहि केसबकीरसमुद्र
९९ हिचौकहिकैसेनबांधिहै सागरप्पोरहि श्री
रघुनाथगुनगैषुसमष्पहदेषिविनांरषहाथि
मचोरीहु ७ इंद्रजीत दोहरा मोकहंआरस
देहुजौत्रिभुवनपालप्रवीन रामसहितसब
जगकरौंनरबानरकरहीन ८ विभीषन
मोटककंद कोईप्रतिकाराजदेषसकै को
ऊंभनिऊंमुहप्याजबकै कोहैइंद्रजीतजभी
रमैहै कोऊंभकनेहथियारुगहै ९ कंद
देषैरघुनाथनभीरगाहै जैसैंतरुपल्लववा
नवैहै जौलौंहरिसिंधुतरैंतरे जौलौसिध
लौकिंनपाइपरै १० कंद जौलौंसिषलैकिं
नपाइपरै नहींअंगदलंकदहै जौलहमधु
मानहवानतनै जौलौनलनीलनटहपरे
जौलौं हनवंतनसिंधुतरे ११ कंद जौलौं
रघुनाथनसीसहरैं जौलौंप्रभुमांनहंपार
परै जौलौनहीं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लछमनकौंनपरै जौलौंसुग्रीवनकौपुभरै
रावन कतलहैंसकेंउ धरिकाजलागता
जिकैउठधायौ धिगतोहिमोहिउरपाव
नआयौं जवरोमनोमुयहबोलउचारयौ सि
रमोंकलातपगलागतमारयौ १३ छंद
तवहारवाउठदेहसम्हारयौ लियैसंग
अंगसमरमोंवुघचारयौ तजिसुंपवतपद
सकैपुउअंगनौ उरिरोमवंदजगतीपतिआ
यौ १४ दोहरा मंत्रनिमाहितविभीषनैं
वाल्हीसोभयकास जवअलिआवतभा
वनौरघुपतिपगघनपास तामरसकेउ
निकटविभीषनआवतजांने कपपतिसौं
तवहीगुररांने रघुपतिसौंउनजाइसुनायें
दसमुषसोदूतसेवहिआयैं १५ श्रीरामो
वाच रलउपवनसवैनमनीके मननहत
लीनैमेंअनहीके तवजविचारपरैसोईकी
जै तहमासुनआंवनदीजै १६ अंगदसंदरी
केउ रावनकौयहसोचेहंसोदरु आपुव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ ९७ लीवलवंतलियें ग्रह राषसवंसहामेहत
नेसब काजकहानिन्मोंहंमसौंग्रव १८
जानवंत षेपविरोधहमेंइनसौंप्रति कौं
मिलहैंनिनसौंहमसौंमानि रावनुकौंन
नस्योंनवहीइन सौंग्रहरीजवहीउहि।
निर्धन १९ नलउवाच चारपटैइनकौम
नलीजै पैसोहीकैसैविदाकरिदीजै रा
षियेजौग्रनिजानियें उनम नाहिंनोमा
रियेछाडिसवैग्रम २० नीलउवाच सा
चैहैंजौपहहैंमरनागन राषीयेंराजी
वलोचनमोमन भीतनराषीयेंनोग्रनि।
पातक होइजु मातपिताहननचानकु २१
हनूमानउवाच जोनैनविभीकषनराष
सौंमराज महलादनारननविसारडप
साज सुग्रीवनीलनलअंगदजोमवंत राजा
धिराजवलिराजसमानसंत २२ दोहरा कह
ननपाइवातसवहेंहनूमानवलवान कलोवि
भीषनवीचहीसवनिसुनाइसमान २३ छं
द दीनदयालकहावनकेसवहैंग्रतिहैं नरसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गस्यौगयौ रांवनकेग्रहगेहमेंराघवदूतन
सौंवरहूंगरिकायौ ज्यौंगजकीप्रहलादकी
रत्तिर्यौंरविभीषनकोजसगायौ आरनबंधु
प्रकारखनोकिंनआरतहैजप्रकारनदायौ २४
छंद केसवआपसदासहौंइः प्रभेदासनि
देषिसकेनउघारे नाकोंभपतिहूंभोननहूं
नमनेहीनहींजिहभांतसम्हारे मेरहीवार
विचारकहाकवहूंनहीकाहूदेषविचारे हू
उनहींमरिमोहिसमुद्रमेंराषनकाहिनराष
नहारे २५ हरिलीलाछंद श्रीरांमचंद्रम्र
निआरतवेनिजांन लोनैंवुलाइसरनागत
सः षटांन लेकेसआउविरजियहूलेकधां
म राजाकहाउजगमौलौंरांमनाम २६ नो
टकछंद जवहीरहुनाथजूबोंनलियौ स
विसेषविसोषनसिंधुहियौं नवहीद्विजरूप
सआरगयौ नलसेनरवैपरमंत्रदयौं २७
दोहरा जेंरूनरहैवानरसिंधुमैंगिरगनडारा
निडारि सववुरखौभरिरामहिरांवनकोंउ
घटानि २८ छंद सवबौंमनिमोननभीज

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ गय जलजोर भई अंगराग मय सुरसागर
९८ मानहुं जडराय सिगरे पट भूषन लुटलय २९
छंद उछलै जल उछ्व प्रकास चवै जलजोर
दिसानि विदिसानि वढै जलसिंधु प्रकास
नदी प्रति कै वढ्भाग मना वनि पापरिकै ३०
छंद प्रति उछल छिकि छिवि कुट छयो पुर
रांवनको जलजोर जयो सवलंक हूं छूत
वलाइ लई नलमां नं ग्राइ जु फाइदई ३१
छंद लगि सेनजहां नहूं सोभग हूं सति
ता वके फेर प्रवाह वहैं पतिदेवनदी रजि दे
खिभली पिन्हके चरकौ जंतु रूट चली ३२
छंद सवसागर नागर सेन रची वरने व
रूपा नल सकसची तिलकावलसी ह
भसी सलसै मनमाल किधौं उरमैं विल
से ३३ नारकछंद उरगें सिवमूरति प्री
पतलीनी सुभसेनके मूल प्रपिहनकी
नी इनकाद सैं परसैं पगजोई नगसागरकें
परपार सहोई ३४ दोहरा सेनमूल सिव
सोभजे केसव परमप्रकास ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सागरजगतजहांजकेकरियाकेसवदास
छंद हकसारनरावनहूतमपठायौ कपि
राजसौंपकसंदेसकहनायौ ग्रपनेवसतेज
रहौतमभाई जेमहूपरलंकलईजनजा
ई ३९ सुग्रीवछंद भगिजेहौकहौनकहे
पलदेषौं जलहैंपहूरचुनाइकुपेषौत
मवालेसमांनसहोदरमेरे हरिहौकुलसौं
तनपीनतिनेरे ४० छंद सवरामचमू
नरिसिंधुहिंग्राई छविरीछनकीपरग्रेवरा
छाई वृहपासहुसारनकौंसवताई फिर
लेकमनोवरषागिनग्राई ४१ किंवरतीदं
रकछंद कुंतललतिननीलभऊटीधंनुष
नैनकुमुदकटाछवानसवलसदाई सुग्री
वसहितताराग्रंगदादिभूषनतिमध्यदेसके
सरीसुगजगतिपाईहै वियहावकुलसव
लछलहिग्रछवलरीछराजसुषीसुषकेसो
दासमाईहै रामचंदजूकीचमूराजश्रीवि
भीषनकीरांवनकीमीचदरीकूचकियेग्रा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा रैहौ २४ ।।
९९ वनसुभासोमलतेंतुमेंदलपरसोभिये
मानंद्रसमरगजनकालिंदगिराविमोहिये
राघवसरलाघवगतिकचमुकटयोंरुये हे
मसबलक्षेमसहितमोंनहूंउडिकैगये २५
छंदलजतिषलनजसथलभजमवनमैंग
यौ लछमनमथुनछनगिरवछनपरसो
भयौ लंकनिरषग्रकटूरषमरमसकल
लजीललौ जाइसमतिरोवनपेग्रेगदसे
यौंकलौं ५० वहारूपकछंद रामचंद्रनू
कहैंजसवनेलंकदेषिदेषि तछवोनगदिवौ
रवीरचारिहूंविसेषि मंजुकंजगंधलुभौ
भीरसीविसाल केसौदासग्रासपासुसो
भिपमनैंमराल जाग्रकोटलोहकोरिह
नैकोपग्रायपास देवकीपुरीछिरीकिपर्व
तारिकेविलास वीचवीचहैकपीसवीच
विछजाल लंकंकनकागसेकिपीतनी
लकंटमाल ५१

69

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांमनसकलला
कलोचनचकोरश्रीरामचंद्रकायालेका
मनेनामपंचदसः १५ प्रकास दोहरा मं
गदकूदनगयेनहाँश्रासनगतिलंकेस म
नैंमधुमकरहाटपर सोभतिसोमलवे
स १ .... ।।राजछंद पढैंविरंच
मैंनवेदजीवसोउछंदरे कुवेरवेरकेक
हैनजक भीरमेंउरेदिनेसजारहरवेदना
सिलादि,संगहो नवोलचंदमंदबुद्धिइंद्रकी
सभानही २ तोमरछंद श्रंगदपोहनवा
नी चितमहाँतिसयोनी टेलकैलोगश्रनैसे
जारसंभामहिंवैसे ३ पद्धत्तचंचरीछंद
कौनहौपठयेसहकौनत्यां तुम्हैंकहहंका
मुहैं जातिकौननतेंकनारकहनश्रंगदनो
महैं कौंनहौवहकोपिकैहमदेहमछसदै
दहो लंकजारिसंघारिश्रक्षगयोसुवानह
याकही ५ मरहटाछंद कौनभांतरहेतु
होनमतजनमेमकजानियोंगः लंकजारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰
८॰
70

गयौ जंबवान ककौ तनो भुवषां निये मेघना
दजु बांधि कै वहु मारियो वज्रपाननै लोक
लाज डरयो रहै ग्रहि जो नियें न कहे भ्रवे ५
गावन कंद कौन के सुत वाल के वह कौत
वालि न जो निये कोष चाप तजि मुज सागा
रसा सन्हौं तषषां नियें है कहो वर वीरु
अंगद देवलोक वताइयो कौं गयो रघुना
थवा न विमान वैठसि पाइयो ७ छंद॰
लंक नाइक को बिभीषणु देव ह षन कौं द
है मोहि जीवन हो इकौ जगती हि जीत
नकौ कहो मोहि को जगमारि हैं उछव
नेरी जो निये कौन वान कहो इपटे ई वीरवे
गव षां नियें ७ श्री अंगद विषय छंद श्री
रघुनाथु को वांन सम्भा यो हो पकोन के सब
काहु हयो जू सागर को मद्य फारि विहार
त्रिकूट को दह विहार ककयो जू सीय निहा
रि संचारि कै रक्कस लोक भस्म को कवनी हि
दयो जू अक्षकुमार हि मारि कै लंक हि जो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिकैनीकेंहीज्ञानभयोजू ९ गंगोदकछंद
रामराजानकेराजआये रहौ धामतेरेमहामा
राजागेभवै देवमंदोदरीकेंभकतीरहैमित्र
मंत्रीज्ञेतेहत्रुदेषोसवै रामिजोजानतिकोवं
सकोंसाधिजोलोकमैंलोकपलोककौं धा
निकैपापपरोदेहलेकोहलेधामहरीईसहीता
ह्लिलेवोककों १० रावनछंद लोकलोकेस
सोंसोत्रब्रह्माकौरैआपनीआपनीसीवंसोसा
रेहैं चारिवाहूंथपें विष्णुरक्षाकरैवाजसांची
यहैवेदवानीकहै ताहिभ्रमंगहीदेवदेवससों
विष्णुब्रह्मादिरेहदुजसंचरै ताहिहौंक्काटि
कैपाइकाकेपरैंआजसंसारुतोपाइमेरेप
रे ॥ मंदिराछंद रामकोकामकहारिसुजी
ताहिकोंज्ञकवेरिसुजीसोकहा बालवलीछ
लसों रघुनंदनगईसलोहिजंदीनमहा दीन
सुरवोंछिनतकद्रीरहेतेविनुमांननिहैहयराज
कियैं हैहयकोंतवहै विसरोजिनषेलीन
हैतनमंसाधलियें ११ अंगदछंद सिंधनसोउ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ नकेवंदनतमयेपंगुरेषगईननरी वांधोउवां
७१ पनसोनवंध्यौउनवारपवांधिकेवाटकरी अजहूंर
ष्ननाथुअनापकीवाततमेंदसकेपनजौंनिपरी ने
लनिनलनिशंखजरीनजरीनजिरीजरिलंकजरा
इजरी १३ .... काढिदियौरमहीवंद
रावहरस्वकीआगिनिलंकजरी भीरमेंअकु
भर्त्यौचपिवालकुवारदेहीजाइयमसलकरी ना
लविपेअनसिंपुवध्यौयहचेटकविक्रमकौनकि
यौ वांनरकोनरकोवलुकारनमेंहरनाइकुजी
नलियौ १४ अंगदबुकेउ चेटकसोयंडभयएक
सौपभुरावरकोइननौंवलुहै वांनसमेत्तिरहे
मविकेनंमजामहंपैननम्योपलुहै वांगुह
कौनवलीवलिकोसुतवैवलिबांवनवांपिलि
प वेइसतेनोजिनकीचिरुचेरनिनाचनकाइके
काढिदिए १५ रावन विजयबके नीलसवे
नहूंतुउनकेनलंघ्यौतवसेवेकपिपुंजनिहारे आट
हेआटदिसवलहै अपनी पडलेपिनजालगि
मारे नोसमसुनहिंजाइकैवालअकुनिको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पदवी शुभ पावे अंगद संग लै मेरो सबै दल
आजु ही क्यों न हनै बपु वारे १८ अंगद दोहरा
रनको बिलशुन मांनियै हनि रावन पल आशु
मावक पांयौं नस भु जोग्र साधु जो साधु १०
रावन उ अरिसिंधु अंगद लाज न कछु गहै जन कवा
नकवान कहा कहै महिन लछमन राम
हि संचु यौं सकल वांनरराज जन्म कैं करौ १९
अंगद निसपानक छंद सत्रु सब मित्र ह्न मारि
नपरि हिवां निज़ें हनविपन्न तकवहने उ आ
निश्चै श्राशुभ देषि अभिलाष सब भाषहू
राषि भुजसीस नव अंगर कहूं राषहू २० रावन
तेद्धकला छंद मेरी बड़ी भूल कहा कहौं रे ते
रोक लौं हनत सबै मरैं रे बेतो सबै मोहि बासो
त्रमारो ज्यौं करै तो हिदैवे न्नजारौ २१ अं
गद उपेंद्रवज्रा छंद नराभुज है रघुनाथ पावैं
गे अमेष माधो कर दि भूम परंगे त्रिषा मिवा
ल्यो न गहै जति हारी फिरैं चहूं वोर निहार
विहारी २२ रावन भुजंगप्रयात छंद मरौं मै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ७२ तदासीसदापाँवधोवे मतीहानहैकेकपास
रसोवै कुमानापुलीयेंरहैरकुजाको करै
गोकहासत्रुसुग्रीवताको २३ कंठु सकामें
चमालीसिषीपाककारी कौरेकोनिकाली
महादेंडधारी घटैमेंवडलाँदारजाकें कहा
वाउरेसत्रुसुग्रीवताको २४ अंगदविजयकं
ठ येरचढौगलनाचढौपालकपालिकहै
चाढिमोहिमेंचढौरे चौकवढोचित्रसारीव
ढोगजवाजिचढौगढगढेवचढौरे व्योम
विमाँनचढौडूरहैकहिकेसवसोकवहें
नमचढौरे चेतनजनाहीरहेचाढिविनासवा
रुवधुफविताहीचढौरे २५ रावनभुजं
गमयानकंठ निकासोजमेंमालियाना
मजाकौ दियोकाढिकेमैंकहाजासवना
कौ लियेंवाँनगालीकहैवातजोसो सके
मैंजरैंरोमसंग्राममेमोसों २६ अंगदकंठ हा
थीनसाथीनघोरेनचोरेनगोंडनहाउकोंदां
उविलैहै नावनमानतनषुवतमि ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

त्र नवंधुन श्रेणवोसेगुन रैहै केसवकोमको
मकोरामुविसारनगैरून कोमुनकोमहिंश
है चेहरे चेतश्रमोचिंताजश्रेनकवोकश्रके
लोईजैहै २७ रावनउवाच उरैगाश्रविश्रना
थैंजभावे परदुखक्षोउँ परसीहिलाजे पर
झोरूजायेनहोईरतीको ह्वैकेसैलरैभेडकी
नेजतीको २८ दोहरा उरैगाश्रविश्र छंद दो
हरा गेंदकसोमेंषालहूँहीहूरिगिरकेसवदा
स सीसवध्वेंसेगा पनेंकमलसहासभकास २५
श्रेणदिविजपछंड जेसोतमकहनउदायोप
कुगिरवनश्रेसेकोरकपनकेबालकउदावहै
कारेजक रनसीसकारचेनेरैबोबभगरके
घेलेकाहाभाइपटुपावहै जीसेजसरैहै
रनहापरिषनारिकिहीसमुफिकहैंमदिज
नानेसमुकावहीगहैरामपारसमुपारके
नपीतपसीनाजकोंदेश्रदेवडंदभीवजावा
ही ३० रावनःचंदकलाछंड नपीजपी
विप्रनिकिमहीसेवरैं श्रदेवदेवीसवदेवहैं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा हरौं सीतानंदहौंयहनें सुजीमेपरौं अमों
७३ रषीभ्रमयवोनरीहौंकरौं ३० अंगदछंद:
पौंहनतेंयतनींकरीपावनहूटकदौपव
23 छुहरकौरे छत्रविहीनकरीछिनमेंछित
गवहस्यौजिनकेवलकौरे पर्वतभंजव
रैनकेपानसमानतसे असहूपरकौरे होश्व
राइमहूयेनपउनकौव्रइहांनरवौंनरकौरे ३१
रावनः वेचरीछंद देश्अंगदराजमेंकहे
मारिवौंनरराजकौ वांधिदेश्विभीषनें
अरुफोरसेनसमाजकौं सबजारेअबरि
अकीपाइलागेरुद्रके सीयकौंनवदेउ
रामहिंजाइपारसमुद्रके सीसकौंनव
देउसंमारिजाथिर ३२ अंगदछंद लंकहि
जलाइगयोवलीहूं नवेंहसैननिगारयो
सिंधवांपतिसोपिकेनलनीलछिटवहा
इयो नाहिनोहिसमेंनअंपिउषारिहौंउलटी
करौं आजुराजकहाविभीषनुवेठहैतिहनें
उरौं ३४ अंगदकवित हयगिरहालेरुद्रने
रगिरहालेरुद्रगिरहालेउग्र ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गिरिहालचालहीं सप्तपातालहाले फणपा
लभालहाले जगतिपालहाले जलहूंचेंकौं ३
ह्वालहीं केसौदासलेकाकौसकलदलव
लहासौदसौसीसहालेलंकजैसेंयतिपालहीं
भूपलोगहालभूपलोगसबहालउदौवाल
बलबंउकेकौपगुपेनहालहीं २५ दोहरा श्रृं
गदरांवनकौसुकडलैकरउयोसहजोंहु मन
द्देचल्यौ जमलोककौंदससिरकौसघांतु २६
इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांमत्तकललोक
लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रका
यांहृचश्रृंगदवर्ननंनामषोडसोप्रकासः १६
दोहरा श्रृंगडुलेवामुजरकौंपेरांमकेपार
रांमविभीषणिकौतिरहभूषनकरोसभार
पद्धरियाछंद दिसदत्तनश्रृंगडुसउडनील ७
नहूंनृमेंदपत्रिमसतसील दिपउत्तहलक्रमा
नसहितनरांमु सुग्रीवमध्यकोनैंविरांमु १
छंद संगजगण्यपपूषनवलविलास हुफिर
नतिभीमउग्रासपास निसवासरसवकोले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰
७५

नमोथ शहिं भांन नमयोलें कानिरोधु ३ छं
ड नवरांवनसनिलें कानिरोधु ऊरुडयमो
ननमेंनयरमक्रोधु राषमहस्त्रहसुष्टरवमे
र दछनहमहीदनगोपदोर प छंड॰ म
येइंद्रजीनयाश्चिमड॰यार रहेऊनरंगाको
वलऊदार किरेविरूपाचलयिरमध्यदेस
कैरेनारंतकचदृचांप्रवेस ५ प्रमिनाछ
रछंड प्रनिदारद्वारप्रनितुद्रमयो वट्टरी
छांकिंशूरनिलागगये नवसनेलंककों
साभभई मनोंप्रग्रिज्वालमाद्विप्नमाभई ६
दोहरा मरकतमनकेसाभिपंसवैकिंशू
राचारु भ्रागयोमनोज्वातद्वेपाविकको
परिवारु ७ ऊभमाविचित्राछंड॰ नवनिक
सोगेंवनसजसूरो जिहिंनजीत्योहरिवल
श्री नववलमाया नसुऊपजायो कपिद
लकैामतुसंभ्रमक्रायो ८ दोधकछंड काहू
नदेषिपरेवुहजोधा नघायिरैसिगरेतुपवेष
सायकसोप्रहिनाम्यकरतुनायकसायें ल
छमनसोरतुनाइकुवाये ९ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद रामहिं बाँधि गयो जब लंका रावन की
सिगरी मिटी संका देषि वैं पे रघुनाथ रुकदो
उरूप परूपइ से सव को ॥ १० स्यागम्हा छंद
इन्द्रजीत नहिं रहि है उरलायौ ग्राम्हका जुसत्रु भौ
मन्नुभायो कै विमोन सव हूं फन पायें जौनु
कीहिं रघुनाथ शुद्धि षाप ॥ ११ सीतानू छंद
रजुवरजतन नागनि देखे धूँमज्जक्क हरि वेद
नु लेषे पनगारि पग्र पनगसाई कालचालि
कछु जौंनि नजौंई ॥ १२ दोहरा कालसर्प के
कवल तैं छोरत निजिं नको नोम वधीतिवाम
नवचनव समाया सर्पनि रोम ॥ १३ छंद पन्न
गारि नवरीन हूँ ग्राएँ व्यालजाल सवमारि
भगाये लंक मध्य नवहीं गई सीता सम्र देह
ग्रवलोकि सगीता ॥ १४
छंद श्रीरामनारायन लोककर्ता ब्रह्मादि
रुद्रादिक दुःषहर्ता सीता सुमिलो होदेह
सभुसिक्का नौन्ही वडीपमजो हो रक्का ॥ १५
श्रीराम छंद । कीदें जहोर काजसवैसकी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ नैं आयेईहांमोकहं सगुंदीनै पालागिवे
७५ कुंदभभाविहारी सुलोकगोतनकनविसुधा
25 री १६ सुआक्षुआयोजनुदंडधारी ताकोंहंतू
मंतुभापहूँ प्रहारी जेनेग्रंकपादिकवलि
छभारे संग्राममेंग्रंगदवीरमारे १७ ''''''
'''''' ग्रंकपथआहकिहतजकजूफैंमहे
देरोंगेवडमंडहूकैं सदाहूमारेतुममेत्रवादी
रहेकहाकैग्रनिहीविषादी १८ महीदरु:
कहेमकोगुहिनवंतवानी कहेमहां तास
हडु:षाटीनी गुनोंनदावैवक्रपाऊदावैस
धीसवैसाजनमोंनभावै १९ छंद कलोस
गाचार्यमहीकहेंतू सदातुम्हारीहितसंग्र
हेतू नपालभू: मैं विपचारजानो सनैं
हेमहाराजमहेवषानों २० भुजंगप्रयात
छंद यहैलोकपकेसदासाधिजानें वली
वैतुजोंआशुहीईसमानै करेसापनांपक
पलोंकहेकों हरिख्संडुजेमेंगयेईमहीकों
डहूलोककौंपकसाधेंसयानें विदेहीन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ज्यौं वेद विद्या वखांनी पढै लोक दोऊ हूठी
एक ठौर मे त्रिसकै दूसे ज्यौं भले उग्रने से २१
दोहरा बहु राजके मैं कहे तुम सौ राज चरि
त्र हवै सकौ जै वित्त मैं चित्त यौं मित्र अमित्र २२
दोहरा चारि भांति मैत्री कहौ चारि भांति
के मैत्र मोहि सुनाये हऊ जे साथ सो धसब
तेष २३ कै क एक राज के काज हू नेनि
ज को सज न को जै जैसे सहरखु निकारि सवे मे
त्री सुष सा जै एक राज के काज आपनौ का
ज विगारत जैसे लोचन हां निसहूत कवि
वलि हिन वारन इक सबु सम मे तअपनो भ
लो करत दास राख्यि हत जैसे इक आपन हू प
भु को बुरौ करत न गव रेष्ट न ज्यौं २४ दोहरा
मैत्र नि चारि प्रकार के मैत्रनि के निपमान
विषसे दाडिम वीज से गुरु से निंव सम मान २५
चेत्र पर्व तारु ठेड राजनीत मत मञ्जु समुझि कियै
ऐसम काल सुराज हवे ग्रह फिरै मैत्र मित्र अरि
को दुर्वदाहिप लोक लोलश्रम लोकन लहिप २६

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ७८ रावनः छंद चारिभांतनरूप तानमकाहिय
चारिमंत्रमनमैंमतग्रहिय रामुमारिसहरूय
ऊनवचिहैं: इंद्रलोकवसिवासहिंरचिहै २७
प्रमितां छंद उठिप्रहस्तसजिसैंनचले व
हुभांतजाइकपिपुंजनदले तवदोविनील
उरसुदृहैंनें प्राणहीहनुवसुउसने २८
छंद महावलीजुफेनहीनहीप्रहस्तकौं
मीडचलोनहीरावनहस्तकौं अनेगभेरी
वहुदुंडभीवाजै गयंदकोपापजहींनहि
गाजै २९ छंद: मनोरजीभूजनकोजिसो
भंही विलोकजाकोंहरसिंगकोमहीम
चेउनैहससमेतदेषिपं समेततमानोंमृहि
कालदेषियं ३० विभीषनवंसवानि छंद
कोदंडमंडलमहां रघुवंसज्जैहै सिंचषजी
समरपंडजिहंदमोहै महांवलीप्रवलका
लकरालनेत्रासा मेघनादहरनाइकज
ईजेता ३१ छंद: जोखाग्रवेसरण्यवात्र
निकेतधारी संरत्नलोचनककेवरविपनका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

री लिये विसाल सरूरुहल समूहल मानौं श्री
गरुवैडूव है थ्रानिकाय जो नौ ३२ छंद॰ जो
कांचनीयरयश्रिंगमयूरमालीजाकेउदा
ह्रषमानमुखसक्कसाली स्वर्नैधामधाम
हरिकिरिकैनजोनौ सोईहरिकोदरुमहे
दरवैधुमानौ ३३ जाकेरथ्यांगपरसपर्य
जाविराजै श्रीसूर्यमंडलभूमंडलजोनि
माजै ग्रंथडलियुवषधननविनधारी सु
देवांनकेसुरलोकविहारकारी ३४ ली
नौकिडाइ जिहदेवश्रदेववांमों सोघरा
ल्माजवलीमकराकुनामा जोहूहके
लभुजडंडविपनधारी संग्रामसिंधुव
कृपाश्रवगाहकारी ३५ भुजंगछंद ल
गौसिंदनैवाजराजीविराजै जिन्हैवेगके
पौनकेवेगलाजैं भलेस्वर्नकीकिंकनी
नृत्यवाजैं मिलैंदांमिनीसीमनौंमेघ
गाजै ३६ छंद पताकावंमोंसभ्रमाह
ल सोभै सुरैंद्रादिकनिकौजहांविनको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा मै लसैं छत्रमाला हूं से सों प्रभा कौं रमैं ना पु
७८ जौं नौं दसग्रीउ ता कौं ३७ छंद पुरी हार छा
जैं सवै ग्रापुपाये मनौं ब्राह्म सादि सकौं राऊ प्या
यैं गिरीग्रं मलैलै रोग्रा मलैलै दूरो ग्रामसा रैं
मनौं पछिनी पच्छ रेनौं विहारैं ३८ विजयछंद
देषि विभीषनकौं रैन रावन सक्ति लई कर सो षर्द
है क्योउ नहीं हूं नवेत सबी बहीं रघु सों लाइ
कै उगरि दई है हसरी ब्रह्म की सक्ति प्रभा व चला
व तिही हाइ हाइ भई है रा घो भले सरनागत
लछमन सूल कै सूलसी जो डिलई है ३९ संगि
नीछंद जोर ही लछमनै लैं न लाग्यो जं ही सु
रछ्वाती हनूमंत मार्यो तहीं प्रासही पो उ
को नासस्सो हू गयो देर हंती नमैं चेतना कौं
भयो ४० मरहठाछंद प्रापउग्र पोन निलै
पैठु वोनन निकपि दल ररयौ भगाई वरि हैं हवो
न परराम चंद्र जब रावको रावन जाइ परिपकु
वो उतन वछ्छ चरन रथ काटे सुकट चनाइ ला
गोह जो सनन छुटगयो वह लंक गयो ग्रकुलाइ ५१

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दोधक छंद जदपि है अति निगुन ताई मातु
षहूप धरे रघुराई लछमन रांम जहीं अवलोके
नैन नितें न रहे जल रोके ४२ बारक लछमन
मोहि बिलोकौ मोकहं प्रांन चले तजि रोकौ
हौं सुमरौं गुन केतक तेरे सोदर पुत्र सहायक
मेरे ४३ छंद लोचन बाहु नहीं पंथ मेरौ तेब
लु बिक्रम बार कहै हौं जो बिछुरे हौं क्षिणु प्रांन न रा
षौं सीय तजौं मुष रूटन भाषौं ४४ छंद
मोहि रही इतनी मन संका देन न पाई बिभी
षन लंका बोलि उठै प्रभु कौं पनु पारौ नाहि
त ह्वै है मोमुष कारौ ४५ बिभीषन हं दरी
छंद हौं बिनहूं रघुनाथ करौ अब देवन जौ
परदेवनि कौं सब शेष पलै निस मैं फिर आवै
केसव सो सब पाप जिवावै ४६ सोदर लर
को देषत नहीं मुष रावनि कौ भजवो गिगरोल
षु बोल समैं हनवंत न कसौ पन रूद गप जहैं
शेष दकौ बन ४७ श्रीरामजी लछमन के दोहरा
देवनि के इस कार मैमे जो मनु अरु इस हो २ हरन
बचै त्रैलोक मैं अहार बना कैलो २ ४८ श्रीरांम.

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग ७८

छपय करि श्राद्धि त्य श्रद्धि हनन छ जें म करौं ग्रह
वह रुद्धनि वोर सत्रुद्र करौं गं पर्व सर्व मह व
लनि प्रवेर ऊवेर बल हिं गरि हैं देउ रेडु प्रव विघा
पर निग्र विघ करौं विन सिद्ध सिद्ध मह निज
ह्रोइ दासि दि नि की प्रदि नि ग्र नल ग्र नल मि
रजा इजत सनि सरन हरज उद नि ही करो
श्रम्रर से मारु बल ४९ भुजंगप्रयात छंद॰
हतें विघ्नकारी वली वीर वां मे गणेसी ग्रग्रो
मीन हां पकजां मेः चल्यो ले सवे पर्वतें के
मना मे नजोने विलूषपी कों नना मे ५॰ छं
द लमैं देषपी चारु भूयों मवारी कहें देवयों
देवदेवा पकारी पुरी भोम की सी लिये सी
सगाजे महां मं जलाणी हह मां नगाजे १
छंद लगैं सक्ति रां मा नजे रांम साष्पी जरे हैं की
यों जो गिरे हैं महांषी तिनै जनाइवे कों मनो
पैं मपालो चल्यो ज्वालि माली हिले किन मा
ली २ छंद कि यों भाति हाँ काल जी में विचा
रौ चल्यो ग्रं मले ग्र समाली में जारौ कि
यों जात ज्वाला मुषी जोर लीनें ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

महाँमत्तजोमैमिटैहौंप्रभुकीने २ छंद विनाँ
पत्रपालासीहैज्वालफूलै ३ मैंकोकिलालीभ्रमैं
भौंरभूलेसदानंदएमैमहानंदकौरे हनूमंतश्री
येवसंतैमनौले ४ मोटकछंद वापैमयेल॰
छमनभूराछियौ हेनीहमसोमसएकियौ
कोदेडुलियैंपरहवानतरै लंकेसनजीवनजार
गरैः छंद श्रीरामनहीडरलाइलियैं चम्मौप्र
ष्ग्रासिषकोटदियैं कोलाहलसूपपसूपकि
यैं लंकापहलीदसकंपहीयै ९ इतिश्रीसकलजी
नविरचितायांमनसकललोकलोचनचकोरचिं
तामणिश्रीरामचंद्रचंद्रकायांलकमनप्रबोधो
नामअष्टादसप्रकासः १८ अष्टादसेप्रकासमैं
केसवदासकरालः कुंभकर्नकोवर्निवौमेघ
नादकोकाल १ दोधकछंद रावनलछमन
कौंमुनिनीकैं छगटयेसवसाधनजीकें रे
सननमित्रविलंबनलावहु कुंभकर्नहिजागि
जगावहु २ छंद रछसलछमनसाधनकी
नै हेडुभेदेहवजाइहवीनैं मत्तप्रमत्तवेश्र
रुवारे कुंभकर्नजगावतिहारे ३ छंद श्रीईस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
७५

79

हूलैसुरनारिसभागी गावतिवीनवजावन
लागी जागिउसौजवंदीसुरदोषी कुदकु
धावहूभक्तनपोषी ४ नाराजकेउ ग्रमत
मतंदंतिपंतिपककौंनकोरियो भुजापसा
रिग्रासपासमेघगोवसंचरे जिमोनमौंन
सौंदिवानकुंभकर्णआरयो ५ दो
समुद्रसेतुवांधिकैमनुष्यदेहआरयो
लियेजुचालिवांनरालिलंकग्रंकलाइयो
मिल्योविभीषनैवैनमोहितोहिनैनहेउरै प
हस्तआरिदैषनैकमेव मित्रसंचरे ६ केउ
करौजुकाजराजआजवितैमेंसुआवई ग्रहहु
होइजीवजीयसकोसः सुपावई ७ समेतराम
लमनै सुवांनराजिवक्लियौं सकोससेवमि
त्रपुत्रपायसुग्रीवगुरुकियौ ७ कुंभकर्नमनोर
माकेउ रघुनिजकुलभूषनदेवनिदूषन वृद्ध
एमविराजनिकेजनदूषन भवभूतजिनचारि
पदारथसाधन तिनकोकवहूनहिंवापक
वाधन ८ पंकजचारकाकेटे धर्मकनेत्र
निग्राग्रवधावन संतनिहिनरनकोमल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गावत मेंतनतिउपनितनहींनिसवासर सापति
ननमनमुक्तिमंहींपर ४ दोहरा राजाग्रहन
वराजजगिग्योहितमेंजीमित्र कोंमीकुटलन
मेंइजैहपनहतन्नग्रमित्र ९ छंद [illegible] कों
मीवांमीमूफकोंपीकोंपीकुलदोषीखलकों
ननकितन्नमित्रद्रोहीद्विजदोहिप किंधरख
काहलीकलहीकुरुकुटिलकुमेंबोजयचा
रीकुलहीन्नाहिंटोहिप पापीलोभीकूटा
ग्रंथवावरावहिरुगंगुवोंनाग्रववेकोंहठोछ
लीनिरमाहिप समसर्वभक्षीदेववादीनक
वादीजउग्रपजसी ग्रेसोभूंमनूपनिनमोहिंये ॥
निसपालकावेंड वोंनरनजोंनहनजोंतुमभ
गापुहें मानुषनजोंतुरतुनाथुजगनाथुहै जो
तुकीदेहकाटिमेंहजलदेहसों श्राजेंनसाज
थुनिगाजहसिमेंहसों १२ रावनदिहटाकुंभ
कर्नकरिजदकोंसोररहोघरजार कैवेगवि
भीनकोंमिलेगहेंसत्रुकेपाइ १३ मंदोद
रीदोहरा रेदजीनमतिकाइसुननारंनकस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा घदा१ भैया मो प्रभु ऊकनि है ते मन कहत सब
८० का१ १४ चैचरीछंद देव ऊंभकर्न के समान ज्ञा
निजैन श्रोत्र ब्रह्म विसु इंद्र रुद्र चंद्र को हरैहौ गुमा
न राजकाज कौं कहैं जमानि जे हमैं सपाल के
बलीन को चले न काल की कुचाल चाल १५
छंद विसु भाजि भाजि जात क्यों इदेवता प्रसेष
जो मदप्र देषि देषि कै कियेन नारि वेष ईस राम
नैं व वौ व वे स्यों वांनरे सपाल के बलीन को बली
न काल की कुचाल चाल १६ विजयछंद मंदोद
री रामहीं वीरनि दीनी सिया जिन के दुख सों न
पली लतिपहौ रामहीं मारन दीस हे बुह रामहीं
वश्राव निज्ञोंनि दिये है देहपसौ नमहीं लगि श्रा
जलौं रामही कें जिय ज्याये जिपहौं हरकरीड
ननाढिग रेवहरें ही हरे प्रतिना १ किये है १७
दोहरा सेवक रो विग्रह करो सीता कौं लै देहु ग
नैन मिषदे हीन कौं पतिव्रता कौ देहु १८ रावन
मदाछंद हौंस ब्रह्मांड मिलौ मगनो वनवैं
कमिरै हप्रपनपने नारि री हननबांधु निर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रैमकां लिहूं री सोदरू सों गिहूयें रावनसों रा
गवि मैंउ पराद्वकू ना बलि चौदहू लोक दये ७०
रैं वनवैरूहू तो हूति वंचक कौं पिपता लतक्रप
टये १९ दोहरा पैरन देवरकुंभकर्नसो हूती
घरिसौं हूतपाइ रावनसौं पथुपाइकै मंदोद
रीडराइ २० चामरछंद कुंभकर्न रावनैं मद
कनौं सुदै चलौ हाइ हाइकै रही प्रकास प्राह
हीरह्यौ मध्यकुंदर्येचंदिका किरीट श्रृंग
सोभनौ लखि पाखि सौं कलित रुंडकौं चलौ
मकौं २१ नराचछंद उठे उठे दिसा दिसा कपी
सकौं रिकौ रिस्या सही चपेट पेट पेट बाहु
जंघ जानु सौं नहीं लियें प्रहार पेंच ऐंच वीर
बाहु बाजनहीं भजे जिप्रेत रीछ हूं तिलक्कल
छल्लग जानहीं २२ भुजंगप्रयातछंद नहीं ता
रिका कै बवा कैन मानौ नहीं सेध को दंड सों वो
वर्षा नैं नहीं ताल माली इषेजा हिमारयौ न
हीर हूषल्लैं सिंपुहूपौ निहारौ २३ छंद हरीश्रा
हरी हंटरी भोग काकै मही कालहीं काल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रां ८९

कौडंभकनै सोनौंराम संग्राममैंनोह्विवोलौं
वध्यौगर्दुलेकाह्विग्रायौसखसोलौं २४ छंदु
उठ्यौपेसरीकेसरीजोरछायौ वलीवालकौ
सूनलैनीलपायौ हनूमंतसग्रीवसोभैंसभा
गे उम्यौंडेसम्यौंमन्नमानैगलागे २५ छंदु
दसग्रीवकेवंधसुग्रीवपायौ वलौलंकमैं
लैभलैधुंकलायौहनूमंतलंनाहमौरेहस्
लौ छुड्योकर्णनासाहिलैरुद्रुकूल्यौ २६
छंदु समहाल्यौचरीपकहमैंमहूके फिरयौ
रांमहीसाथुहाभौगहँकै हंनुमंतसूएछा
सैलाइलीनैं नजौंम्यौंकवैसिंधुमैंडारिदी
नौं २७ छंदु नहीकालकौकेवसीभाल
लीनौं किसौंरांमहीहस्तपादादिहीनौं
वलौलोरहेवारवाहेकचाली उफ्यौसुदु
लेवांत्रज्यौंमेरमाली २८ छंदु नहीसवने
केडंडुभीदीहभाजे करीछ्यकीविरुदेवसगा
मे दसग्रीवसोकयसौंलोकहारी भयौलंक
मध्येवह्यातंक्कभारी २९ दोहरा नवहीगयौ
निकुंभलाहोमहेतवडंरजीत कहौतहौ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रघुनाथसौंमनौविभीषनमीन ३० विभीषन
उवाच छंद नोरिग्रजलुकैविभीषनरांमसौंवि
नतीकरी इंद्रजीतनिकुंभलागपहैंरामकौंरि
सजीभरी सिद्धहैंगुनहोइजौलहुईसतौलहै
मारियेसिद्धहोतनसिद्धहैयहसवंदाहमेहा
रियें ३१ दोहरा सोईवाहिहनैंकिनहवानरारि
छुकिकोइ वारहवर्षकुंपाहरषानिद्राजीतेहै
३ ३२ छंद रामचंद्रविदाकरीनववेगलछमन
वीरकीसौंविभीषनजांमवंतहुंसंगअंगदधी
रकौ: नीललैनलकेसरीहंनवंतग्रंमकजौं
चले जाइवेगनिकुंभलापलजायकेसिगरे
दले ३३ जामवंतरिंमारिदैसरंतीनअंगदछे
दीयौं वारिमारिविभीषनैंहंनवंतपांचछेदी
यौं एकएकअनेकवांनरजाइलछमनसौं
अहौ अंद्रवैधकजपसौंभवसौंभिहौभवहै
हहौ ३४ गीतकाछंद रेनइंद्रजीतअजीत
लछमनअस्तसहानिसंचौरे सरएकएकअ
नेकमारतिहुंदहदरसौंघरे नवकोपिराव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
८२

वसतुकौंसिरुवोनछिनउद्रहौ दसकंधसंथा
हिकनतहोसिरुजाइश्रजलमैंपरहौ ३५ छंद:
मातिलछमनइंद्रजीतहिंखछसंग्रवजाइयौ क
हिकरिसाधुसाधुसमेतइंद्रहिंदेवतासवआइयौ
कछुमागिलेवरुवीरुसवरभक्तिश्रीरघुनाथ
की पहिराइमालविसालग्रचीहिकेसवसाथ
की ३६ कलहंसछंद इतिइंद्रजीतनकइंलछ
मनुग्रपहासिएमचंद्रवहकैठलगाए सुनिमि
त्रमित्रहतसोदरुमेरे काहिकौनकौनसुमम
हौगुननेरे ३७ दोहरा भूषणसुग्रहनीर
कौंजौनसायतेवीर तौसीतहिंकौंपावतेसु
निलछमनधीर ३८ इतिश्रीइंद्रजीतविर
चितायांमनसकललोकलोचनचकोरचिं
तामणिश्रीरामचंद्रकायांइंद्रजीतवधवर्न
नंनामग्रष्टादसःप्रकासः मोटकछंद देषो
सुग्रंजलमैंजबंही हाहाकरिभूमगिरोन
वंही आपहतसोदरुमित्रसवेमंदोदरीसोविप
याईतवे १ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बंड कोलाहलमंदरमांकमप मांनो
प्रभुकौउडिपोंनगप: रोवैदसकंधविला
पुकरै कोउनकाहृतनधीरधरै: २ रावन
दंडबंड आज्ञआदिसजलपवनपावक
प्रवलवृंदऔंनिदमयो,ताभुजगकौंहरै
गोनकिंनरकरहृनसगंधर्वकुलजबं
विपलकडरजबकर्दमकरौ ब्रह्मरुद्र
दिसवदेवत्रैलोकाकेराजकौंआज्ञग्रमिष
कुरहाहिकरौ आज्ञसिप्रांगदेलंकाविभी
षनेंजग्यकौंजाइसर्वज्ञविप्रनिवरौ ३
महोदरबंड प्रभुसोकुतजौतेंनधीरधरौ
जू सङ्कमनवंधौंहविचारुकरौज कुल
मैंप्रवजीवबजोरहिहैजू सकसोकसमुद्र
हिंसौंवहिहैजू ४ दोहरा प्रजुझलबंड:
सोदरजूचेताहनहितकारी कोगहिहैलं
कहिप्रपिकारी सीतहिदेकरिपिउहिंसंचौ
रै मोहनिहैविक्रमवलभारौ ५ रावन ता
मरसबंड नमग्रवमीतीहंदेहनदेहविन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰
८२

सुनवैपपरीनहिदेह यहनेतुजोनजिलाज
हिरैहै वैनवसनाश्सवेतुष्ठुसैहै छंदु मकरा
द कहाकेमकरनैकहाश्द्रजीवैः कौस्ताश्वो
वैकरैक्तूटरीजै कौसाश्वोवैहजोलोजिंयोहैं
सदाहनेरौ सियकोमवैदहनोंमेउमेरौ ७
छंदु महाराजलंकासदारामकीजै करौंसुद
मेरिचिदावेगदीजै हनौंरांमुसौंवंधुसुग्रीव
मारौं अजोध्याहिलैराजधानीसुधारौं ८
विभीषनवसेनजिलकछंदु कोदेउरघुनाथु
हाथुसम्हारिलीजै भागेसवैसमरनुत्यपदि
छदीजै वेटावलिछुषरकौभआराकुआयौ
संकारकारजतुकालुकरालुपायौ ९ छं
दु सुग्रीवअंगदवलीहिनवेनरेकैंा रोकैंा
तकैनरघुवीरजहीविलोकैंा मारौंविभी
षनगदाउसमोरटेली कालीसमानभुज
लछमनकेटमेली १० छंद गाफेगाहय
वलअंगनिअंगभारे काटेक
टेनवह ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भौंननिकादिहारे ब्रह्मादि जीव कहस सबनघ
सलागै लैहीचलै सम रसिंचन जोरना
गे ॥ गाफ्थापकार भूनल दिवलीलली
नैं ग्रस्तास्वराहूज्ञतमौनरूं चेहकीनैं हा
हारि सदनवलोकजहौंप्रकारी बाफेग्र
सेषग्रेगरुकसकेविदारे ९२ छंद श्रीराम
चंद्रपगलागनचितहर्षे देवाधिदेव मि
लसिद्धनिभुषवर्षे ९३ दोहा जूफतहीस
कराक्षकहूं रावनग्रातिडष्पाइ सतरघ्वी
रघुनाथुपेदिय जीवसीकुपठाइ ९४ सोयु
कछेउ इतहिं देषनहीं रघुनाथकु ताकहू
रक्षउ देषदायकु रावनके कुसलीहतसो
दरु कारजकौं उकैं अपनें चार ९५ इतविन
य [illegible] प्रजउवे जवहीं सिवकौं नवहीं विप
तकुहरस्याति ग्राप कैविनतीमिसकसकें
तिनदेव ग्रदेव सबैवगसाय हेम कीरीन
नईरिषई कछु मंबदिये प्रुतिलागि सिषाय
हैंडनकौं मद यौ[illegible]नकौं डनलै सुभ मनमद सो
ले

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ क्ससिधाम १९ मंदरेमचः सूपनखाजुवि
८४ रूपकरीतमजानारि,यौ हम हंतुवभारी
बौथिनिवारयकीनोह तो जम मोहतव
धनुकीनोनिहारो होरजुहोनीहहैहैरहै
नमिटैहिआकोरविचारिविचारो देमत्र
नंदनकोफरसारघुनंदनसीनहिलेपगु
धारौ १९ दोहरा पतिउत्तरहरनदियो
यहिकहिश्रीरघुनाथ कहिजेरावनहो
रजवमैदोटरीकेसाथ १९ रावन सेजु
नाकेडु कहियौंविलंबुकहाभयो रघुना
थपैजवतूगयौ किहिवेषतेंसबलोकियौं
कहिनोहिडतरुकोदियो १८ हनुमंडक
कंडु भनलकेरंडुश्चः मयौफेहनेरामचं
डुमांनिककनकमगकालहिबकापजू
कुंभहरकुंभकनेनामासहरगोदसीखचर
नयकंपधुवक्षत्रिउरलापजू देवंतकनारे
तकंप्रतकसोंसुसिवकाननिभीषनवनतेन
कानरूषवाधेजू मेघनादमकराक्षमहे
दरसोंनहरवोंनसों [illegible] कनमरमहे [illegible] गाये
[illegible] ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उपंचवत्ना मंदराछंद भूमिसुर्य भुवदेवन कौ भ
गुनेंदन भूपन तें वरले कै वावा मन मर्गोदियो स
बु ईरह्निवालि वली ह्रिपनाल पवै कै संधि की
वातनि कौं मति उत रुष्या पुनह्ने कह्रि पह्रिन
कै कै दीनी है लंक विभीषन कौं पह रूमदाहि
कहा नुम कौं पहरे कै १० मंदोदरी मात तौ छं
द नव सव कहिहारे राम कौं हतना यो प्रवल
मकपरी का पुत्र भेया जु का यो दसमुख जी ने
राम सौं है लरि जै सौ हरि हरु हियहारो देवदुरी
प्रीतैसौ १९ रावनछंद छलु करपवयौ जौ ला
वतै जो ऊवावै रखुपति वलु कौ पावतैसौ सि
धु पारै हनि सरपति भजी विसु माया विलासी
सर्वन हिं हरिषुते कौ लावती लक्कदासी २१ चाम
र छंद पौफरूफकै हरूफरूफ ग्रेरह मैं गयौ
हरक मंत्र साधि साधि होम कौं जहीं भयौ लंक
मैं निसंक अंक लंक नाथ पाइयौ वाल पूतवा
इ पूत जाम वंत धाइयौ २२ छंद मंतदंन पति
वा न राजि का नि कै वसैः भांतिभांति पक्कर
निभाजि भाजि कै गये आस मैं विचावने वि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
८५

85

तौनतौनतारिष जत्रतत्रछत्रचौरचारुहचूर
डारिय २४ भुजंगप्रयातछंद भंगीदेषिकै
सकिलकैसबाला गाईदौरिमंदोदरीचित्र
साला तहांदौरिगौबालिकौपूतफल्यौ सु
वैचित्रकीछत्रकादेषिभूल्यौ २५ गहेदौरतो
कौ तजैताकतोंकौं तजैजादिसाकौंभ
जैवांमताकौं भलीकैनिहारी सबैचित्रसारी
लहैसुंदरीजौंदरीकैविहारी २६ छंद तजैः
दिष्टकैचित्रकीश्रिष्टधम्मा हंसीयकताकौं
तहांदेवकंन्या तहांहासहीदेवकंन्यावता
ई तिहीसेककेलंकरांनीदिषाई २७ छंद
सुश्रोनीगहेकेसलैकेसरांनी तमसीमनो
सूरसोभानिसांनी गहैंबांहपैंचैचहूंवार
ताकैंमनोंहंसलीलैमनालीलताकौं २८
छंद छुटीकंठमालाहरैहारहूंये फिसैंफू
लफूलेलसैकेसछूटे फटीकंचुकीकिंक
नीचारुछूटी पुरीकांमकीसीमनोंरुद्रलू
टी २९ विनाकंचुकीस्तवक्रोवराजै किधौं
सोचहूंग्रीफलेसोभसाजैं मनौंस्तनैकेउं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भलाव मल्हरे वसीकर्न चूर्न मंत्र एर्न सरे ३०
छंद मनौं रस देव सदा रस ह्ली के किधौं गढ़
है कामसंजीवनी के मनो चित्त चौगान कौ
मूल सो है हियो हेम के हाल गोलांन मो है १
छंद मनी लेकु रांनीनि की दीन वांनी तहां
कौ रिंदीनी महां मोहनी मानी ३ बौलै गद
कौं जदालंक वासी गपभागि कौं सर्व साषा
विलासी ३२ मेदादरी छंद सीन हिंदी नौ छ
खुहृप्यासां चौंदे ख्योग्राज्ञ कौ रज्जनैसी सोल है
कहा रंभक हाराज्ञ ३३ रावन विजय छंद
कौ वधु राज्ञि मिल्यो है विभीषन दैक्क लि हरषत
जी वेगगो कौ लौं कुंभकंर्न मस्यौ मचवा रिपु
मौरी कहा नद रीं जैम सौ लौं श्री रघुनाथ के
गानन हि दरजां निहि तऊ सएन न तौ लौं
साल सबै दिगपालनि कौं कर रावन के करु
वारहै जो लौं ३४ चामर छंद रावनै चलै चलै
ति धौं मधाम नै सबै साजि साजि साजि लह
गानि गाजि के तबै दीह दुंदुभी अपार भांति भा
ति वाजहीं जहँ सूः मिमदकाउ मन दंति गा

ग
७९

86

जहैं ३५ चंचरीछंद ऽइष्णीरतुनाथकौंर
घुंहौंनिभूतलदेखिकै वेगसारथसौं कलो
रथुसाजिलेसविसेषकै नूनग्रवछयवोंनस्व
च्छभ्रभेदलैतेनचोंनकौं आश्रमोरेंनभूमिमैंक
रिभ्रमसेषप्रमानकौं ३९ कोटभाँतनियौं
नतैंमहोलछुत्तालसै वैठकैपुजघ्रयहूंनवं
तथ्रेनकुंभौंहूसै रामवेदप्रदच्छनाकरिदुच्छ
है जवही चढे पुष्पनिवर्षिवजा ३ छंद भि
देवतावहुवपावके ३८ छंद रामकोंमथुम
घ्यदेषतकोयुरोवनिकेवधूनीवीसवाइन
कीमरावलियोंमधूजलसोंमधेरा मेलहू
लिकताराएसवदिइकेवलमेचरे रिच्छवा
नरछेरकैतवलकपाछदनोकरे ३९ सुंदर
रीछंद वोंननिसाघउदेसवबानर जाइ
परेमलयाचलकीपर सूरजमंडलमैंइ
करोवत पकश्रकासनदीसुषधोवत ३२
पकगयेजैंमलोकसहेंउघ पककहैंवभू
तनिसौंउघ पकतिसागरमांकपरेमरि प
कगयेश्रवलोकिश्रगानिजरि... ४०

मोरकछंद श्रीलछमनकोभकसौजवंहो
छोरधोसरूपावककौनवंही जासोसरूपेजरू
छार...... नैनिनत्रनकौभ्रतिचितउसो ५१ दो
वेरूनवंनवलीवतसौं लेभ्रगरनीलसवैदल
सैंमोनैगिरराजनजेउंरकौं बेरचहूंगेमभ
रदकौं ५२ हीराछंद भ्रंगउसबभ्रंगनिरंन
भ्रंगनिखरकारकै रिछपतहिंभ्रछरिगईं
लछगजितिकारकै वोनरगुउवांवनसम
केसविजवंहीभ्रसो गेवनउछदेवउजग
पोवनसभुहैजसो ५३ वालरूपकछंद
रदजीतनीतभ्रानरोकियेसुवोनतांनि छो
उदीनवीरवांनकांनकेपमानभ्रांनि सोप
नाभुकाटिचांपकर्मचर्मवर्मछेदि जाव
भोरसानलेभ्रसेषकेठमालभेद ५४ दंड
कछंद सूरजभुसलनीलपारिसपरिघन
लजांमवेतभ्रसिरूरजोमनघहारेहैं फर
सासमेनकुंभकेसरीगवारसूलविभीषंन
गदागजुभिंडपालतारेहैं सोगराडविड
नारूजवानजमुउनेजाभ्रंगउसिलागवा।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
८७

कुविरथुविदारेहैं अंकुससरथुचुकदपि
सुथुसेथु सक्ति बानतीनरोवन श्री रामचंद्र
मारेहैं ४५ दोहरा देवुज श्री रघुनाथ सों
विरचैजइविलास हापथ्रठारहमज्रूपथुन
मारेकेसवदास ४६ गंगोकछंद जहै
नाईजहांजइजेसेंकरैनाहिनेहींदिसारो
किराषेंनहीं आंपनेसम्बकेंग्रसुकाटैस
बैंनाहिकेंवांहकहेचाउलागैनहीं दोरि
सौंमिचलेवांतुकोंदेउजाषेर षेउंपुजापी
रकेत्रावली मेलविगावलीछाडिमा
नैंउंपकहीबेरकैहंसवेसावली: ४७
त्रिभंगीछंद लछमनसभलछनबुद्धिवि
चछनरांवनसौंरिसछांडिदई बहुबान
निछूरैजोसिरुषैरै सोफिरुमंडैसोभन
ई जदपिरनमंडे नरिथुवथुषेडतगंनगण
मेउंतभूलिरलोनजिमनचचकायकुसर
सिरसायकरघुनायकसौवचुगुचकतोष ८
छंद वाफोरैनगाजतितउमगुलाजनस
वलाइक हनिश्रीरघुनंदनमारे हतिकै
वंपनउहनिवेरजमषदाय

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

क टैनटाहौ मैसैन माहौ ह्वौं हटिहसौप
विमायक रांवनहि न मारन देवप्रकारति
दैत्यतिश्चारति जगनायक ४९ छिपय जिह
सरम धुमड मार्दिम हो सुरमर्दन कितेउ मा
सौं काकिहनर्कु सेष हति सेषलिजउ निह
कटकुमहा कटकक सौं कैटभवध्रपंडे षरू
हषरुत्रिसराक्तबंधु नरू षंड विहउी कुंभक
नंजिहसंचसौ पलनघति गपानैन सौ जिह
वांन छांनदसकैटके कुंठ दसै षंड तिकरवौ ५०
दोहरा रघुपतिपदयौ श्रा हहौ श्रम हरिउ
डनिपांन दससिरदसहं दिसनकौं वलिदेश्रा
वद्धवांन ५१ मैजमनोहरछंद भुवभारहिसे
जतरणषसकौ गर्वरुजाइरमा नलसौं श्रुरा
गयौ जगमै जयसदसमेत ही केसवराजवि
भीषनकै सिरजागयौ मघदानव नंदनीकेस
घसौंमिलकै सिय के हिनहियते उछभागयौ स
रुतुरभी सीसगजासरुराम कौ रांवनके उरसा
यहीलागयौ ५२ मंदोदरी विजयाछंद जी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
९८

तलयेदिगपालसचीकेउमासनिदेवनदी
सबसुकी वासरहीनिसदेवनिकीसबसुंद
रहैसबसंपतिहूकी तीनहूलोकनकीत
रुनीनिकीवारिवधूदंतीदेउहूकीसेवा
तिसौंनश्रिकलसुरांवत्रुसेवतिसेजयसौ
भयभूकी ५३ श्रीरामाकेउ ब्रवजाद्धवि
भीषनरांवनलैकै सकलत्रसवेधुक्रियास
बकैकै जैनसेवकसंपतिकोसुसम्हारे स
यनंदनकेसिगरेडुखटारे ५४ इतिश्रीरंद
जीतविरचितायांमसकललोकलोचन
चकोरचिंतामणिश्रीरामचंदचंद्रकायांरा
वनवधवर्ननानामऊनविंसतप्रकासः ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

श्रीरामैंतारिकाछंद जयजारकहैंहैंनवेव
हमारे सुषदैवहूदीरघउः षुविदारे सवभूष
नभूषनकैसुभगीता हमकौंतुमवेगदिषाव
हूसीता १ छंद हूनवेंनुगयेंनवहींजहंसीता
जारकहीजयकीसवगीता पगलागकही
जेंनकीपगुधारे मगचाहतहैंरघुनाथुतिहा
रे २ छंद सिगरेनेंनभूषनभूषनकीनैंधरि
केउसभ्भावलिश्रेगनवीनें द्विजदेवनिहेदप
दपकीसुषगीता पावकश्रेकचलीचढिसी
ता ३ छंद भुजंगप्रयाता हनूमानउवाच
सवभासवैश्रेगसिंगारसोहैं विलोकेंरमादे
वदेवीविमोहैं पिताश्रेकज्यौंकन्यकासुभ्रगी
नाः लसैश्रग्निकेश्रेकज्यौंकन्यकासुभ्रगीताः

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग लसैं अग्निके अंकमैं मनुभ्रमीना ४ छंद महा
८४ देवकेनैंनकी ज्वालासी कि संग्रामकी भूमिमैं
चंडकामी मनौं रत्नसिंघासनस्थिनैं सची है
किधौं रागनी रंगसुरेरची हैं ५ छंद गिरा
सरमैं पयो देवतासी किधौं कंजकी मंजसो
भासकासी किधौं पद्महीमें सिफाकेंदसो
है किधौं पद्मके कोसपद्मा विमो है ६ छं
द० किसिंहरसैलाग्रमें सिद्धकेन्यौं किधौं प
द्मनी हंससज्जरूपैं न्या सरोजासना है मनौं
चारुवीनी जमापुस्तकी पीठवैठी भवानी
७ छंद मनौं अंगसपीहंदमैं रोहनीसी कि
दिग्गाहमैं देषियें जो
गनीसी

प ए गुर जौं स्वर्न माला म कास्रेम निजौं त्तिसी
तक्क को भोग भासे ८ सरैंदवज्राक्केउ श्रासा
वरी मा निदउं भसोहै श्रसोक लश्रावन देवता
सी पाला समालाकुह्म मालि मध्ये वसेतल
कमी ह्म मलक्कतासी श्रारक्त महह्मम विउउ
त्री मे नैं विराजे प्रतिचा हवे वा संहरन सिंहर
नि प्रभा सकै यौं गणेश भाल स्थल वेंदरे षा ९
विरेय क्केउ हेम निदर्षन मैं मतिं विउ किपी
त्तिहि ये प्रगुरक्त श्रभीता उंजमता पमै कीर
त्ति सी तमते चनिमैं कि यौं सिद्ध विनीता स्यौं
रवु नाथु त्ति हारी ये भक्ति लसे डर केल बकें
ह्म भगीता स्यौं श्रवलोक निश्रानंद कें डदता
सनमध्य सवासन सीता ९ दोहरा रंडुवउ
नमुनि सिउजें सम्प्रश्रि सहित पंनमाल चरन
हइ लेद सहयाहिं श्राश गये निहकाल ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा०
९०

वसंततिलकछंदु श्रीरामचंद्र यह सेत
तिहह सीता ब्रह्मादि देव सब आवत हैं द
गीता है जैह कृपालय ह है जे जनकात्मा जा
या जोगी सई सतम है यह जोग माया १२
छंदु श्रीरामचंद्र हसिकै टलगाइ लीनी
सेसा तिसा षीम भ पावक श्रानिंदीनी देव
निंडुभी वजाइ सभ गीत गाय त्रैलोकलो
चनचकोर निचित्तभाय १३ ब्रह्माणदो
धकछंदु० राममसदा तमश्रेमर जो मी लो
कवतदस के ब्रभि रामी निर्गुन एक तमैंह जि
पजानैं एकदसा गुन वंत बषानै १४ छं
दु जोतिज गैजग मध्य तम्हारी जाइक
हीन हंनी न निहारी कोउकहै परिमांड न ता
कौ रूपनरेखनश्रेत है जाकौ १५

नारकाछंद तुमहीगुनरूपगुनीतुमदाये
तुमपकतेंरूपअनेकबनाये इकहैंजुजो
गुनरूपनिहारो तिहिंसिष्टरचीबहुजामें
विहारौ १६ छंद गुनमन्नुपरैंतुमरछनता
कौं सबविसुकहैंसिगरौजगजाको तुम
हीजगरूदसरूपसंवारौ कहिजेजिनमों
यततमोंगुनभारौ १७ छंद तुमहीजगहौ
जगहैतुमहीमें तुमहीविरचीमरजादहुनी
मैं मरजादहिंछाडतजाननजेकौं तबहीम
वतारूपरौतुमनाकौं १८ छंद तुमहीपरि
कछपवेषधरौज तुमहीनहैबेदनकौंउध
रौज तुमहीजगतजग्यवराहभयेजू धन
छीनलयहिरनाछहराजू १९ छंद तुमही
नलपहिरनाछहयेजू नदंशीपकौंरूपस
वारौ प्रहलादकोदीवयदोषविदारौ तु
मंहीबलिबावनवेषछलेजू भृगुनंदन
हैछिनछबीहयेजू २० छंद तुमहीसबरा
वनदुष्टहयोहौ धर ... हठनपमे

रा उवाहौ तुमंहीपुनहासुकौरूपपयौगे स्रुति
५१ ३ष्पनिकौंभवभावरहौगे २१ छंद पुनिवोय
सरूपदयाहियपैगे निहकलंकहेमलेछ
91 ममहदूरहोरे १ हृभांत अनेकसरूपतिहारे
अपनेमरजादकेकाजसपारे २२ श्रीमहादे
उ॥ पंकजवाटकाछंद॥ श्रीरघुवरतुमहो
जगनाइक देषहुदसरथकौसुषदाइक
मोदरसहितपितापदणाकत बंधनकीयत
वंहौ मनभाइक २३ दसरथतिसपालकाछं
द॥ रामस्रुतपर्मजननीपमनमोंनिये बंध
जनमातगनप्रानसमजोंनियें रामकाहूल
हमनविसेषसभलेषिये ईसहवईसजगदी
समयदेषिये २४ श्रीरामचंद्रउवाचछंद॥
नफिजरूकैगाये जिवानराज्ञिविछुराजके
भकर्नलोकहूनंभक्तियोजिगाजिगानिरू
परेष मोअसषजीउदैकौंसञ्याज आनि
पाइलागिपोनिहेसमनदेवराज २५ लोक
रा वानररिछसविछपतिश्चकलत्रसमेत

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पुष्पकिबदिश्रीरामजूचले अबधिकेहेतर ९
गीतकाछंद मैतमीतहिमोमनादरसार
पंचबटीगए पाइलागिअगस्तिके अरुअ
त्रिपतिभिदाभए चित्रकूटबिलोकिकैतब
हूँप्रयागबिलोकियो भरद्वाजबसैंजहां
जिनतैंतनैंहूँपाबनबियो २७ श्रीरामप्रयाग
दंडकगारकछंड बिलकैउतिमोअतिसू
क्ष्मबारु तनहेजनमेवतहैंसरयारो प
निबिंबनदीपदिपैजलमाहीं जनजालख
मीनकेजालिअन्हाही २८ छंद जलकी
हानिपीतसितासितिमोहै बहुपातकवा
तकोरसबकोहै मदंतनममेचमिकेजमनी
को रुपभारथखंडदियोजनटीको २९
दंडकछंद चतरबदनपंचबदनबदन
षटसहसबदनहूंसहुंसगतिगाईहै
सातलोकसातदीपसातहूरसातलनि
गंगाजूकीशोभासोभामसबहीकोसघदा
ईहै जमुनाकोजलबैग्यालिके प्रवाहप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ए रकेसौदामिनीचवीचमणिकी गुराईहै सो
५२ भनसरीरपदकंजमविलेपनिहैं स्यामल
सकलकीनकलकीतकाईहै १० सपीबंब
92 द्धकलाछंद भवसागरकीजेनसेत उजाग
रमंदरतासिगरीबसकी तिन्हदेवनिकी
उतिसीदरसैगतिसोपैचिरोघनिकेसकी
कहिकेसववेदउईमनिसीपरितापउरव
लकोंमसकी सबुबेदैत्रिकालत्रिलोकत्रिवे
निहिंकेतत्रिविक्रमकेजसकी ....
घनबडकछंद॥मुनलकी वेनीसी त्रिवेनी
हमसोभिपतएकैकहै सरस्वरमारगुवि
भातहै एकैकहैसूरनभ्रनादि जनअंतको
उज्ञाकोयह कैसोदासकियोदिवहूप
गातहै सबसघकलसबसोभाकरुमेरे
जोनकोंवेसोंनअद्भुतसंगेपद्मबदातहै
दरसपरसहूंतेथिरचरजीवनकोकोटि
कोटिजन्मकोउगोपमिटिजातहै ११॥
भुजंगप्रयातछंद॥भागिहाजिकीवाटि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कांरंमदेषी महादेवकैसीवनीचिंतलेषी
मवैहव्वमंदारहंतैमलेहै ब्बहैकालकेफू
लफूलेहै ३३ छंद कहाहैमनी हंसमोंचित
चेमें चुगेजेमवेवेदमंत्रक्रानिभोरें सकाली
कहेंमारिकालीविराजे पटेबेदमंत्रावली
भेदभाजे ३४ छंद कहूहब्बमलस्थली
तोपपीवै महोमतमातंगामीमानछीवै
कहूविप्रपूजाकहूदेवसेवा कहूमाधुपे
रानकीगाथगावे ३५ छंद कहूमाधुपे
रानकीगाथगावे कहूंजगचकीसत्रमा
लाबनावे कहूंहोमममंत्रादिकेधर्मधारै
कहूंवैटकेब्रह्मविद्याविचारैं ३६ छंद ॥
सवाईजहांदोषिथेवलदागी चलैपिया
लीनिछत्रमोसमभागी कण्वाश्रीफले
सोकहैजंवनीकें जरामानरागीसवेतोम
हीके ३७ छंद जहांवारिदैहंदवाजेनि
साजे मयूरंमहानित्यकालीविराजे मा
वहांजवैठेजहांविप्रमोहै मनोंपकहीवक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ९३ 93

लोकेममोहै ४८ दंडकछंद लछमन केसो
दासमम्गजबखेरुचोषै वाधिनीन वाटनम
रभवाषबालकबदनहै सिंहनिकीसटा
ग्रैचेकलभकरनिकवि सिंहनिकोआसन
गयंदकोवदनहै फनीकेफननि परनाव
त मदनिमोरकोधनविरोधजहांमडनम
डनहै वानरफिरतडोरेडोरेअधनापसनि
रिषकोसदनकियोसिवकोसदनहै ४९ छंद
नहांकोमलेकलपमाषीपिविमोहै पंचसघ
लाडः घटाहैडवैते मवैमेभजूसगली
नेश्रनेते ५० लछमनमालनीछंद प्रति
मितरजिराजेरुषवर्षांसमैसो विरलज
तानिमाथीरनदीकूलश्रैसो जगमपद
रसाईहरको श्रेसजैसो स्वर्गनर्केहरका
नामश्रीरामकेसो ५१ छंद गहैकेसपा
सैषिपामीबधानो कोपस्थापकेबासते
गात मानोमनो वेद्दमावद्धिकामोभ्रमा
जे जगामोमिलेयोभाविहाजिराजे ५२

दोहरा भस्मविमंडिकसोभसुभवर्तन
बहुउदारि मनोंचिश्रोभाश्रोतउनिबंध
तिलगीलिलारि धइ छंद मनोअंजरली
लसैसमकैसी किधौवेदविद्यासभासुथजे
सी बसैगंगकीसोभजौंजन्हुनीकीविराजै
सदाजोतिदिनाबलीकी धइ गीतकाछंद
भृकुटीविराजनसेतमोनकुमेत्र अद्भुतस्या
मकेजिनकौं विलोकनंहीविलात अनेष
कर्मसकामके त्रुषवास आसप्रकासकेस
ब भौरभौवनलाजही जबसामकेसबस
ब्रजब्रह्मेसपब्रविराजंही धध छंद ।।
नतकंत्रकेटचिरेषराजतस्जसीउनमानि
यें अवनीतर्इदिपनियहो तिनकेनिबंध
नअंगनियोगउपवीतउजलसोभियेउरदे
षियेबर्तनसबै सरअपगानपसिंधुमें
जबसेतसीतसीसमलैअबै धध दोहरा
फटकिमालउरनसोभिपउरुरिषराजउरा
र अमलसकलअतबरनमयमनोंगिराके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
५५

हार ५६ सुंदरीछंद जदपिहैरसरीविरसौ
मन देडहीडी सौग्रवलेवतिकेतन धूमसि
षानिकेबाजमनोगनि देवसुरीकहेपथ
रेवमनि ५७ छंद रूपपरेबडवानलकौज
न पोषतहैपयपानिनिहीतैन कौपभ्रुग
गममेत्रवषानहः मोहमहातमकेरविमा
नहे ५८ छंद सममषाग्रसषाकालिकेग
न पर्वतश्रीषथसिड निकेजन पाप कला
पनिकेदिनहष देषिशरणमकरैजगमष
न ५९ पटरियाछंद सीतासमेतसेषावता
र दंडवतकरेविषको अपार नवबेषवि
भीषनजामवेत सुग्रीववालसुतहनूवंत
छंद रिषराजकरी पूजाअपार प्रनकुश
लषसुसब्बोउदार राम भरथश्रुमत्रुश्रुजस
लीनिकेत मंत्रीमित्र मातजितसमेत ६०
भारद्वाजछंद काहिजरालहरौहैतन मम्प्रादि
देव सवजानतहेमेमसारमेव विपविप्र
सेभरविमसिउदार सवपावकादिसंसाव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नारि ५२ छंद ब्रह्मादिदेवपरिमानश्रेत न
महीहौंरत्रुपतिश्रनेत श्रबसकलदानदै
पूजविप्र पुनकरहु श्रागलौकाजछिप १ ६
इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांसत्सकल्लोद
`````` ` `` ` `` चिंतामणिश्रीरामचंद्रकायां ७
भारद्वाजसभाबासोज्ञामेंद्रसमसमोप्रकारः
श्रीराम ` ``` `` छंद कहौदानदीजे
सुकैभांनकीजे जहांहोइजैसी कहौविप्र
तैसी १ भारद्वाजदोहरा सातकराजसुनाम
सीदानतीनविधजान उत्तममध्यमश्रध
मत्तनिकेसबदासबषान २ चंचरीछंद
पूजियेद्विजश्रापनी करनारि संज्ञयुजा
नियेदेवदेवहि थापकेपुनवेदमंत्रबषानि
ये हाथलैकुशगोत्रउच्चरत्तणजत्तसपमा
नियेदानदैककुश्रारदैजैदानमानउमा
नियै ३ दोधकछंद॥ देनहौश्रपनीकरदा
नी। श्रीरकौहाथसुज्ञमेंगलौजाने दानहि
देतजु श्रारसुश्रावे। सोवहुराजसदानक
हावै ४ गोपालछंद विप्रनदीजिनहीन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri
``````

रा विप्रान जौंनहैं तिनकौंनामसदांन जौंनहैं मि
९५ गरेविश्नुसरूप विप्रनिजांनहूजगरूप ६
श्लोक साचारोवानिराचारो साधुवासाधुरेववा 95
अविद्योवासविद्योवाब्राह्मणोमामकीतनुः ६
तोमरछंद द्विजपांमदीजतपाइ बहुभांत
सजसपाइ कछुनाहिंनैपरिमांन कहिये
हउत्तमदांन द्विजकौंजुदेतबुलाइ सुनिजे
हमध्यमराइ गुनजाचनासिसदांन अतिसी
नताकरूजांन ७ श्लोक अभिगम्यतमंदानं
माहूतैवमध्यमं अधमंजाच्यमानेस्यः
त्सेवादानं तुनिष्फलं ८ दोहरा प्रतिदिन
दीजतनेमसौंतासौंनिश्रयवधांन कालहिं
पाइजुदेतहै सोनैमित्तिकदांन ९ श्लोक अ
श्रितंसाधुकर्मांनां ब्रह्मस्वं जोव्यतिक्रमेत् त
स्पैतसंचपचासहछपजाहनेसमयः १० दो
धकछंद पहिलेनिजहितनिदेहु अबै पुनि
देहुसबै अनिपावहिंनागरलोगसबै पुनि
देहुसबैनिजदेसनिकौ उबरौपैनुदेहु बिदे
सनिकौं ११ मोटकछंद दामसकौंमसकौंमक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हेहैं सरिस देवजगमध्य रहेहै इच्छतही फल
हेत सकामैं रोमनमित्रवधानअकामैं १२
होतनतिदच्छनवामवधानो धर्मनिमित्तनिट
च्छनजानो धर्मविरुद्धतिवामगनोज्ञ दोत
कदानसवैज्ञसहनोज्ञ १३ छंद देकसदानस
उत्तमलेखो देककदानउतिन्हे जिनदेखो क्वाडि
मबैदिनदानतिदीजे दानहीनेवसकेमतली
जे १४ दोहरा केसवदान अनंतहैं बनैनसि
गरेलेख यहेजानभवभूपसबकेमदानकेउ
देत १५ श्लोक जात्किंविन्कुरुतेपापैः गपानै
तोगपानतोपिवाः अपिगोचर्ममात्रस्यः भूम
दानेनसुध्यति १६ समहस्तेनदंडेनत्रिंसद्
डनिवर्त्तनः दसतान्येवगोचर्मः दत्वास्वर्गे
महीयते १७ अन्यायेनहृदाभूर्येः नराःपाप
हाहृतनाः हरंतोहृ‥ यंतस्य हमसेस
समेजकः १८ श्रीरामः दोहरा कोनविदी
जेदानभवहैरिषदाजअनेक भारद्वाज दे
हमनोढनिरांमदे आपेसहितविवेक १९

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
९८

श्रीराम कहौ भारद्वाज सनाथ्य कोहू अंधक
होते सब मध्य मोहू इते सवै विप्र प्रभाव भीने
तजेति कोप अति प्रेम कीने २ छंद भारद्वा
ज गिरीस नारायन पे सुनीजो गिरीस मो सो
कहौ सक लो मौ सुनौ सुसीतापति साधु चर्चा
करी सुजात तन मब्ब लम्ब्र चौ श्रीनारायन मोट
कछंद मो ते जलको जमरो जवध्यौ हू वैांप्र
नि उध्य प्रकास बध्यौ तामैं वत्सरोन निरूपरप
ताके मन तें सनवारि भये चौहू मनके मन ते
उपजे भूदेव सनाथ्य तिमो हि भजे दीनौ वरु
जू तिन कोहि तजू कै होत मब्बल पुत्रोहित जू
भारद्वाज छंद यह वात सुनी तब मेज्र सहू:
सोऽत्न मैप प्रभ जानक हूः ताके मन तैं सत
रूप छयः सोहून श्रति पावन वेदमये यो
द छंद तातें रिष राज सबै तन मछ्याडे भूदेव
सनाथ्य नेक पग मांडे दीने तब मही तिनकों व
सहरे चौहून गहो हित पोबल सरे २५ इंद
वज छंद सनाथ्य प्रजाप्र सबडो यवहारी प्रचंड स

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अखंडलतोकाधारी अमेषअपवतिमेंमवा
री सम्मलनामैमन्टपदोषकारी २८ श्रीरामा
तिछंद हनवंतवलीतमजाहतहो मनि
वेश्रवसंतभरथ्युजहो रिषकेहमहेभोज
नश्राज कोरें प्रतिप्रातभरथ्याहिंयेकभेरे
२९ चतश्पदीछंद ॥ हंनवंतविलोके भर
थसमोकेयेकसकलमलधारी वकलाप
हिरेतनसिरमजटागनहे फलमूलअहारी
वहुमेंगीगनमेंराजकाजमेंसवहीसोंहितवो
रे रघुनाथपाउकनितनमन प्रेमगनसे
वतिअजलजोरे ३० हनूमानछंड सक
सोकनिछंडोभूषनमेंडोकीजाहिं विवपव
पायें सवकाजसपारेरावन मारेरघुनाइ
कघरआये सुग्रीव सजोपन सहित वि
भीषन सवहूभरथसश्रीभगीता जयकी
कीरतिमोगामेअमलअंगसोहतिलवमन
सीता ३१ पहडिग्राछंड सनपमभावती
भरथ्युवात भपसमममद्दमेंमतानगात

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ५८ यहंस्वपनाकियोंहैमनमाईस इहकहौकाहो
मोसोकपीस जैसेचकोरलीलैअंगार पु
निमलजातसिगरीसम्हार जोउहैउवति
जोंउदयिनेंड सोभरस्युभयेसनिरोमचंड
ज्योंमोरहतमबसरहीन श्रतिहैश्रवेन
जद्दपिप्रवीन उठतउठतहूंकिकरतभोग
मैंरामचंद्रसनिश्रवयलोग २५ मलनी
छंद जेंहुंतेंहुं गजगाजेडंडभीदीहवाजे
वहुवरनपताकास्पंदनस्याविराजे भरथ
सकलसेनोंमध्ययोभेशुकीने सुरपतिम
नुआपोमेघमालीनिलीने २० छंद सक
लनगरवासीभित्रसेनानिसाजे रथगज
सपताकीरुंडरुंडानिराजे पलपलशति
सोहे सोभ्रसोभानिछाई रघुपतिसुनिमां
नौजोपिवालिआपुआई ॥ चामरछंद दोर
नरव्योंमममोविलोकही वानराणिरिछरा
जिदिह शिश्शोकही जोचकोरषोयिवाय
मध्यचंडलेषिही भानकेसमानजानसों

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विमानजांनतौंविमानदेषही ॥१२ मद
नमोदकछंद आवतिविलोकिरघुवीरन
जिवौमगतिभूनल विमांनठबआइयो
रंमपदपग्रहषमषमस्कहांबंधुजगदोरत
बषटपदसमानहषपाइमो मिलेमषु
संधिमिकअंकरघुनाथपवि अश्रुपलो
चननिदेषिउरलाइयो देवमुनिग्रलेप
रसिउसबहूंषतनषमबरषोनिबरषा
हभरषाइयो ॥१३ दोहरा भरथ बरनल
मनपरेलछमनकेसत्रुघ्न ॥ सीताप
गलागनदियोआसिषहमसत्रुघ्न ॥१४
दोहरा मिलेभरथसत्रुघ्नपुनिसुग्रीवहि
अकुलाइ बहुरविभीषनकौमिलेअंगद
कौसुषपाइ ॥१५ अनीरछंद जामवंतन
लनील मिलेसरभसुषनसीन गवाउगा
वहनगापंड कपिजलसबसुषकेउ रिष
बसिष्टकदेषि जन्मसफलकरलेषि
रामपरेउरिपाइ लछमनसहितसुभाइ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ॥९॥ दोहा ॥ लै सुग्रीव विभीषनैं करि करि
९८ विनय प्रनंत पाइन परे बसि हृ के कपि कुल
बलि बुद्धवंत ॥७॥ श्रीराम चंद्र वाचय पइ विषा
छंद सनि जे बसिष्ट कुल इष्ट देव इन कपिना
इकके सकल भेव हम हडनि हूं विपरा सम
द इमरषिल ये सम्राम मरुद सभ ग्राम समुद
सब ग्राम समुद कीरे सहपाइ तब दरई जनक
तनिया दिषाइ निज भयेभ र्थ जवौं डः सह
त श्रति समर व्रत सरु हुति कुंभकरनें इन हूने
विभीषन सकल सिर सूल मन मौं नन हौं सतु
सुतल दसकंधु कृनन सम सब देव साषि इ
हु पकहि पहूं नवं नरा षिन जितिय सतसा
रनबंधहैं से मिल समहिक सम मन व च हूं षा
स दरै भीषु इंद्रजित की व नारै घर में रज
पत रावन दिषाइ तोटक छंद इनसे गद
सप्र भनेक हूं ने हम हेत सहे दिन उसपायें
बह रावन को उसमे दे सिषदे सुनि ग्रामा भले
सिराहू सबनै दसकंध की ज प गरू थली

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिनके तनमैं लछु भौंनदली मझिमैंमथ
कीन तियाकरषी मतिमाविप्रकेपनकौहर
षी ॥२१॥ दोहरा माहोमैंअपराधबिनइन
कौपितगुनग्राम इनमनवाचाकरमिनाकी
नेमैरेकौम ॥२२॥ गीताका छंद इनजोमवे
तग्रनेनरब्बमलबलबनहोहने मगरा
जमैंबनराजमैंगजराजगाजबनागनैं
बलभावनौंबलवानकोटिकराबनादि
किहारही चढिऔंमदीहबिमानदेवदिवा
नथोनिनिहारही ॥२२॥ दोहरा कौनकी
हैकरनअबरौसोकोउकरम जैसेबोथ्यौ
जलउपरजलनियसेबसमयर्म ॥२२॥ छंद
इनवेबतिनरबिप्रसौप्रनिमित्रताहम
मैंकरी जलजालकालकरालउपरजा
इपादपरापरी भिसकलकनिहारियं
वनयामननिपाईयो इकबाटिकानकम
लेमीनहिंदेषिकेउछुपाईयो नरहारि
माविप्रहारिकिंकरमैंत्रमन्त्रसंघारिके

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
५५

99

रनमारिअक्षकुमारसंघनगर्ब्बुमोपुरहजारि
कै सुनिमेघपनीतीहूं मेघनादकामनिमीयकी
जबपो ...... बलवंतनाषिअनेबमागह
नैसीहीनबग्रमरूझाइयौ १२४ दसकंपदे
षिविभीषनैरनब्रलमनकनिबलाइयौ कर
पीटमैंमरनाआनैतवआपउअक्षिलगाइ
यौ इकजोंमनीगयौहनि ग्रतिडहपर्वत
ग्रानिकै निहकाललछमनकौजिवायौ
लईसुजीवनयोनकै १२५ दोहरा ग्रपनेस
मुकोआपतौकबलौंहमाहाँकाज विष
राजकलाँहूंनवेतमेभक्तनिकेसिरताज
१२६ ...... रघीरमाहूं
सीबलीजिविकमोक्षमी साधसर्वदासु
वीतपोजपोजिसंजमी भोगभावजोगजा
गवेगवंतहैंजिते वायुपुत्ररामकाजवा
रिडारियेंतिते १२७ दोहरा सीतापाईरिपुह
तोदेषतमग्रकरयेहू रामायनकीसिइकौ
कपिसिकटीकेदङ १२८ दोहरा इहिविधक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पिऊलगुननिकोकहतहनेश्रीरामदेष्योथा
श्रमभरथुकोकेसवनंदीग्राम ९५ .....
ऊतपकतेउतरेरथुनाहरू जबहुश्रीपटचौ
सुषलाहरू मोदकतकोअवलोकितयोर्थलरी
फिरलोकपिरीकनिकोदल कब्बनकोग्र
जिसहइसिंघासन रामरघौतिहूऊपरश्राम
नु कोपुकहोरनिकोश्रनिकोमलतामहि
केऊमचंदनकोजल ९६ दोहरा चरनक
मलश्रीरामकेभरथपषारेग्राय जिनतेगंगा
दिकनिकोनामनमसबसेनाय ९७ ....
... छंद सुरजचरनविभीषनकेअति श्रा
तुनभरथपषारमहांमति इंद्रमीकीपुनि
केबङ्कमेवनि उष्णलषभरथविवादेवनि
९८ दोहरा पीछेडेरेंसउग्रपेलछमनत्या
पपार चरनसुमेंत्रिपषारियेश्रंगदादिके
श्राय ९९ तोमरछेड सिरतेंजटानिउत्ता
रि श्रंगश्रंगगगानिधारि ततभूषनवसु
कोटिलोकसेसबध्रस १०० दोहरा सिरतें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा पावनपादिकोलैकारभवशिवविचित्र बरनकम
१०० लनवहूवथरी हृमिपीहरीजगमित्र ३४
इतिश्रीइंद्रजीतविरचितेयोमनसकललोक
लोचनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रचंद्रका
याश्रीराम .... मागमोनामपंकवि
सः प्रकासः संदरीछंद ॥ जेपपुरीकरूरामव
लेजब टौरहीटौरविराजतहैसब भवशुभ
पसुभसारथसोमन बोरपरेसुग्रीवविभीष
न १ नगनीछंद भूतनलहेरिवुपर विराजै
दीहडंड्र दिसडंडभीबाजे भाटभलेविरदा
बलसाजे मोदमनैंप्रगतिबिबविराजे २ छं
दु लिनीछंदरीडड्डवीरमजत्रलछमनथी
र टौरेजहांततहुभीर आनंदसहितसरीर ३
छंद भूतलंकीरजदेवनसावे फूलनिकी
बरषाभरषावै हीननिमेषसबै सबलोके
होडपरीउकूयो उहूलोकै ४ नारिकाछंद
सिगवेदलगैएपपुरीजबदेषी अमरावति
नैंअनिमेदवलेषी बहुवोरविराजतदीरथ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

घाई सुमदेवतंरंगनिसीसुषदाई ५ छंद
मनिलालिकिंगरनिकीसविराजै अति ११
हीरनकंचनकोटविराजे भूरूसुदरमध्य
लसैंछविछायो परिवेषुमनौरविकोफि
रआयो ६ दोहरा बहुवनेपनाकासोभिये
ऊंचीकेसवदास देवदेवनिकेदेषियेंमानौं
बिजनविलास ७ विजयछंद चहीप्रतिमं
दलसोभवदोनरूनी अवलोकनिकौरव
नेदल मनोथरूदीपतिदेहधरैसुककिंगोंग
हिदेवीएमोहतहैमन किधौंजलदेवीदि
पैकहिकेसवकेघरदेवनिकौंहलसौकन
जंहींसतसीरूभौनलसैदिविदेवनिकौ
मंडवालिकहैजन ८ दोहरा अतिऊंचे
मंदलनिपरीवटी सुंदरीसाथ हरनारंगनि
कौकरनहैजन अतिसुभगाथ ९ तोटक
छंद रनिनारिमलीसरनारिसवे तिनको
नपरेपहिचांननवे मिलफूलनिकीवव
षैवरषा अरुगावनिहैंजयकेकरषा १० ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा पद्मावतीछंद रघुनंदन आपेसनिसबपाये
१०१ पुरजनजैसेतैसो दरसनवसभलेनवमनसू
लेवनैजाहिनरोसे पतिकेसंगनारीअतिहि
तकारीतिनधेरोमहिदिगजोरी जहंतहंच
हवोरनिमिलीचकोरनिमोवाहतचंदच
कोरी॥ तोटकछंद बहुभांतिसोसबप्रतिद्वार
द्वार अतिपूजतलोगसबैउदार इहिभांत
गपहुपतिनिग्रेह जहंसुंदरसोदससोंस
नेह १८ दोहरा मिलेजाइजननीनसोंजब
हीश्रीरघुराइ करुनारससुखदसतमिल्यो
मोपैकह्योनजाइ २२ दोहरा सीतासीता
नाथजुलछमनसहितउदार सबनिमिले
सबकेंकियोभोजनपकहीबार १७ सोरठा
पुरजनलोगअपार यहईसबजोनतसबै॥
हमहीमिलेअपार आराध्यसहमारेही
१५ मदनमनोहरछंद संगसीतालछमन
श्रीरघुनंदन मातनिकेसघपाइपरे सबउः
महैं: असुनिअहमापभागनिआपजी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वनिपाप स्रकमैसुरुस्रकपै वदननिहा
रैं सर्वसहारे देहिसवैसवंहौ नियनौ सुरु
लैलिखनौ ननमनननसम्हारैपहै विचारैं
भागवड़ेपहहैसुपनौसकिपौंसपनौ ए
सागताछंद पौंमपामप्रतिहातवपाई लो
कलोकनिनकोसुनपाई देषिदेषिकपिसु
दमुतलेषैं जाहिजनतहं रामहिदेषैं दे
रिदेरकपिसें वरझावै बारबारप्रतिपौंमनि
पावै देषिदेषिनिनकौंदैनारी भांतिभांतिवि
हसैसुरनारी १७ श्रीरामचंद्रोवाच हनसुग्री
वविभीषनैंअंगदसुरुहनूमान सदामर
सुसहसुमममाताजीमैंजान ९ सोसिर
सोरठा सुनिपाननाथरघुनाथ कोसिस
जसुलजिहोरकछु १५ श्रीरामकविन पो
तियाकहौंकिप्रतिहारुकहौ किंपौधममसु
मित्रकिपौमंत्रीसवदालिय सुभटकहौकि
सिलसहकहौ हतकिपौकेसोदासहाथ
कौसपारुडर श्रानिपै मेनकहौंमबतन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा कियौतनगात प्रेमतुरककहौ।कियौवलनवि
१०२ क्रमवषानियै देषिवेकोपकहौ अनेकभां
तकीनीसिषलक्षमनकेमाईकौनकौनगुन
मानिमें २० मोटकाछंद सुग्रीवबोलिवेरा
मकहै डरतिमजौजहौमुषलहै मेवघर
ममजनकसवै सुग्रीवहिदेहु निवासग्रवे
२१ माजजिमवयमवैयनमै। राघौतहौ
जाशविभीषनकौ नेविनानिकौंकपिलो
गनिकौ राघौनिमधामनिमोगनिसौ २२
दोहरा एकएकनेतिनकौजितते वानर
लोग आगेंहीठाटेंरहति अमितिइंद्रके
भोग २२ इतिश्रीइंद्रजीत
नायांमनवलदेवलोचन
मणिश्रीरामचंद्रचंद्रकायां ....
मलकाछंद एककालरामदेउ साधुवंधु
करनसेउ: सोभिजैसभासवेस देसदेसवे
नेस। छंद वानरेसजूषनाथ लंकानां
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

घवंसुसाधु सोभितैनसभैसुअर मंत्रामित्रगे
रवैर २ दोहरा सकलसुरूपविलोकिउर
उपजीमदनहिरान आइगएतेहीसमैंके
सबरिषिविषिरान ३ दोहरा असितअगरा
अविअगुकस्यपगौतमव्यास विस्वामित्र अ
गस्तजतवालमीकटवास ४ दोहरा वाम
देवमुनिकनैजतभारद्वाजिमतिनिहु
पर्वतादिदैसकलमुनिआयेसहितवास
ष्ठ ५ ... रामरूपनीछंद सबैभुरामचंद्र
रूउटविलोकिकैतबै सभासमेतपाप
रैविसेषसुजिपोसबै विवेकसोअनेक
पादअनपआसनै अनर्घआसनै ...
धनेधनैं द श्रीरामरूपमालाछंद ॥ वदेव
मंडीविलोकनिहूंहीमणडमहव सबमला
पनिहीवहैंउबसोंकआनंदपव देहयो
वनेहैरमोपदपद्मकेपेयपायि सुजही
भपभसहजतआसहीमनिवारि सत्निया
नभवतपोयनधामपीयनृपमें आयस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा घभयेसवैनिरवधवासरकमै ईसजधपिदि
१·३ षहीभई भवमंगलखष सुविवेकौंहोनहेज
नषापिवाकबसिष ८ दोहरा गंगासवासते
103 बडोमासुनिकोमनसंम पावनकरिउपदे
स अतिसदभनवरन अनंगु ९ अगालन
राजछंद किपविसेषमा अमेषकाजदेव
राजके सदाविलोकनाथनाथधर्मविष
गाइके अनादिसिइराजमिइराजआज
लीजई नदेवतानिदेवतानिदीरूसुदी
जई ९ दोहरा मारेअरिमारेहितकौं नहे
सरखुनंदसेदषियेजधपिपरानंद श्रीरा
मःत॥ मरकेड मुनिगणंनमानसहम
जगजोगजागपमस जगमानहेडम
जाल सडहेकरोरूकाल १२ छंड न
हूंदाजहैडमूल सवपापकोअनकूल
अवताहिलैविषाइकहिकौंननकोहूनाई
१३ चौपाई मोदमंचानिकेजचरित्र हूमपे
हनपेंहनकौंसुनिमषमिव इनहीलगेपा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

राजकौकाज स्वंहीतेसबहोतअकाज १४
छंद राजभारुनलभयेहिदयौकुलवलकी
नसवैउनलयो जवलीनौंसबुराजविचार
नलदमयंतीवर्णनकार १५ राजासरषु
राजकोगायु सौंपीसबमंत्रनिकेहाथ से
ततमृगयालीनविचारि मंत्रनिराजादयो
निकारि १६ राजाश्रीश्रीनचेचलताति
ताहूकीसुनलीजैवात जोवनअरुअव
वेकोरंग विनसोक्योनराजश्रीसंग १७
छंद सासुनिजलहूंपावतिजात मलनहोत
अतिजाकेगात जदपिहैअतिउजलछिष तद
पिहैअतिउजलछिष तदपिअवतरागनिकी
छिषः १८ महांपुरुषकौंजाकीप्रीत हरत
सुजिहूकोमरुनहरीत विषियसरीवकोनि
कोजेत इंद्रियरुरिनहारिनीहोत १८ गुरुके
ववनअमलअनकल सुनतहोतअवनति
कोंमूल मैंनबलातेननबसतनवसनसुदे
स मिदनननहींजनजैसोंउपदेस १९ छंद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा मेचनिहंकेम नेनले प्रनिसदकज्यौं ऊनरुदे
१०५ न पहिलेम्हनतिनजोरम्हंनन मानेकारनी
105 जैौनगनेन १९ दोहरा धर्मधीरनविनयतास
ससीलआचार राजश्रीनगनैकब्रवेदपुरान
विचार २० लक्ष्ठल सागरमैं सब कालज्वर
ही मीतिवकनाससितेलही मरतरंगवर
ननितैनान सीधीचेंचलताकोव्रात २१
छंद कालकूटतैंमोहनवीन मोनिगंनते
मनिनिठुरनीन मदिरातेमदिकनामलई मे
दवडदरभईश्रमसमई २२ दोहरा सेषदईव
हू दिढ़तावड़लोचननताचारु अपरानितें
सीषयोअपरअपरषसंसारु २३ छंद द्विफ
गुनबांपेहंवद्भांतकोजांनेंकिहिभांन
विलात गजघोटकभटकोरनिश्रैरे ष
खुडगलनापंजरहंपरै २४ अपनाइनकी
नेंबहुभांत कोजानेकितहैभजिनात ष
मेकोममेंटनिसभदेस नजतिथमरज्यौंक
मलनवेस २५ छंद जद्यपिहौंस्तुइमति

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत कैरेपिसाचीज्यौंउनमत्त गनवंतनिअ्रा
लिंगननहीं अपवित्रनिज्यौंछाडतिहीं २७
छंद सह तिनाकतिअहिसौंदेषिकैटकज्यौं
बकसाधुनिलेषि सपासोदराजयपिअ्राशु
सबहींनेअतिकटुकपताप २८ छंद जय
पित्रुकघातसकीनारि नदपिसकलषल
जनमनहारि अहितलोककीअनैषनी
हितकारनिकीअतिद्वेषनी २९ छंदः स
नमगकोसबपिककीगीत विषयकोल
कीबाधदरीन मदपिसावकाकैसीअली
मोहनीवकीसिजाम॰ ली ३० छंद आ
मीविश्वदोषनकीदरी गनमतवरुषनिका
रनिछरी कलहहसकीमेघावली कपट
निरूकालीकीअली ३१ दोहरा वांमको
मकरिकीकियेकोमलकदलसबस पी
रपमैंतद्विजराजकोंकियेराहुकीरेष ३२
छंद सषदोगानिज्योमानैरहे वातवराह
एकहैकहै नंदवर्ज्ञपहिचाननननहींमो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हा नौमेंनपानिकावाही २३ छंद महांमेंरहेहो
१०५ ननवोषु उसीकालहीकरिजनुञोषु पान
विलासइदनिश्रातरी परदारागमनैंवात
री २४ छंद मगीपायहै सबताबडी वेदी
मषनिवायमैंपडी जोकोंहूचितवै यहद
पा वातकहेतौबडीयेमश्रा २५ दवमनंदी
नैईश्रनिदान हसिबोलैनबडोसनमान
जाकाहूसैंश्रपनोकहै मपनेंकेसीपदवी
लहै २६ दोहरा जोइंश्रनिहितकीकहै
मोइंपरमश्रमित्र समबकता इमोनिजे
मेंनतिमजीमित्र २७ छंद कहोंकहोल
गिताकेमाज तमसबजानतहौरिषराज
जैसीसिवमूरति मानियै तैसीराजश्रीजा
नियै २८ छंद माववाननि हैसवैनाहि
मोवेहोयपरमपद उताहि जितनेंदेष
याकेबमाभेय पेसरवरीपवनकीहूग
ये २९ इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांसकल
कललोकलोचनचकोरचिंतामणिश्री

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

एमचंद्रचंद्रकायां राजश्रीदोषवर्द्धनेनाम १
नेवीसमः प्रकासः २२ श्रीरामउवाच ५१
छंड समतिमहारिषमनजे जगमहं
सुषुनगुनजे मरहिजीवनहितनंही मरि
मरिजनममनिमरहो १ छंड उदवतिमध्य
महनहे वदुडछानिनिकसतिहे अन
नहीपीरअनंही ननउपचाररननहीपी
रअननंही ननउपचारमहनिंही २ वोप
केछंद पीवनलीनकछुजियजोने लेसब
वलनिस्रानतिस्राने सोसवनेकछुहाति
वडेई षेलनहेतिअपानवडेई ३ छंड
हेपितमाननिकेमएमारे श्रीरघते प्रति
होतउघारे भूषनप्यासननीदनसोवें ष
लनिकावडुमोतमोननिरोवै ४ छंद॥
जारसीवितवितनाउविनाई दीहतवा आहि
कोपवव्याई वामसमइफकोरति ललपो
जोबनजोरमहाभमभूलो ५ छंड को
मनितीलनितालमेसोहे जाहिकुयेन॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
९८

विलोकतिमोहै पावकपापसिपावडवारी
जारतिहैनरकेंपरनारी ६ छंद वंकाहि
पैनप्रभासरसीसी कर्दमकोमकछूपरसी
सी कोमनिकोमकोडोरथसीसी मीनम
नछनिकीवनसीसी ७ विजयछंद पैंव
नलोभदसोदिसकोमहिमोउमहारतपा
सकेडारेउवेतमर्तुगिरावनकोधुसजीव
नवोंलूहलतावतिभारे श्रेसमेकोउकोषा
जसोकेसवजारनकामकेकोमनितारे
मारतिपावकारेपवरूहहिकासोकहैजग
जीउविचारे ८ छंद मनलेसवपमेसबैन
हीजवहीवहसोनिपसेज केसववेदपु
राननिकोनसनै समजेसहसैनरसेज ॥
देवनितेनरदेवनितेनरतेपरछत्रविपा
विलसोज जेचनमंत्रनमूरगने जगजो
वनकोमनपितातुबसेज ५ छंद गंगान
निकेतनत्रानतिकेतहांफूलकेपानन
वेपककों तोवास्लगाइ विवेकनको

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बहु माधव कौ कहिं बापकु जौ तौ ग्रैस तौ
केसवलूटतौ जन्म ग्रनेकनिके तपसानि
कौ पौतौ तौ ममलोलोक सवै जगजा नौ
जौ कामुक बडौ बडु पाडु न होतौ ए मक
रंदछंद कौ पवरवानी डूंगैडरडीटतुचा
तुचके मतिवेली नवैनव यौवधके गा
तिके सब बालकते संगही तगधेली लि
यं सब ब्यापनि धाधनि सगजरीजब ग्रावै
जराकी सहेली भगै सब देहदसाजिंघ
साथ रहेउ रिदीहतुवासाग्र केली ११
छंद बिलोकिमिरोरु हसेतु मसमनन रूरु
हके सव यौगन गायौ उटेकियौ ग्रापुके
उपके ग्रंजरलहु यौसगु सोपनिसौ
यौं सरूपको देषु हउदासकी कौलनिकी
लनके किकरूपन साधौ जरासरपजेरजौ
उजसौकि जराजरिके बरि सोपसिरायौ १२
मदनमनोहरछंद दिनिकौ दिनबाफति
ग्रापिहियै जानिजा१ सम्मलसबौषपषैंह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
८७

किधौंपाहीके साथग्रनाथ जैांकेसवग्रा
वीनजातिमदाडथुसेहू जगिजाकोसव
ग्रावीनजातिमदाडथुसेहे जगिजाकोतो
जोतिजगेजउजीवनिपापैतू जीवतुजोन
नपैहू सनिवालदसागईजनीगईसेसेजेहू
जराङदसालनजैहू १३ दोहरा जह्राभाम
नीभोगतहू विनभामनिकाभोग भामनि
कूटेजगकुटेजगकूटैसवजोग १४ दोह
रा जोईजोई जोकरेग्रहूकारकेसाथ ला
नेदीनमोहादिमदभसमहोतहेनाथ १५
नारिकाछंद जियमांबुग्रहूपहूजोबुमि
यें जिनहीजिनहीगुनग्रौरमिपे तिनही
लखिलाछदेसे पलतातनिडतरुजोनव
से १६ दोहरा ग्राषिनहूचिनग्रायरेजीव
करैबहूबाति यौवनयौरजविनकरत
निसाकलेसाराति १७ दोहरा विसाहू
ग्रांसदरीषटपदीलदेकमलमैवास मेत
दतिगनगंडजमनके ग्रनकीविलास १८

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

विजयछंद दानदयाछमसीलसषाविर
कैग्यानीमक ककौविज्ञकावैं केसबसाधुस
चीस्हरभीसबभाजिगर्वभ्रमम्हरभजावै सज
नसंगवक्रैरडवैवेविडरै विषमादिमवैसन
पावै बारवडेभ्रमभापबपेडरमेंदरवाव स
केदनश्रावै १९ छंद पैसतिपापपोतिथमे
ननन्हठमनेजजहानवटैई षेलतऊनत
जैजगजीउजऊबडवानलकोपबडेई क
टतवरानिमैंडरकेकईस्नेपरलोकषवाह
वढैई बडतिहैंहितकाढनिहारैकेपैस
वकाहूनपाठपढेई २० छंद कौनगनै
यहलोकतरीनिविलोकविलोकिजहांज
नबोरै लाजविसालललनालपटीननपीर
जमसंतमालनितोरै चावकताश्रपमान
श्रपोनश्रलाभभंजगमयानकोकश्रा पा
टबडोकहूंचाइनपावतिकोंकविजाईन
रगनतसा २१ दोहरा जोवयोंहूंसबभा
वनाकाहूकोजगहोतकालग्राभ्रपढ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१०८

तनमैंतनहींकोटनजोत २२ सवैया दीनम
पानिकेकलपद्रुमहूरतिमैंसिर्दैसहिं भागें
सृघतमासमसैनपकेसवमोंडभश्रीहरिकेश्र
नुरागैं भुत्रविलापपहारनिकेपलसोंश्रवरा
हवकीनिमगावै जोद्विजदोषतैंसंतनिनास
तितैरौंगुनभाजनलोभकेश्रागें २३ दोहरा
ब्रह्मविस्नसिवश्रादिदैजितनेदिसरूरीरना
मंहो कौंपावतिसवैजैंराषडवाननिनीर २४
छंदरछेद दोषिमईजदवामिलगीश्रनि दे
षतिहीनिहतेजजरीमति भोगकीश्रासन
मूढउजागर औरसमागरमैंरतिनागर
२५ छंद माषीकहैश्रापनौघरहै माकर
नसैकहैश्रपनौंघरुऐसौ कौनेतुसीकहै
तूनसविरूरोंविलारी पैष्रालविलेमहवे
सौ कीटसप्रायसयं छिपौपिकुकसैन
कहैं भ्रमिजासहनेसौ होंहूकहौ अवके
सवनैसहीनाहरसैं अपनोघरकैसो २६
छंद जैसहौंहौंश्रबतेमेरहों जगश्राप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हासंपदाकेनवलौंमग एकंसीईहतेश्रोंग
विनासहति हैानकछुअभिलाषकरौंमति
२७ छंद जैाकछुजीवउधारनकौमत जो
ननहैातकहैाम निहरैति पैाकाहिमैान
गहीजगनाइक केसवरामममनैावचका
इक २८ चामरछंद साधुसाधुकेसभा।
असेघहर्षिहर्षियो दीहदेवलोकितेप्रसू
न वृष्टवर्षियोदेषिदेषिराजलोकमोहियो
महोप्रभा प्रकास्योतहांनुरंगदेवकीसबै
सभा २९ विस्वामित्रउवाच छंद व्यास
उत्रकेसमानसद्बुद्धजानिये ईसकोअ
सेषतत्वसत्वसोवषानिये इष्टहौंवसिष्ट
सिष्टनिष्टवत्समोपिये देवदेवरामदेवकौ
प्रवोधुवोपिये ३० इतिश्रीइंदजोतिविरचि
तायामतसकललोक लोचनचकोरचिं
तामणिश्रीरामचंद्र चंद्रकायांवैराग्यवर्न
नंनामचौविंसमः प्रकास २४ वसिष्ट उ
मत्राहिमयाअत्रवसोनएक बहुजीवजन्म

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा समफोऊअनेक नमंहीनरवीरवनाविचारि
तिहकौंनभांनसमकै मुरारि १ छंद अरुजां
नि हर्षाब्धिप्रतमोहिराम सनिजे सवाहीं सजग
ब्रह्मनाम तिनकेअसेषप्रतिबिंबजाल मे
ईजीवजांनजगमैंकपाल २ निसपालका
छंद मोहबसकामवसहीभये मूलगायरू
पनिजबपतिनसौंगाये बूझियेतिवानयहू
कौनविपउपरे वेदिविपसोपसपजतनव
ऊपाकरे ३ श्रीराम। दोहरा जितलैनेहै
बासनातिनतिनहैहैलीन जनतकहौकेसें
करैं जीववापुरेदीन ४ वसिष्ठ बोधकछं
द॥ जीवनिकीजगमांनउरास होतसभा
सभरूपप्रकास जननिसौंसमरूप पंच
लगावे तौअपनौ नवहीपद पावे ५॥
छंद हैंमनतेविषप्रबऊपायौ जीऊउ
पावनिमेंवसनायौ हैयविसरनिजोतिहा
री जाऊकहौसतीननिहारी ६ दोहरा॥
ताकीइच्छातेंभयेनाराइनमतिसिद्धि तिन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तें वत्तरानंनिभयें तिननेजगतप्रसिद्धि ७
छंद जीवसबैअविलोकिउधारें आपनें
वितप्रयोगविचारें मोहिसुनायेतम्हैं तिह
न्हाउं जीवउधारनगीतसुनाउं ८ दोहरा
मुक्तिपुरीदरबारकेचारिचारिप्रतिहार सा
धुनिकेमतसंगगुरु समसंतोषविचार ५ छं
द॥ जगतचकाबूहबमरच्यो कजलालि
तम्रुगाधु नामहिपेटजनीसरे: अकलंक
तिसोसाधु ९ दोधकछंद साधुवर्ननं॥
देषतहूंपभोगकीकेंहू छंद देषतहूपका
लछांहूं वातकहैंसुनभोगकीकेंहू॥स
मतावर्ननं सोवतिजागतिनैंकनछोभै
सोसमतासबहीमहसोभै १२ संतोषयषा
जीअभिलाषुनकाहूकोआवै पापेगयेंसु
षुदु:षुनपावै लैपरमानंदसौंमनलावै
सोसमतासंतोषुकहावै १२ वस्तविचार
वनंनं। आपोकहांअबहांकहिकोहौं ज्यों
अपनोपटपाउंसुटोहै वंधअवंधहियेमहि
जोनौकहलोकविचारबषानौ १६ छंद॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा चारिमैंएकहूंजौंअपनावै मोक्षमेंप्रेम आव
१९ नपावै श्रीरामोवाच जोतिनिरीहनिरंजन
मोनीतामहिंकौरिषश्लवषानी १४ वसिष्ट
दोहरा सकलसङ्कउनमानिये अदिमतजो
तप्रकास जातजगकौंहोतहैउत्पतिअस्थि
तनास १५ श्रीरामः छंद जीवबंपेसबआप
नीमाया कीनैंऊऊममनोवचकाया जी
वनिवितिषवोपनि आनीहि जीवनिमक्ति
केबषवषानहि १६ वसिष्ट वाहरबहूंअति
सुद्दहियेहूं जाहिनलागतकर्मकियेहूं
बाहरमूडतैअंतसपानौ ताकहूंजीवनमोक्ति
वषानौं १७ दोहरा आपुनसैअविलोकिपे
सबहीजक्तिअजक्ति अहंकारमिटि जाइ
जैं कौंनबधुकोमक्ति १८ श्रीराम छंदः॥
पक्सिगरेगुनहोतहौंजानौं प्यावरजीवनिमु
क्तवषानौं वसिष्ट जोनिसबैगुनदोषनि
छांडै जीवनिमक्तिनिकेपदमांडै १९ श्री
रामः दोहरा साधुकहावनिकरतहैजगमैं
सबव्योहारतिनकौंमीतुनबैसकेकहिस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भुकौंउपकार वसिष्ट जगजिनकौंमनउन
वचरनलीन तेउ तिनकौं स्मरनकरनंछी
न जिनछिनहीं छिन उपछीनहोत जि
हकरतअमित आनंदउदोत २१ जोवाह
हिजीवनअतिअनंत तेोंसापहिंपावेयाम
जेउ हमेरेवकप्रकवामजान अतउंभा
दिकप्रघदोनमान २२ जोकमकमसाप
हि साधुधीर तीतमहिमिलैंग्रेंहेंसरीर श्री
राम जगतमनेनहींसर्वप्रधान सबकहीं
देवपूजाविधान २३ वसिष्ट नारिकाछंद॥
हमएकसमैनिकसेतपसाकौं तवजाईमजे
हिंमवंत रमाकौं बहुभांतिकियौतपकौं
कलिजावै सितकंटप्रसंनभएजगगावै २४
कवित्त उकजरेउदारउरवासहकगएेशाजति
हारिकेसमानउपमानैआनटेहिये सोभि
जैजटानिवीचगंगाजूकेजलउदजेंदकैसी
कलीकैसोदासमनमोहिये नषकैसीरेषा
वेउचंदनसीवाहरजग्रेजनसिंगारहूगरल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा रुचरोहियें सबमुषसिद्ध सिवासोहै सिवजूके
१११ माथ्यजावऊमैपावऊलिलारुलागेसोहियें
२५ श्रीसिव छंद वरुमोगिकछ्रिषराजसपां
नें बहुभांतिचले नपपंथ्यपपाने २६ वसिष्ट
पुजवोपरुमेसरुमोमनइछा सिषवोप्रभदेव
प्रभूजनसिछा दोहरा रामउमापतिदेउनहिं
देहुनेहूपनदेहु देउकहूत रिषकौनसौंसिष
ऊंजाकीसेउ २७ वसिष्ट। तोटकछंद हम
कहाजोनेश्रगप तुमसर्वदासर्वगप श्रवदेउ
देहुवताई पूजाकहौसमझाई २८ श्रीसिव
सुचित्तप्रकाससुमेय सबवेदमानतमेत ति
हिपूजरिषरुविमोडि सबप्राकृतिनकोछोड
२९ पूजायहैउरध्यान निर्वाजपरिपूर्णध्यान
ऐसोपूजथ्यटिकापक जन्नकियेजगप श्रनेक
जियजंनयहैजोग सतुपमेकर्मप्रयोग
सतुपमेकर्मप्रयोग ३० समवसिष समरू
पपूजप्रकाससमसपहूमभेदास यहवच
नकहिपरमान प्रभभपछ्रेनरप्यान ३१ दोहरा

२११

इहिसज्ञा अद्भुतअधिकारि सुनिप्रभुसुनैनाथु
सवैसुभोसुभगासना जानीमैनिजहाथु २२
कलनाछंद इहिभांतसज्ञापाइजीवजुपरम
भक्तकहाइ वहभक्तिरसभागीरथीमहिदे
इभ्रमनिबहाइ मुनिमहाकर्त्तामहात्मात्यागी
महाभोगीहोइ सुद्धबरमैरमोंपत्तिकैसुजहै
सबसोई २३ दोहरा महाकर्त्ता रागद्वेषविन
कैसेहुंउरअवदातनहोइ हर्षसोकउपजैनमन
कर्त्तामहासुलोइ २४ महाभोगता भोजुअभो
जनविरसुरस नीरसुविरससमान भोगहोइ
अभिलाषविन महाभोगताजान २५ महात्या
गी जोकछुआषिनदेषिये वांनीबननीजाहिं
महात्यागीतानिजैकहैजानेकहैंजभैना
हि २६ तोमरछंद जियपानबहुव्याहार
अरुजोगभोगविचारु इहिंभांतहोइसुराम
मिलहैसुतेरेधाम २७ चंद्रकलाछंद निसवा
सरवस्तुविचारुकैसुप्रसंवाहिंयेकरुनाथ
नहै अथनियहसंयहधर्मकथांन परिग्रसा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
११२ साधुनिकौगणहै जियजोगजगैकहिकेस
बभीतरवाहिरभोगनिमांहनहै मनहाथस
दा जिनकेतिनकोबनहीघरहै घरहीवनहै ३ ८
दोहरा लेशजकहियेसाधुनगृहनिलीनेक
हिवाम सवकोसाधुनपकहै रामतिलकोना
म २४ श्रीराम मोहिजहूतेजनाईवस व
हीज्ञानैाँश्राज अवज्ञकहाकीयवनैकहैत
ह्रोकाज २० ५४ इतिश्रीइंद्रजीतविरचना
यां श्रीमतसकललोक लोचन चकोरश्री
रामचंद्रचंद्रकायाजगमहारवर्ननंनामपंचवि
सतमः प्रकासः २५ तोटकछंद बोलेरिष
राजभरथतबै कीजैअभिषेकुअयोगसबै
सहुश्रकलोलुपकौनरहो सिरीरामकेराम
कोननकहो १ श्रद्धाबहुयाउरआनभई ब
लासतसौविनतीविनई वसिष्ट सागताबे
उ विनमोकजवआई अतकी वाततानकहै
मैयहहकी २ छंद जोयजायुकविजाहित
आवै स्नानदानविधकर्मनपावै हैअसत्क

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सबभांतिविचारै कौनभांतश्रमजाहिउधारै २
बुल्लाभुजंगप्रयातछंद जहीविद्यानेउह
पैपरैगो सबैलोककेतापतीनौंहरैगो क
हैगोसबैनामश्रीरामताको सदाशिवहैहस
रउच्चारताको ४ छंद कहैनामश्रापैसश्रा
पैनसावै सबैनामप्रथसवैकेउपावै स
पावैइहलोककोवनेदोउ हियोदंमछाडे
कहैवनेकोउ ५ छंद सुनावैसुनैसाधुसंगी
कहावै कहावैकेहपापपुंजेपनसावै सरा
वैसबैवासनाजारिडारै नजेधर्मकोदेव
लोकेसपावै ६ तोमरछंद जबसबवेदपु
राननसोहैं जपतपतीरथसबमिटजैहैं
हिजस्वधर्मीननकोउविचारै तबजगके
बलिनामउधारै ७ दोहरा मरनकालिका
सीविषेमहादेवकोधाम जीवनिकोउप
देसहैरामचंद्रकोनाम ८ मरनकालकोउ
कहैपापीहोइपुनीत सुधरीहरिपुरजाइ
गोगावैसबजगगीत ९ रामनामतेनरकौं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा जानतवेदप्रभाउ गंगापरुकेपकनिद्यरु
११३ बालमीकमदिउ ९ दीपकछंद सातहृसि
113 भुनिकेजलरुरे नीरघजालनिकोपयसुरे
कंचनकेघटवानिरलीने आइगयेहरिवा
नरभीन ११ दोहरा सकलरत्नसबमंतनका
सुभउँघपीअसेष सातदीपकेपुष्पफला
पल्लवरसमविसेष १२ दीपकछंद आंगनि
हीरमनिकोमनमोहै कुंकमचंदनचर्चित
सोहै हैसरसीसमसोमप्रकासी लोचनसरो
जविलासी १३ दोहरा गजमोतिनसुभसो
भिरामरकतमनिकेथार उदकबुंदसोजन
लसतपुररइनपुत्रअपार १४ विसेषकछंदः
भौंतनिभांतनिभाजनराजनिकौनगनै हौ
रहीटौरसरोजसवैरहे फूलचने भूपनि
के प्रतिविंवविलोकित रूपसने घेलति
हैजलदेवमनोजलमांकचने १५ पद्धडि
छंद॥ मृगमदमिलकुंकुमसुनी चंदनसा
रसहितअंबरउसीर घनसारसहित अंब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रउसीर घसिकेसरसौं बहु विवपधीर छित
छिबके चरथावरसरीर १८ छंद बहुवर्न
मूलफलदलउदार तहोंभरिरायेभाजनअ
पार तहँउप्पहरमोहेअनेक मनहबसर्न
केहगपक १७ तिहूजपररविपकीवितान
देविदेशनदेवनके विवान उअंबोवहोश
मंगलनिधान नृत्यगीतबाजहिंनिसान १८
तरुअंमरुकोआसनअनूप रचिनहेमही
रतिमयविस्वरूप तहँबैटे श्रीमनआनिरा
म सीयसहितरविकुलविरुकाम १९ छंद ज
नकनिदेसिनआनंदवेततरुकल्पककेवा
लीसमेत कियेसविधासहितरधान किये
तयहंजनरसिइसीम २० छंद किविक्रमज
तकीवतकीनप्रवीन किश्रीनाराइनसोभ
लीन किअतिसोहीनसाहासनाथ किसं
दवताविंगारसाथ २१ संदरीछंद। केसव
सोभनछत्रविराजत जाकहदेखिसपाच
कलाजत सोहतसोतितकेमनकेगन लो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा गनिकेजनलागिरहेमन २२ दोहरा सीत
११८ लतासभतासवैसदताकोसाथु अपनीरवि
114 कीअ्रसलैसेवीतजनननिसनाथ २३ सुंदरीछंदः
साहिलिपरविभुत्रसदोरमि चौरविभीषनअं
गदपारत चंदनचंद्रसपावत कीरतलैजग
कीजनवावत २४ छंद लछिमनतुदपनकों
दरसावत पानतिलछमन बंधुघवावति
भरथुलैलैनरदेवसदावत देवअदेवनिपा
इनपावत २५ दोहरा जामवंतहनवनन
लनलनीलमरातवसाथ छरीछवीलीभो
भिजेदिगपालनिकेहाथ २६ रूपबन्हिकम
हरमिसवचनरचनवकुभेव सभामध्यपहि
चानजै नरनरदेवअदेव २७ आईजवअभि
षेककीघटिकाकेसवदास वजेपकहीवा
रभवडडमीदीह अकास २८ उलनाछंद
तबलोकनाथविलोकिकेरघुनाथु कोनि
जहाथ सवमेवसों अभिषेककेपनिउच्चरी
सभगाथु रिषराज२९ वसिष्ठमोंमिलगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

दिनंदनग्राइ पुनबालमीकवियासग्रादि
जितेङ्गतेरिषराए २६ रघुनाथमंभस्रयंभ
कौनिजभक्तिदीसभसाज सरलोककोस
रराजकोदियदीन्ह निर्भयराज विघसौंरिषी
मुनिसौंविनौंकरिपूजग्रतपरिपाइ बहुया
दूरंतपहुडकीसबासिइश्रीसभग्राइ ३०
दोहरा दीनौंमऊट विभीषनै ग्रपनौग्रनौ
हाथ केटमालसग्रीवकौंदीनीश्रीरघुना
थ ३१ चंवरीबंद मालीश्रीरघुनाथके उर
सुभसीतन्हिसोदई ग्रर्पियोहनवंतकोंत
बहप्रकैकरुनामडी ऊरदेवग्रदेववानर
ज्ञाविकादिकपाइयौ पकंग्रगदबडिके
जोइज्ञासके उरग्राइयौ ३२ ग्रंगद देवहैन
रदेवहैवानरनैरिसादिकवीरहै भरघल
छमनग्रादिदेरघुवंसकेसबवीरसै ग्राज्ञ
मोसहेंज्ञइमोडे पकपकग्रनेकके वाप
कौनबहोतिलादऊदेउजीवविवेकके ३३
श्रीराम॥कोऊमेरेबसकौंकरिहैनमसौं।

रा जइ तबनेरो मनहोइगोग्रंगादहूमसौमहइ ३४
115 दोहरा विपसौंपाइपधारिकैरामजगतकेनाह
दीनेगांउसनौडीयनिमथुरामंडलमाह ३५ इति
श्रीइंद्रजीतविरचितायांमनसकललोकलोचन
चकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रकायांश्रीरामराजा
वर्तनंनामछठीसमहः प्रकास २६ ललना
छंद ब्रह्मवाकः नमम्रादिहौजग्रनादिसर्व
गसर्वदासरवगय ग्रवएकहौकिग्रनेकहौम
हिमानजानतग्रगय ग्रभिवौकरैजंगलोकचो
दहलोभकोहसमद रचनारचीतमताहिजो
नतहैनवेदनरुद्द १ श्रीस्वयंभ दंडकछंद ग्रम
लचरितनमैंबरनिमालिनकौसाधुकोहैसा
धुपरदारपियप्रतिहौ पकथलथिनपेवसत
राजजनजीवकेसोदासद्विपदपेबन्धपदगति
हौं भूषनकामकलजनसीसपरेंभ्रमिभारुभू
पपरफिरनसभ्रमतभवपतिहौ राधौगाइवो
भजनिरामचंद्रसिंचसाथविरुविरुराजकरौ
ग्रदभतिहौ २ छंद वैरीगाइवोमनकेयेध

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

निमैं सुनियत कपिकुलहीके सुबरनाहरका
ज है गुरुसेज गौनमीपकबालकै विलोकियत
मातंगनिहीमतवारेकोसोसाज है अरिनग
रीनप्रतिहोत है अगम्यागौन दुर्गनिहूंकेसो
दासदुर्गतिसीआज है देवनाईदेषियतगरु
निगढोईनियौं विरुविरु रामचंद्रजाकौऐ
सोराज है ३ पितरकवित्त बैठेपकब्बत्रनर
बाहुसबछितपर सूरजकुलसुसुनाहुछित
मोतिहौं हीनवामलोचनकहतसबकेसो
दाससुविधमानलोचनहैदेषियत अतिहौं
अकरकहावतिपैयत षटपदैदेषियत परम
हिपालपैं हुपानकरपतिहौं विरुविरु
राजकैराजारामचंद सबलोगकहै नर
देवदेवदेवगति ४ अगिन कवित्त चित्रहू
मैंआज्ञवर्त्तसंकरविलोकियतव्याहहूमैं
नारिनकेगारिनसोंरविलोकियतव्याहही
मैंनारिनकेगारिनसोंकाज है भुजैकंपजो
गीदंडचक्रहैंवियोगीद्विजराजमित्रदोही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा जहांजलजससमाजहै मैंगतौ गगनपर
११९ गाजततनगरूदेर अपजसडरूजसहीकोलो
118 भभ्राजहै उपंहीकौषंडनहैमेंडन्न सकलज
यविरूजियौरांमचंद्रजाकोपसोराजहै ५ वा
मदेव राजारांमचंद्रतमराजद्रसजसजाकौं
भूतनकेआसपाससागरकौवाससौ सागमैं
बडभागवेणुसेषनागकेसौसेषजूमैसदा
नविसकौनिवाससौ विश्नुजूमौभवभाव
भवकौप्रभावजैसौभवभूजेभालमेविभूत
कौविलासकौ भूतमारूचंदमैंसपाके
छ्रे सुम्रसनिमैकेसौदासचंद्रकाप्रकाससौ
देवगन राजारामचंदतमराजकरौसबा
कालदीरघडसरूडषदीननिविदारिराके
सौदासमित्रदोषीमेंगोदोषीब्रह्मरोषीदेव
दोषीराजदोषीदेसनीनिकाविप कलही
कुनअमहिमंडलकेबडबंद पाषंडीअष
डीषंडकरिडाविप वंचककटोरटेलकीजे
वाटभाट आटरूटटकंटफारिकाटिकाटि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ह्वैहौं मौनि श्रमित्र चलनजब बैगोनकौं
लैचतदलचलतंग देवसत्रु हिचलेजीतनिबौ
वानरसेन भूलहुंजाननननिरूवतियरूसगि
रनिसमान निगरदेषेंभपगिरगेनजलधि
मेंजैंपान जननजननितरतसवजूडीट
डोलतडीट सपमागरपारदैपगप्रगटपो
हूनपीठ वाजगजरथवाहिनीचढिचलति
अमतिसभाई लंकलैनिरमेकनीकेगयप्र
पनेपाई जगफलफलगहनजननिजगपु
रपऊहाई वेरिजूटेदियेसबरीभक्तियोसु
पुपाई ऊसमगिंडकिलगतकापतमेंदलो
वनमूदिलोवनमूल समरसनमपुसहे
हुंसिरूसिमेलअसिसरहल हूरकुबतनद
घाटरसनदयादरमनहैहृदसपदंस भई
बा रनकरतरांवनिराजकौंनिरबंस वो
नबैकछिग्रांनकोलगेनोउ अपनेलेत का
लकौंविपुग्रापुहृतिजपतिलऊगेरहिंदेत
पेन्नाकालनिदेतविप्रनितोलतीकनेकसत्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा 116 सोदरु कौंदईसबसनैह्नीकीलेक होईसक्र
115 सुजाइस्नकौमरत श्रावैनोम सकृपङ्कनभ
यौवानरमेरेकरसंग्राम पङ्कपलविनपान
षापवारबारजम्हात बरघचौदह्नीदम्मुष
पिपासस्रापीगात ब्ह्मैवकचावराधुश्रप
नौकोटिकोटिकराल श्रपराधुश्रायुनब्रह्मे
गोद्विजदीनिकोह्नितकाल जदपिलब्रह्म
नकरीसेवासर्वभावसमेत तदपिमोननिस
र्वथाकीरसवच्छहीमेंहेत कहूतइस्नषौपर
मसोचेसकलरोनाराइनतनकसेवादासकी
कहेकोटभानबनाई डरतपकश्रलोकेतेरा
जीतचौदीह्नलोक टौरजाकरूकहूनताक
ह्नेदेत श्रपनैलोक ब्काडिपितरुविसंकहे
विपरीतजद्यपिदेहु श्रविपकेसबगपस्रकर
स्वांनस्वर्गमदेहु पङ्कपलउरमांफश्रापहु
रतसबुसंसार श्राइकेसंसारमैननिरहो
सूनलभारु सेषुसंभस्रपंसुगावतिनिगम
नेतनिगीत नाह्निलह्नुमतिवरनिकैसेंकहे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मातिप ७ कखगन भोगभारभागभारके
सुवविसनभारभूरिअभिषेकनिकेजलसे
दोनभारमांनभारसकलसपानभारछनभा
रधर्मभार अपनअमलसे नयभारजसभा
रराजभारराजततहैरांमसिरआसिषअसष
मेत्रबलसे देसदेसमंत्रजेत्रदेषिदेषितिह
उषफाटतिहैंउहनिकेसीसदालोंफलसे
८ केसवदास विजयछंद जाइनहीकरत
नकही सव श्रीसविनाकविनाकहिहा
रैयाहीनेकेसवदासअसीमपटै अपनौ
कारिनैकनिहारे कीरतिदेवनिकी उल
हीजसहलरू श्रीरघुवीरनिहारे सातरसा
तलसातहूंलोगनिसातहूंसागरपार वि
हारे ९ किंनरजछगगंधर्व अपसरारांम
लीला रामलीलाछंद अजरअमर अनंत
जयजयचरितश्रीरघुनाथ करतसरनरवि
दअवरजअवनिसनिगाथ मनोवचक्रमने
मनिरषतिसिला समपवनारि सिलातेपति

511

रा
११८

परमसुंदर वारनिनैकानिकारि चौरद्वार
तिनानउपर पांनपीडाहोइ बिसडंडग्रैंको
दंडहरूको दंडकीनौंदोइ साधुहोहिं असा
धुराधति द्विजनिंहीकोमांन सकलमनग
नमकटमनिकैमरदियषअभिमांन सुरसुंद
रमरसरूचिरतिकरनिरतिकहूंलाल पक
पतनीवत्तनिबाहतमदनकोमडचाल सु
षदसुहदसुष्तमोदरहूननन्दपजिहंकाज
पलुकभैंमोईराजबायोमानपितकीलाज
मैघरमेंमोडमांननविपनपटयेटेल सप
नखाकीनाककाटीकरनआपकेल विद्युचाप
तिश्रांगरीसूकरोंचलेनदराई बंधुसहितक
बंधकेअमध्यवैटनेधाई सर्वध्यासर्वगपस
वैगसर्वदारसपक अगपजोंसीनाविलोकी
विग्यअमतिअनेक लनचूकनिलहाकौ।
कीगनेकेनकिबार नालसानौवेपिपासर
पकपकहीवार सापरायअसायुअनिसद्री
व कीनौंमित्र अपरायविनअनिसाधुवाली

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

जनु इंद्रजीत दोहा इन्हि विपत्तौ दहू भवन
के गावत जगजस गाथ प्रेम सहित पहिप
इकै विदा करे रघुनाथ फूलनाछेद अभिषे
क की यह बात श्री रघुनाथ की न रु कोई पल
एक गावइ सा इहै वद्ध पुत्र संपति सोई जवि
जाहि गी भव भावनो भव विस्रम क्ति कहाई
जे सराज के सिर पाउ दै सषु लोक लोक निजा
इ इति श्री इंद्रजीत विरचनायां मन्तकलले
कलोचन चकोर चिंतामणि श्री रामचंद्र चंद्रि
कायां श्री रामचंद्र राज्य श्री वर्ननं नाम सप्ता
ईसवहः प्रकास ॥ भुजंगप्रयात छंद ॥ अ
नेता सबै सर्वदा सम्पजन्ता समग्रावधी सम
ई नविं मक्ता सदा हूब फूले फले तन्नसो हैं ॥
जिन्हे अन्नपीकल्प साषी विमोहे । छंद स
वै नि भृगा पीर के एवसी भई कामगे गासी स
वै पेन हूंरी सबै बाजसर्वाज से ते जरूरे स
वै सर्द तिसे दर्प रूरे २ सबै जीवते सर्वदा ने
दरुरे कंसजन्मी विकामी मापहरे जवासर्व

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा ११५

119

दासर्वविद्याविलासी सदासर्वदासर्वपतिसो
भाग्यकासी ३ चिरंजीवसंयोगजोगीअरोगी
सदाएकपत्नीव्रतीभोगभागी सवैसीलसौं
दर्जसैंगंधपारी सवैब्रह्मग्यांनीगुनीधर्मचा
री ४ सवैदानस्नांदिकर्माधिकारी सवैसत्य
वातर्जेविनाप्रहारी सवैपुत्रपौत्रादिकैसंघ
साजै सवैभक्तमातापिताकेविराजै ५ स
वैसुंदरीसुंदरीमाधुसोहै सतीसीसचीसीजि
नेदेषमोहै सवैप्रेमकीपुंन्यकीसग्मनीहै स
वैविरकीपुत्रनीधर्मनीहै ६ अमैंसंअमीजः
त्रसैकेसमोकी डहैतीडषीतैनपातापधा
री दलिद्रदलिद्रीविकारैविकारी ७ चौपाई
हामधूमसलनाईजहां अतिचक्रचलदलई
तहां वालयामरूचूडाकर्म तीब्बननाआई
धुकेकर्म ८ छंद देतजनैऊभिक्षादान ऊ
टिलचालिसरितांनिवधान आकरवैद्विज
ब्रह्मरूवै कोकिलऊलधुनिपरहवै ९ छं
द। फागुनिलोकनिलजलेमिले जवादिवा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रीकौप्रदेषियै दिनउटिवेह्रोईमारियै षल
तंह्रीमेंकौंहहारियै ९ दंडकबूंद माचैज
ह्रोविभचारीवैदेरमै परनारीछिजेगजदंड
धारीचोरीचितचीरकी माननीनहूंकौमन
मानिपतमांनभंगमिंपुह्रीउलंघोजातजो
तहैसरीरकी मूलैतैअधौगतनिपाव
तिहैकेसोदासमीचह्रीसौंहैवियोगरुब्या
गंगानीरकी बाध्या वासनानिजानिवि
जवाहैवाटकाकरोभीरीनराजनीतराजे
वचुवीर ॥ दोहरा कपिकुलहीकौं श्रीफ
लनिकेअभिलाषसमाज निपिहीकौंब
पहोतहै रामचंद्रकेराज २ लूटिबेकेनाते
पापपहनतैलूटियततोरिबेहू मोहतरु
तोरिआतिपतहै चालिबेकेनातेगर्वचा
लियतदेवनिकेजारिवेकेनाउअपिजेघ
जारियतहै वाधिवेकेनाउतालवांधिप
तिकेनाउतालवांधियतिकेसोदासमारिवे
केनातेतोदारिद्रमारियतहै राजारामचंद्र

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा जकेराजजगुजीतियतहारिबेकेनींउश्रानिजन्म
१२० हारियतहैं १२ चंद्रकलाछंद ॥ सबकेकल्पत्र
120 रुकेवनहैं सबकेबखारनगाजतहैं सबकेद्य
रसोहतदेवसभासबजयडंकभीवाजतहैं नि
दसिद्धविसोषघ्रसेषनिमोंसब सबलोकसबै
सुषसाजतहैं कहिकेसवि श्रीरघुराजकेरा
जसबैसुरराजसेराजसेराजतहैं १४ दंडकछंद
जहांहीमेकलङ्कलङ्कनारिनैननिमेंऊरूप
है ऊवैनलेसुसबकेवयनकौ पापनकीहा
नडरुगरुनिकोवेरीकाम श्रागि सर्वभर्व्वी
डषुदाहऊ ग्रयनकौं विधांहीमेवाडवज्ञनाह
ऊवारिभ्रराऊजारजहैं हनवंतउदियनको
श्रांषिनञ्रांछिनग्रंथनालिकेवकटिकसुपेसो
राजाराजेरामराजी वनयनकौ १५ दोहरा
ऊटिलकटाछकटोरऊ चराकोंडषीश्रदेव
डसभावसेषमेंबांभनजातिश्रजेव १६ तोम
रछंद बहुसहवचकमोनिये श्रलिपस्थिते
हरिजानिये अरबोहरंश्रपदेश सरषडगानि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

देयमित्र १७ सोरठा गुणनतजिगैगनजाल
ग्रहतितिनिरषतिचालनी पुंछचलीतिहका
ल पकैकीरतिजोंनिमें १८ दोहरा देवद
लोकसबलोकमयमत्यलोककेसाज सप्त
दीपवतिमहिवसीरामचंद्रकेराज १९ दोहरा
रा दसअहससोदसबरषबसावसीइहसा
ज स्वर्गनर्ककेमगथकेरांमचंद्रकेराज २०
इतिश्रीइंद्रजीतविरचतायांमत्सकललोक
लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रका
यांश्रीरामराजावर्ननंनाम अष्टताईसवोप्र
कासः॥ चौपाई एककालश्रुतिरूपनिया
न षेलनिकौंनिकसेचौगांन हाथयुन्दसु
सरमनमथुरूप संगपयादेसोदरभूप १
जाकौंजबहीआइसहोई जाइचढैगजबा
जतिसोइ पसुपतिसेरधुपतिलेचिये स
हांसेनअनगनतदेषिये २ वीथीसबअस
वारनिभरी हयहाथिनिसोंसोहतघरीतरु
पंजनिसोंसरितनिभरी मानहुंःनिलनसमद

रा हिचली ३ इहविपरीमगापचौंगोन साव
१२१ ससबमूंससमान सोभनपककोसपरमान
रवीरहचिरतामैचौंगोन ४ पककोदरबुना
घुउदारु भरघुहसरीकोदविचारु सोहति
लीनेहाथनिबौरी कोरीपीरीरातीहरी ५
देषनिलागैपोसबुजगुजाल डारिदयौभवगो
लालाल गोलाजाइजंदीजहहजबै होतति
नैतितहींतितसबै ६ मनोरसिकलोचनरु
चिरचैः रूपसंगबङ्गनाचनितबै लोकला
जबोइतिग्रेगग्रेग डोलनिजनजपसनिके
संग ७ छंद गोलाजाकेआगेजाई जैसेत्रि
पगनकोपतिरप सोईताहिचलैअपनाई
जिदिपापीताहीकोभए ८ नैकौजबहूंटालि
नपावैसोप इननेउनउननैइनहोइ कोमलो
भमदबप्योअपार मानोंजीउभ्रमैसंसार ९
जहांतहांमारैसबकोइज्योंनरूपचविरोधीहो
३ चरीचरीप्रतिटाऊरूसबै बदलनचाहूनचा
हनतबै ९ दोहरा जबजबजीतेहालहरितब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नवव्रजतननिमानहूयगायभूषनभूरपटदी
जीतलोगनिदान ११ दोहरा नवनितिहिंमम
पायकवैताल पढौगीतगुणब्रजविसाल गो
लनिकीविनतीसघपाइ रांमचंद्रसौंकीनीआ
इ १२ दंडकछंद सबकीसुरविनीसुरेपरमें
नतनवापुरीवेहरिहूंतेपाइनपरतिहैं दव
निकीडूबनीसीगबग्रंतरिब्रमगपवम।
कीपब्लीपवाहीनय छिमेंडगनहे उतर
केदेतहैंजहूंतमसरतसरनागननिवातनि
उताइलीउताब्रउतरतहैं गोलनिकीसुर
तिनिदीजेजू अभयगतिरांमवैरूकहाकहौं
विनतीकरतिहैं १३ गोलनिकीविनतीसा
निईस द्वरकौंगमनकस्योजगदीस पुरपे
टतिवहूसोभाभई वीथीअसवारनिभरि
गई १४ मांनौमेनमिलसहितउछाहू सरि
तनकेफिरचलेप्रवाहू नेहीसमैंघोसहडरि
गयो दीपउदोतनगरमैंभयौं १५ नषतनि
कीनगरीसीलसी किपौअवधिदीवारीवसी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१२२

नगरु असोकहबकरु विरचो असमपुदेषि
प्रफुल्लितभयो १६ अपअपपुनिरूपप्रकास
वलनदीपदेषितप्रकास वौकोदैजनअपने
भेव बढ़ेदेवलोककौदेव १७ वीथीविम
लसुगंधसमानहुहदि सदीसनिदीपप्रमी
न महाराजकौसहीतसनेह निजनैननि
जनदेषतियेह १८ उहदिसकेप्रभुदेसतिमा
ई राजसभामहिवैठेजाइ पहुपकन्सिवी
नतिन्हि विनतीकौसकआपनहौ १९ सऊ
हरिप्रियाछंद ॥ पौढिपठकपानिपानदेवदे
वबंदचंदकासमेतपौटियेचित्तदैनमोहैस
नैससमतिसमतिसेगवचेतविरहकिन रंग
आनंदमयअंगअंग सकलसषनिमोहै ल
लितलतनिकेवितानसभमवहेदकैउदासअ
मलकमलकोसवास आनिवासकीने त
जितजिमापाइरैनभक्तिपवरै अनंततनय
पदकरिनघनबयनमानअमनदीनै २०
चरचरसंगीतगीतवाजनवाजे अजीतकौ

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सरूप आगमजनहोतहैवषाप राजाभ
वनआसपासदीपहव्बकेविलासजगत
जोतजेवनिजनजोतिवंतआप मोतिनम
यभित्तिनईचंदनचंदकासमईपंकअंकअं
कितभवरूपभेदसोकरी मोनोमसिषंड
तिकरिजोंन्हजोतमंडतिश्रीषंडमेलकोअ
षंडसहषमंदरीदरी २१ पकदीपदिदिभात
दीपतिमणिदीपपांतिमानोभवरूपनेंञ
मेत्रनिमेंराजे ओरेमनिषचतषरेभाजनव
हवहभांतिमरेराषतयहथहअनेकमेंनो
मोनसाजे अमलकमलजलनिपानमोति
नकेसभवितानतानरपालिकाजराइजादि
नजीउहरषे कोमिलतननरूवमालनन
सषकीसेजलालमनोसोभसवजपवसपा
विश्रुवरषे फूलनिकेविबषहारपारे उ
दमितसदरीविचमनिसांमपाति उपमा
सषभाषी जीसोसत्रुजगतजोनिसमसें
हिवहारिमांनमनडूमदनपनषनतेंग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा नउनारिराषी जलदलिफलि फूलभरिग्रंबर
१२३ पटबासभूरिसब्र्जेब्र कर्दमजियदेवनिग्र
भिलाष ॐकमऊँॐमाजिवादिम्दगामदकर्पू
123 र ग्रादिवीरावनितनिबनाईभाजनभरिराषे
पेत्रगीनगीऊमारि ग्रासुंदरीसुंदरीसुनारिबि
बर्धबीमकिंत्रीनकिंत्रीवजावें मानैंनिरू
कामभक्तिमक्ति ग्रापश्रापनीनिदेरूनिघ
तिप्रेमनिभरिभरिजनभेदगांवै सोदरसावं
नसूनमेनापनिदासहूनदेसकेनरेसमेत्रमि
चलेषे वहूरेसरग्रसर सिद्धपेडनगुनगाए
प्रसिद्धकेसबबहूराइराजलोकुदेषे २४
दोहरा कहिकेसबसककेवचनसुनिसु
निपरमबचित्र राजलोकुदेषनचलेरामचं
दजगमित्र २५ नराजलोइ सुदेस ग्रासपा
स राजलोकुकोउदेषिप रचीविवावनाचि
पोरूप्रवादिलेषिप सबेसपकपोरसिंह
पऊंदतिराजहै सपऊराजवाजपऊनदबधु
माजहै २६ दोहरा पांचचौकमध्यकहिरचे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मानवैकतनरहारि षट्रुपरतिनकेरचेविचे
चित्रविचारि २७ चामरछंद भोजपकचो
कमध्यहमनेरचीप्रभा तीसरेविचारिमेत्र
भेरनूसकीसभा मध्यचौकमैंतहांविदेह
केनृपकामसे सर्वभावरामचंद्रलीनसर्वदाल
से २८ दीपकछंद भेदलुकेंचनकोइकसो
है मेनतहांछबरीमनमोहै सोभतिसर
षमेरहमानो सुंदरदेवदिवानबषानो २ ५
मेंदललालनिकोमनमोहै सोमनहो
छनरीइकमोहै नाहियथैउपमोमनुसा
जै सूरजश्रंकमनोमेनिराजै २९ मेदलिनी
लनमेंश्रतिभारी मेनतहांछबरीसुषका
री मोनहंहंसनिकीश्रवलीसी प्राविडका
लउडाइचलीसी ३० मेदलमेनलसेश्रति
भारी सोभितहैछबरीसुषकारी मानहु
इंद्रकेसभमोहै सुरतियाचवकीमनमोहै
३१ तोटकछंद सबपोमनिमैं इकपामव
नौ श्रतिसुंदरसेस्वरूपमनौ मनिसूरहहू

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा स्फटिमंडलमें परिपूरनबैठमनौंबलमें २३
१२७ चौपाई बहुधामंदलिदेषभूले देषनिस्फटिकमा
लिकाचले मीतभीतज्यौंनेकनत्रसे बलक
वसनमालामेंबसे २४ जलमालाजाचक
ज्यौंरप इलिज्यौंगंधिमालिकागाए निप
टिंकज्यौंसोभितभए मेवाकीमालामेंग
ए २५ मोतिनीनकेमेमनभेव गंधमान
मालामेंदेव सभसिंचारसालाकोंदेषि
उलटेललितनपनसेलेषि २६ मेत्रनिज्यौं
वैठेसषपाई पलऊमत्रमालामेंजाई बन
रचोरसेसोभतिभए पवनीपरुपनमाला
गए २७ तोमरछंद नबरावरमेंरघुनाथ
गए बहुधा अवलोकतिसोचभए सबचं
दनकीसुभसुरकेरी मनिलालसिंसानिस
पारिपेरी २८ बरगाअतिलालसुचंदनके
उपजेवनसुंदरनंदनके गजदंतनिकीसुभ
सीकनई तिननीचनबीचनिसुस्वनंमई २९
तिनकेसुभबातनबोजतहैं [illegible]लासननी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लबिराजतहैं अलिहेत्रतिथंभनिकीडगरै
गजदंतनकेवनविद्रुमई तिनमोफलमैंबं
द्रुमाइनकेसभकेवनफूलजराइनके ४०
रूपमालाछंद वर्नवर्नजहांतहांबहुथान
तेसवितान जालरैमुक्तानिकीअरुझूमका
बहुमौन चौकटैमनिनीलकीफटिकोनि
केसुकपाट देषिदेषिजहांनहैंसबदेवता
जनभाट ४१ छंद लेतपीतमनीनिकेपर
दारवेलविलीन देषिकेमाईदेषीराजनलो
ललोचनमीन सथहीरनिकेसुअंगनिहोंहि
डारालाल सुंदरीतिनिफूलहीप्रतिविंबके
तहांजाल ४२ सागताछंद धामधामप्र
तिभासनसोहै देषिदेषिवहुतापसुविमोहै
वरनिसोभकविकौनकरेजू जत्तनश्रमन
भूलरहैजू ४३ दोहरा जाकेरूपनरेषरंग
जानतवेदनगाथ रंगमहलमैंरामगोरा
जश्रीहरिकेसाथ ४४ इतिश्रीइंद्रजीतवि
रचितायांमनिसकललोकलोचनचकोर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा चिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रकायां राजश्री
१२५ मंदलिवर्नने २४......

चनषादीछंद

इतिरंगमदनकेमदसवदनकीवनैमतिन
विचारी अघउत्तरपरानीरंगमंच्यानीरुविवद्र
तो सप्रकारी चित्रीबद्रचित्रनिपरमविचित्र
निरधुपतिन सद्राप सवदेवअदेवनिअरुन
रदेवनिनिरषिसिरताप १ छंद नरूआई वं
निबालाउनतेनमालाभूपिबलरूपनिवा
री सुभजातिविरची विश्वे रहतेंनिकाभिम
ईजनदाकी मानोंगनिघगानियों प्रतिअं
गनिरूपविराजे वीनानिवजावै अद्भुति
गावैभिभारागिनीनाजे २ दंडकछंद॥
अपयेनघाइनविलोकिपतिघपलनय
नौंसबकेतिमाइप्रगटुप्रमानहै मोंहम
नमूलेननैननिदनहारूसरूषसोभूपा
चहृषमारनविघानहै आगाम अगामन
तमोपिसबजेत्रमेत्रनिगमनिवारिबेकों
सबअयानहै बातनिकीतनतानअभि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नशमानमवरीकरांमदेउकोमदेउकैसेवा
नहै ३ पद्धडियाछंद सबग्रामनादिनि
नातिसितालसुर्गंवर्गविपिलजतिका
ल बद्धकलाजोतिमखछाजोति दंडलाग
शमेकागनननवितहोति ४ छंद बद्धवचन
विविपिग्राकामचालिमधुनालि चारुग्र
विमदचालि वद्धउरपतिरपि नीवडिग्र
डाल ग्ररुजगडादवविसंगजाल ५ छंद
नालतादेकी ग्रलगमसडिडपदपलटी
द्धरामिनसेकरिउ सवतनिकीअमीदेषिम
तिथीरु ग्रमसीभजमनहै पासमीव ६
मोटकाछंद नावेरसवेषग्रमेषतवे वरषे
विरसेबद्धमांनसवै नोहरसमिग्रतिभाव
नचैं कोउनहिहालिनिभेदवबै ७ दोहरा
पाउपमषाउजनालमोग्रतिधुनिसनिपत
गीत मोनीविधुमतिपठनमनतसंगीत
८ दोहरा ग्रमलकमलकविग्रंगवीसक
लगुननिकाभूवि नागतमकुमदंगमधस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा दरहतभरिस्रुति ॥ दोहरा कोटिभांति
८३९ मेंगीतसुनिकेसबश्रीरघुनाथ सीताजू
126 केयहमागहेशीतकोहाथ ९ सुंदरीछंद
सुंदरमंदलसैंमनमोहति सवैसिंगासन
उपरसोहति पंकजकेकरहाटकमानहुं
हैविमलाकमलायहजानहुं १० छंद रू
लनिकोसविवांनतसैंबर केचनकोपति
काईकतातर जोतिजराजसौ श्रुतिसोभन
सुरजमंडलतेनिकसौजनु ॥ कुसुमवि
चाछंद दसमतसौनेंननिरुचिबनै बसन
बिछापसबसुषसने श्रुतिसुबिमोहकबहुं
नसनै जनुतारतिकरि ससिलैउने ११ चौ
पाई चंपकदलकेगेंडुवे सुमनहुंरूपकेरू
पकडुवे कुसुमगुलालनिकीगलसुई वर
नीजातिननैंननिछुई १२ दोहरा रामचंदरम
नीपश्रुतितापरपोढेजाइ पदपंकजपषिरा
इ कैकहिकेसबसुषपाई १४ तोमरछंद॥
तिनकेरूपनरेष तहांपोडे हैनरेषतिसना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सिगैगतिहुवार वहवदिवालीनहारि ४
देहरा राजलोकजागो जवेवरंराजनके
मोर गपजगावनरामको मासिकाहिजगि
मोर ५ मासिकाखेउ हरिरायाखेउ जा-
गिपविलोक देवदेवदेवरामदेवमोरमु
योमुमदेवमतिदरसपावे ब्रह्मामनमे
रवदनिविसुचितवातिकयनरुद्दह दय
कमलमितजगाहगीतगावे गगनउदि
तरविग्रनंतसकादिकजोतवेत छिनछि
नछविखीनहोतलनपीनतारे मानहुं
परदेसदेसव्रलदोकप्रवेसटौरटौरतेविला
तजातभूपमोरे ६ खेउ ग्रमलकमलि
नजिग्रमोलमधुपलोललोलवेटतिउडि
कुरीकपोलदानमानकारी मावौमनि-
गंगनहइखोडिकोडिग्रहसमुइसवति
सिरगानप्रासइसिइयारी तरुनाकिरनउ
दतिभइदीपदेहमलनिगण मदरहदय
वोयउदपओंऊवुपिनासे चक्रवाकनिक

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा टगईवकईमत्रमदिनमई जैमेनिजनोन
१२८ पाइजीउजोनभाखै १८ प्रकनतकनकेविला
सपकदोइ उड्याचाममकालिकैमेमंनतदिम
निग्रंतईमराखैं देमनयानेडकेडनिमवि
नडनिमंइवडजोप्रवीनपकहपुनवतिंहो
नैदीनभाखै निमविरकेचर विलाननकरके
प्रकामत्रामनामितनमभावे मलनमम म
जलयात पुनभमैलमेविलान थावति
ज्यौंमषवरोमनोंमम्हपतिहावे १५ मारो
तकमममराजकेकीकोकलनमालवोल
नकलपावावति भवमेद गनियै मनो
प्रपंनीप्रपंनीगरदंदेनपटपमम सनिय मो
दमहतमंदमिचारिमतहिमकेनरपवविचप
डतिमनिकविशमिइमिरहारवहोके गम
वेद चेद्रअरमोनंइ विनवतिचकोरकव
लयानिमलपिजोवचौपचिनमाके २८ न
वनकविरववतपकजावक गनगनविमे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छ वारनमागपप्रतापविरदविंदटेरे मा
नौमहूकमोरचातिकवयकवतमोवनडि
तवमनमज्जतवनस्पामहेततेरे केसवम
निववनचारुजागेदमरदजमारकृपप्यारे
आइलीननलथलजनगेवके वोलहति
विलोकवीरमानिदानिहरीपीरि मूरे आभि
लाषलाषभानभांतिलोकिके २१ दोहरा
जागतश्रीरघुनाथकोवजेपकहीवार
निगरनगारेगरकेकेसवआटह्नहार २२
मरहटाछंद दिनइशनिकेदनश्रीरघुनंद
अंगनआपजानि आईनवनारीसवीन
सिंगारीकंचनकारीपांनि दासीनिकव
तिहै मननिहरति ह्वैवारवारचनमार
सनिसतिविपसकनिप्रतिगहूकनिडा
रतयहूतअपार २३ दोहरा संध्याकसि
रविपाइपरिवाहिरआपरांम गनिकावि
किसनिआशिकावेघुनिकियोपनाम २४
छंद सतिमेंत्रमिरकीन्हपवीत्रकीर

रा
१२८

पतरावतबात सुनिजाविकजनकेपरूपंछी
नकेगुनगानिअनिअबदात सभतंमंजनअ
स्नानदानकैपूजेसुरनदेव मिलिमेंगीसुभे
दकंबंधुसहोदरकीनोंभोजनभेव २५ दोह
रा दंडकछंद ॥निपटनवीनरोगझोनवङ्क
छीनलीनपीनपीनपंचनतनयरूदनहैं
तामेंपंटीपीटलागेरूपकेसुरनिडीटसर्न
हीकेष्टगदेषिआनंदभरतहैं कांसकीदोह
नीस्यामपाटकीललितडोरीघंटनिसोंसूजि
पजिपाइनपरतहैं सोभनिमनैटिपनरा
मदेउनितधनिगोमहसदैदैतबभोजनकर
तिहैं २६ मोटकछंद तहंभोजनश्रीरघु
नाथकरे षटरीतमिठाइनविनपरे धनि
धीरतिवैविधभोजनबन्यो नहिंकीनषका
रनिमैभमसेनें २७ छंद षटभांतिपरूसीन
बनाइरवी धुनिपांचसहाविजनरीतसची
विपंचसहोरटनिमागतहैं त्रिपपांचव
रायनरागतहैं २८ छंद विपपांचबनाइ।

किए प्रुनिकौंयतिहैंविषमानपनें प्रुनषा
रितिहैंविषस्वादघने २९ दोहरा पांचभांत
सोनारिसभषट्रसरुचिरप्रकास भोजन
केरघुनाथजबोलेकेसवदास ३० हरिलीला
छंद वैठेविसदयरुआंगनप्रयग्राइ देषी
वसंतरितिसदरमोददाइ सोभेरसलऊलाः
कोमलकोलिकाल मानोंस्वनेगाभुजिरा
जनिश्रीविलाल ३१ छंद फूलीलवंगल
वलीलतिकाविलोल बोलेजहंसिसुऊ
कोकिलकोकराज फूलेजहांभ्रमरविध
भमतडेलमनोवसंतभटबोलेजरकाज
३२ छंद सोहैंपरागवह्वभागऊडेसुगंध
जानेविदेसविरहेजनहोतअंध पालास
मालविनुपत्रविराजमान मानोवसंतदि
प्रकासहिंअग्निवान ३३ विजयछंद फूले
पलासघलीजविलासनिकेसवदास विला
सनिघोरे सेषप्रसेषमषानलकीजनुजाल
विलासवलीदिवगोरे किंसऊश्रीसजानेड

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१२५

निकी करि बिरा चेरु मानत लमैं बिनचोरै बिंबुनि
चोंप चहूंदिस गेलति चार चकोर श्रेगारनिमो
रैं ३४ मनोयदासा जरेबिरहे जनज्जवनगा
त धरैडरसीतलसेजलजात मनौंमनमौननि
कौंरघुनाथु पसारिदियोजनमन्मथुहाथु ३५
निहै नरनागर लोगविचार सवैबरनैंरघु
नाथु निहार किधौंपरमानंदकौ यह फूल वि
लोकनिह्मीजजरेसबसूल ३६ छंद किधौंवन
कौंमधुमाससच्यौंजगलोचनभौंरविलास कि
धौंमधुकौंमधुदेतसुनंग धस्यौ मनमीननि
कौंरजसंग ३७ किधौंरतिकीरतिबोलनिकुं
ज बसैंचनपंडनिकोजहसुंज किधौंसरसी
रुहमंडपरंस किधौंउदयाचलकेसिरहंस
३८ दोहरा प्राचीदिसतैंसीसमैंप्रगटभयौनि
सनाथु वर्नततांहि विलोकिकैं मितासौनाना
थु ३९ हरनीछंद फूलनिकी सुभगेंदुनई है
लचसचीजनुडारिजई है दर्पनसोससिश्रीरति
कौ श्रीसन कौं ममहीपतिकौ ४० छंद मो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तिनकौ सुतिम्भ्रमभानौं मूलगई रविकी ९५
त्रियमानौं अंगदकौ पिनसौ सूनियें सोहनु
नारहिं संगलियें ४१ छंद भूपमनौ भवब्र
त्रुपलौ लोकवियोगनि कौ विवलौ देवनदी
जलरोमकलौ मानहुं फलसरोजरलौ फेंन
मनौ नभसिंधुलमैं देवनदी जन्हु है सबमैं ४ २
दोहरा चारुचंद्रकासिंधुमैं सीतलस्वच्छस
तेज मनौं सेषमयसो भिजैं हरिनाथिहितमे
त ४३ श्रीरामदंडकबंदु कैसो वसहै उदास
कमलाकर सौं कर सोषक अवे षनापनमो
गननाविप श्रमतिग्रसेषके विसेषभावव
रषतकोकनदमोदषंड षंडनि विचारिप प
रमसुरसुपदविमसु परसु संसुषसुषद विड
षनि उरुयारिप हरिहैं ज्यहरि मैं नहू वनिहू
रनिनैंसी चंद्रमानचंद्रमषीनारडुनिहारि
यें ४४ दोहरा आईजोनिबसैं तितिरिनवन
निविलोकतिराम हरनियसे सीतासहित
रतिसमेत अनंगकाम ४५ इति श्रीइंद्रजीतवि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा रविताथांमनसकललोकलोचनचकोरचिं
१३० तामनिश्रीरामचंद्रचंद्रकायोवसतविपलोक
130 नेनामनीसः प्रकासः ३० ब्रह्मरूपछंद ॥
भोरहोतहीगणेसराजमध्यलोकबागा बाज
श्रोनिजैाजनपऊअंगणतगणमानुरागा सथमद्द
वीर सथमद्दवीरह्नंनश्रेसरेनकेउदारः सी
षसीषलेतहेतचितचेचलाप्रकार १ दोहरा
नेमवछंद चडिवाजउपरोम बनकोचले
तजिधाम चडिचित्तउपरकोम जनवितकौ
सरनाम २ छंद मगमैविलेवनकीन वन
राजमध्यप्रीन सबभूपभूपदराई जवलीवि
लोकहिजाइ ३ स्वागताछंद रामसंगसऊ
राऊप्रवीनौ सीपदसिनकेगुनवेननैलीनौ
केसपाससभसाससनेही दासहोतसभ
ठविविदेही ४ छंद भांतिभांतिकवरी
सभदेषी रूपरूपनरवारविसेषी सीयप्रेम
क्रमराषनहारी दीनदुष्षदलषंडनकारी ५
चौपाई किधौंसिंगारसरितासुषकारि वे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

बकतानि बह्माबनहार कंचनपत्रपांति
मैंमोनि मनोसिंगारलोककेजानंद ॥ 15)
चौपाई सीसफलअरु वेदालसैं भागु
सुहागुमनौसिरबसै पाटिकचमकचित्र
चौंधिनी मानहुंदमकतिघनदामिनी
७ सेंदुरमांगमहदीअतिभली तिनपरि
मोतिनकीआवली गंगाडिरातनसौंत
नजोरि निकसीजनुजमनाजलफोरि
सेसफूलसिरजतौजराए मोफफूलसों
भेसभभाई बेंनीफूलनिकीबरमाल भा
लभलेबेंदाजतलाल ८ नमनबारीपर
तेजनिपांन बैटेमनौबारहूभान भऊ
टीकुटिलबहूभांइनभरी भालललाल
तिदीसतिघरी ९ मृगमदतिलकरेष
जुगबनी तिनकेसोभासोभतिचनीज
नजेमनाषेलतिसुभगाध्य परसतपि
नहिपसारैहाथ ११ पंकजबाटकाबेंड
लोचनिमनोमनहुंभवंजचति हंदरसब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा दसग्रंजनग्रंजति भृङ्गगरुपरिमनोजप
१३१ मेत्रति बांनमदनविषमौंमनरंजिति १२
छंड॥ मषसुषिदनासिकमेनमोहै समक्रा
फलनिसक्रासोहै ग्रानंदलतिकामनहं
सफूल जनोकिसेघनससिफलमूल १३
छंड जनेभालतिलकरविहंदतिलीन
नपरूपग्रकासनदीपदीन नाटकजटित
मनिक्रतिबसंत १४ छंड ग्रति– लसा
लीन फहराननपताकाजन नंवीन ग्रुरु
ननरुनहिजडतिलसंत जनदंडिमवीज
निकौंहसंति १५ छंद संप्याहिडपासति
भूमदेव किवागदेवकीकरतिसेव सुम
तिनकेसुषमषकेसुवास मयउपवनम
लयानिलनिवास १६ चौपाई म्हडमसि
कानिलतामनहरै वोलतिवोलिफूलसं
गकैरै तिनकीवानीमुनिमनहारि सु
निवानीपनीउनारि १७ लहकेग्रलिकग्र
लकचीकनी सूक्ष्मग्रकविलकसौंवानी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नकमोतीदीपकदुतिजानि पातीरजनिझि
पडतिग्रानि १८ छंद जोतिबढावतिदमाउ
मारि मानहूस्यामलसीकपसारि जनुकवि
हेतरविरथतेछोरि स्यामपाटकीडारीडोरि
१९ छंद रूपग्रन्थरूविरसभीनी पातीनै
ननिकीपुतरीन नेहनवावनहितरतिना
थ मरकतलकुटिलिपजनदाथ २० दोह
रा गंगानचंदतेंग्रतिबडोतिश्रमधचंदविचार
दईविरंचविचारिकैकलावोरनीचारु २१ छंद
कछंद दीनौंईसदंडबलदलहिजबलतप
बलप्रबलसमीनजलबलकी केसव परम
हंसबलकलकरोबडीराबडाईडुगंजलकी
विधबलचंदबलश्रीकोबलरछावलकरत
हैमित्रबलरछापलपलकी मंत्रबलीहीन
जांनप्रबलारघनिबलिनीकेरी छिडाई
लीनीकमलाकमलकी २२ दोहरा रमनी
मुमंडलनिरघराकारमनलजाइ जलदज
लधिसिवसहरमेंराघनबवनडराइ २३ हरिका

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा लिकाछंद ॥ भूपनग्रीवनके बहुभांतनिसो
१३२ हतहै लालसितासितपीत प्रभामनमो
132 हतहै सुंदरगननिकीननवालजग्रांनिव
मैं मीषनकौबहुगनिके सविदामलसै २ ४
छंद हरिग्रवसौसरप्ररहषता हसबकाफ
लनिप्रभाभूषिता कोमलसहूनिवंतस
त्रिता अलंकारमहिमोहनमित २५ छंद
काव्यपद्धतिसोभागहै तिनसौंवाहूपास
कविकहैं नवननगन अमोककेपत्र ति
नमैंराज्ञनिराजनिछत्र २६ छंद देषहूदे
वतीनकेनाथ हरितजसमकेहारिनहाथ
सुंदरअंगुरिनिसुंदरीवनी मनिमयसुबर
नसोभनियेनी २७ छंद ॥ राजलोकेकेम
नहविरप मनहकामिनविकेवरलप
प्रतिसुंदरउरमैंउरजात सोभासरमैंजन
जलजात २८ छंद अलिषहूपजलमपक
रिपरे बसीकरनचूरिनचयभरे कामकू
वरिअभिषेकनिमित कलसरचेंजनुगोब

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नमित्र २९ छंद रोमराजमिंगारकील
लितलतासीराज जिन्हैफलेजुग रूप
फललैवगिजोतसमान ३० छंद अतिसो
क्षमरोमावलिवेष उपमादीदीसकसव
सेष उरमैंमनहुमदनकीरेष ताकीदीप
सिषसेष ३१ दोहरा कटिनजुबनतिन
जानिजैसतिषमतिमतिमवनिराइ जैसे
सुनजनजगतकेसमअसतअसमसमाइ॥
३२ कटिकेतननजानिजेसतिषमतिमव
निराई जैसेसुनिपतजगतकेसतिअसु
संतसुभाइ ३३ छंद नितंबबिंबफूल
योकटिप्रवेसबीनहूं विभूजमूटलो
मवेसलोकलाजलीनहैं अमोलतुजरू
उदारजंघजगमजानिये मनोजकेसमो
दसोविनोदजोनमानिये ३४ छंद छवा
निकीछुरैनजाद्दिसभसासुवानरी विलो
किमूलभूलजात चित्तचालआतरी
विसद्दपादपद्मचारु अंगुलीनषावली
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१३३
अलकलकि मिचकी सुविसवैट कैभली १५
दोहरा कटिनभूम अतिकोवरे जावकजन
सुभपाइ जनमानिकातेनजोनकी पाहूंरी
नरीवनाइ १६ वंरनबरनअंगिपाउरपरें
मदनमनोहरकेमनहरै अंचलअतिचंच
लतविरचे लोचनचलिजिनकेसंगनचे १७
दोहरा नषसिषभूषनभूषननिपडिसव
नैमयमंत्र जोवनश्रीचलजांनिकैवाघेरख
जंत्र १८ संसवनमूरतिविचपदछंद मोह
निसकिनपेसी मकरधजपुजजैसी मत्र
वसीकरसजे मोहनमूरविराजे १९ रूप
मालाछंद॥ भालमैमवराषियोससिकीक
लासुभपक नेपुतिहूउपजावहीमरडहा
सचंदअनेक॥ मारूपऊविलोकिकेदृरि
जारिकैकियोछार नैनकोरचितैकरयो
पतिचितमारअपार २० दोहराछंद के
टकअटकतपटफटजात उडिउडिजा
तवसनवसवासि नउनतिनकेतनल

खिपरै मनिगनिग्रहमुंसकरिपरै ४१ दो
हरा उपमांगनउपजाइहरिविगरापमंसा
र जनकौपरसमरहीउपमरविराषेकारना
र ४२ इतिश्रीइंद्रजीतविरचितायांमत्तक
ललोकनिचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्र
चंद्रकाजवतीजनवर्ननेनाम — नीसः प्र
कास ३ सुंदरीछंद डीठिपरैरघुनाथग्र
चानक जानकीकेजियकेसुषवानक मै
मेचलेसबकेचललोचन पंकजवाभुलगै
मनरोचन १ छंद संममोतिउतिफूलकी
फूलेबहुलोकनिकेससि रामविलोकनि
वागजैन हिजौंग्रवलोकनिकोसबसेन
हिं २ छंद बोलतिमोरनहांसषसंजन औं
विरदावलिभाटनिकेसन कोमलकोकि
लकेजलबोलन ग्पोनकपाटउंचीभुनि घो
लत छंद फूलतजेबहुहबनकोगन को
उतआनंदश्रमफनिकोजन वाडिमकीकलि
कामनमोहै हेमऊपीजनबंदनमोहै ४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१३४

दोहरा मधुवनफूलेदेषहकवर्ननहूनि
वेसक मोहनहाटकचटनजनजवनिन
केनाटक ५ दोधकछंद वेलकेफूलनसै
अतिफूले भौरभवैतिनकेकरसम्भूले घौक
रवीरकलीनवराजै मनमथवैननिकीरा
तिसाजै ६ छंद केतककूलपफूलनिसो
हैं भौरउडैतिनतेअतिमोहैं श्रीरघुनाथहि
आवतभागे जेअपलोकहतेअनुरागे ७
दोहरा स्यामसोनिदुतिफूलकीफूलेवकु
लास जल्यौंकामकौलामनौंमधुरिनु
वातविलास ८ तोटकछंद वकुचंपककी
कलिकाहलसी तिनमैंअलिस्यामलसो
झलसी उपमांहकसारिकविनघरी जनु
हैंमऊपीसवसोंपेभरी ९ छंद अलिउड
पवनमंजरीजाल देषिलाजसाजतिसब
वाल अलिअलिनीकेदेषनपाइ छुबक
चनरमालतीजाई १० छंद सुदसनगाति
सुंदरीविलोकि विहसनिपूंचटपटमसुरो

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कि तिरतसंदाफलश्रीफलगेज जनुपस
दाडिमदेषेवबोज ॥ नारिकाछंद॥उदर
उदाडिमदीहविचारे हृदनीतिकेसोभति
दंतनिहारे अतिमंजनवंजलजेजविराजे
वहूगुंजनिकेतमपुंजनिसाजे ए छंद॥रे
प्रभपरमैंतरुमोरे तिनकेजवलोचनहै
इकठौरे चलमीतललतसभावनिसाजै
ससिसूवजकेजंबलोकविराजे ६ छंद॥
जलजंत्रविराजतभांतभलीहै जमुनाज
लसबमवेषुमुयालौ पवतेजलपावप्रका
सचलीहै जनचाहततहैरविलोकविहा
रौ १४ चंचरीछंद॥भांतिभांतिकहौंकहा
लगिवाटकावहूयाभली बलचोषचुने
तहांजनुहैगिरावनकीथली नीलकंठ
नचैवनेजंनजनुजानियेगिरजावनी
सोभिएवहूयावनीहमनौमलयबनकी
वनी १५ छंद॥ कनकामयवहूकोमनि
फली जनुकमलाकीवासुली सोभेरंभा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा सोभासनी मनौसषीकीश्रोनदबनी १६
१३५ कोमलताछंद॥ नरचंदनउल्लसतानतनप
वैं लपटीनवनागलतामनहूरे न्दपदेषिवि
रोबरबंधनकरै वितचंदकलापरिरूपनिह
रैं १७ छंद॥ अतिउज्जलतासबकालबसैं॥
सकहूंपिकहूंसपहीविलसैं रजनीदिनआ
नंदकोदनहै मधुचंदनिकीजनचंदनहैं १८
छंद सबजीवनिकोबहुसषुजहां विरही
नहींकहूंउपतहो जहंप्रानसमपोनहींकोस
निये नितहोनअसोमहीकीसनिये १९ दोह
रा नमहीकोंताडनजहांविषधातिकके॥
चित पातफूलफलदलनिकों अमभौर
निकेचित २० तारिकाछंद तिनमैंसरूकि
तसपबहू राजै खगपंछनिकोजनपुंज।
विराजै बहुभांतिसुगंधमलैगिरमानों
कलधौतससरूपसुमेरबषानो २१ छंद॥
अतिसीतलसेवरकोगिरजैसो सुभसेत
लसैउदियाचलपैसो उतिसागरमैंमैनाकस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नौरै ब्रजलोकमनौंज्ञनहूंमखंनौरै २२
तोटककछंद सरितानिनतेंहभंतीनचली
स्तिगंरीसरितानिकीसोभरली इकवंदन
५ केजलऊजलहैं जगजन्हसनासभलीलति
है २३ छंद सरगजकौमारगछविछायो
जनुदिविनेंभूतलपरिआयो जेंनुपानींमें
लसतिविसाल उटिनजहीकीजनुवनमी
ल २४ दोहरा नभोनभावतिपङ्कपलके
सवमुषदसमीप नातेंसोहतितिलकसोंदी
नेंजंबूदीप २५ दोधकछंद पकनिकेमद
केजलहैजे हैजेंमनाउतिकेजहंजे धारमनोंर
सराजविसाल पंकजमालयहीजेंनुमाल २६
दोहरा इषषंडननतरवारिसी किधोंशृंषलाचा
रु कीरागिरगज्ञकामकीयहैकहैसंसारु २०
छंद कीरागिरतैंअलिनकीअवलीचलीय
कास किधौंअसायानलनकेमदवीकेसबद
स २८ छंद गैरनदीजलकंकमसोहै हमभि
रामनमानहुंमोहै कंचनकेकपवीनहिसाजें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा बोभुउसौंयहसंडुविराजे २९ फूलपलास
१३९ निकौंमउमाहो पांवनवामउहेदिसमाहे ३०
136 लागनाछेउ लौंगफूलमयसेवजिलेषी
पकचजवबहूकालकदेषीकेलफूल द
लनाउनमांही श्रीसगंपतहहैवहूयांही ३१
दोहरा षेलजिमनमहाहयालिकोवरने
वहजोति तीनैसल नामिलतजहतहां
विवैनीहोति ३२ दोहरा सीनासीरबु
नापजहदेषीश्रमतिहनीर डुमग्रवलोके
उछाहि कैगपजलासघनीर ३३ छंउ मु
निगनिमनसौं विरहीजंनसौ विशवली
यांनिविलास चंद्रातपजउकिधौसरदश्री
वाह ३४ वनिश्रीकोदर्पन चंद्रातपजंउ प्र
तिधिरचिरजीविमनोहरजनिहरिउदरग्रनं
न वेपनजतसोहैविभुवनिमोहेमानौवलि
जसंवत ३५ छंउ विषमपपैसवंसषकौंपा
उ संवरहपवफावैकांउ कमलनिमउमयु
पमषदेत संतहिदयजउहराहिसमेत ३६
© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद॰ आईकमलवा सहसषदैन अषवासन
आगेहैलैन देषौजा रजला समचारु सीत
लसषदसगंपअपार ३० छंद बीचबीचरू
लेजतिजाति जिनतेंअलिझलउउउजात
सेनहियेतेमोनदंभाजि चंचलचलीअसभ
कीराजि ३८ देरकछंद कौहैदमयंतीअसी
हैहसिहेसवेसपकहेमनीविसराय हियैं
सोहियैं भूषनगिरतपकलेनहुउहुउवीचमी
नगेनिलीउउपमानग्रोनिरोहिप कपपति
केटलागिलागिहुउहुउजातजलदेवतासी
हिगदेवताविमोहिप केसोदासग्रासपास
भवतभवरजलकेलिमैंजलजअषीजलिनैसी
सोहियैं ३९ दोहरा कौसमरवरमेंन्टपति
बहुविधकैजलकेल निकसेतरुनसमेतसौं
सूरजाकरनसकेल ५० रालतिकाछंद॰
नीरनितेनिकसीत्रियसवे सोहतहैविउभ
षनतवे बंदनचित्रकपोलिननरी पंकज
केकरसोभतितहीं ५१ छंद मोतिनकीस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा बुविथरीछुटै हैलुपटीउरजानतिलटै हार
१३१ सिंगारलताजनुबनी भेटनिकलतनाति
नचरी ५२ छंद केसनिगेरनिसीकररमैं नि
षगंनकैनेंसुपीजनुवमैं सजलग्रवरछोउत
वैं छुटनहैजलकेकनषैनैं भोगभलेति
नसैंमिलकरे छूटनजानिनितेवनिषरे ५३
छंद भूषननेजलमध्यह्निरहे नेवनपाल
वध्दिनिलहे भूषनवसनवहिंसजिलप
चारिह्रदारिनिछुडुभीभए ५४ दोहरा रू
गेकझेवावरेवहिरेवावनहद मोनिलियेज
नश्रारथोसोरेषंडमसिट ५५ छंद सषर
सषासनगनपालिकी फिरकवाहिनीस
षचालिकी पकनिजोतेहृयसौंहियें हृष
भक्करंगग्रंगमोहियें ५६ छंद तिनचपि
राजलोकसतुवलो निगहानगरुसोभाफ
लफलो मनिमरकनजलवानिजवरी मो
तिनकीजालरानिवनी ५७ छंद चेंटा
वजतिचहूदिसिबैंनी भले ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रामचंद्रतिहिगाजचढ़िचले चपलाचमक
बानअग्रतिशूफ मनहुंमेंघमघवाग्रहफ ५८
ग्रामपासनरदेवअपार पारपयादेगाजके
मार इहिविधिगएराजदरबार बंदीजनज
सुपटतअपार ५९ विजयकेतु भूषितदेह
हिंगवरनाहिनैंप्रवरअंग्रगनवीनें हरिकेंसुंद
रिसुंदरमंदिरहरिदींरीनेमेंमेंवलकीनें दे
षिपमेंउतिदेंउतिसींभुजनदंडुवीग्रसदंउवि
हीनें राजीवश्रीरघुराजकेवैरज्ञावंउलक्षा
रिकमेंउलीनें ५० दोहरा कमलकुलनि
मैजानजैंभीरु भलोरसवित राजलोक
मैंसैंगएरामचंद्रजगामित ५१ इतिश्री
इंद्रजीतविरचितायांमसकललोकलो
चनचकोरचिंतामनिश्रीरामचंद्रकाया
उपवनविनोदवर्ननंनामबत्तीसमोप्रका
सः ३२ त्रिभंगीछंद दुर्जनदलघारकस
वमुखलाइकत्रिभुवननिनाइकरघुनाइक
सोभैंसंघासनशुभप्रकासनिकमेंविना

ना॰ १२०

सनिदुषनासक सुग्रीवविभीषनसज्जन
वेषुजनसहितनकोपंनभूपतिगन प्राप
सैंगमुनगुनसकलदेवगनस्रगजनपकों
ननिचनरोंवन १ तोटकछंद उरिआद
रसोंग्रउजलाइलप प्रसिद्धजनदुकेवहुथा
विनय सुषदाइकश्रासनसोभय सवा
कोंजनजप्यमनिश्चांनिपयें २ दोहरा सव
निपरसपरसुकियोऊसलयस्रसहुपाइ
वतुएंननिवोसोवृचन स्लाघाविनयवा
नाइ २ मनोरमाछंद सुनिजोविनदेज
गकेमतिपालक सबकेगरहोहरिजव
यवालक सबकोंसमभावसदासवला
इक गनगावतवेदमनोववकाइक ४
छंद वमलोकस्वैरुचसोंवहुपानव सु
निजैसभुऊजवेहै गिगारेप्रवजैउछूलहै
कोंऊनजाइनिरेजग मिटगेसवपापहै
श्रवनिकैमग ५ दोहरा वरनश्रीपनपु
निश्रीसरपतिसुरसुषदोन सत्यलोकव
कुंटमगवप्पौप्रावतिमैंप्रान ६ श्रीराम
नी तोमरछंद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

हमियौंकहैरघुनाथसमुझेसबैविधिगाथ
ममपदकरकंसज्ञान कबहूंनहोइसद्योनत
बपुधरैंसनकादिममभक्तिज्ञानदृढआदि स
तमानसन्निजिनकेज्ञ भवदेवधर्ममयगटेज्ञ
हैंमहीन्हतेज्ञसमभाउ कछुऔरहेनैगाउ हम
देहिकिहियबदौर तमकहैंसुरसिरमौर ८
ब्रह्मानन्दमरहसाक्षेत्र सबवैभुनिहरिः तपध
लहरिः विधनसमैप्साजानि बहूधावडूवा
रनयतिग्रुवनारनिदंग्रापसभभौत सनिज
गग्राघरलमंपुरामंडलमें दीजें सुभयाम
वाफैवहूकीरनिलवनासुरहतिग्रतिग्रजेय
संयाम ९ दोहरा जिनकेरजनमभयग्रेन
जोंमेंपुत्रीय तिनकीबातकहारमेंएकतनि
भुवनिदीय १० दोहरा द्विजग्रायोनेहीसमैं
मनकपुत्रकेसाथ करनकलापविलाप
हाहाराममचंद्ररघुनाथ ॥ मलकाक्षेउ वा
२ लकैगतनाहरेष धर्मराजसौंवसेष वानयौं
कहीनिहारि कर्मकौंत्रकौविचारि ११ धर्म

सतमनोरमा छंद निजसूदनकी तपमासि
सुचालिक वड्या भुवदेवीन के सब बाल
ककरि हेग विदा सिगरे सुरनाइक चढि वि
मानक श्रासु चले रघुनाइक ॥ १३ ॥ दोधक छंद
रांमु चले सुनि सूदन की गीता पंकज जो
निगम न हूँ सीता देखि लगी पग रांम की रा
नी हसि कै पंकति कोमलवानी ॥ १४ ॥ छंद
कौन शहर वीथम हमारे श्राम फले जु इहा
मग धारे देवनि कौं सब कारज कीनौं रां
वनि मारि विभीजन सुलीनौं ॥ १५ ॥ छंद मेदिन
नीवह भौंननि कौंनी लोकनि की वहुन भस
भीनी उतह मोहि दियो सुनि सीता जाकी
न जानि परे न युगीता ॥ १६ ॥ छंद मांगत है
कछु मो कहूँ दीजे चित मैं गरविचारहुनकी
मै श्राजु तैं चालि चलौ तुम मैं सें रांमु चले बंके
टी हूँ जैसे ॥ १७ ॥ छंद सीपन हाँ कछु नैंन वाप
ग्रहन हानि लोक सिधाय रांम न हूं सिर
द कौं षेद्यौ वांमनि कौ सुन जीवनि मैं श्रौ ॥ १८ ॥
सुंदरी छंद ॰

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पकसमैरघुनाथमहांमति सीतहिंदे
खिमगर्ववढीरति सुंदरमोंगिजमन
मैंमावत मोमनतोनिरषसखुपावत १८
सीताजूछंद जौनमहातमसैनमहांमति
सीतहिदेषसगर्ववढीरतिजन सीताजू
छंद जौनमहातमसनमहांमति मेरेव
फैनमंदीसोंसदारति श्रेतरकीसबवात
निरंतर जौनतहांसबकीतेनिरंतर १९
श्रीरामदोहरा निर्गुनसगुनभयोसुनके
दरतोहेत गैरोकछुमागोसुखपिरुचैत
म्हारेचेत २० सीताजूछंद जौसबनेहि
तमोकरेंकीजत ईसमयाकरिकेवनदी
जत हेंजितनेरिषदेवनदीतट हैंतिनकौं
पहिराइफिरौपट २१ श्रीरामदोहरा प्रथ
मदोहरा प्रथमदोहहैकौंकरौ: निफल
सुनैंयहवात पहपहरावनरिषनिकौं
मेजोसुंदरमात २२ छंदु भोजनकैतव
श्रीरघुनंदन पौढरहेवरउ २३ निकेट

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ उ बाफेवजेअपराधभईजब हतनिश्रौंनि
१४० प्रणाम कियैं तव २३ चलाकेउ हलभूत
भाव नौं कहीकहीनजारजैन कोटपावि
चारिपपैरकहीविचारपैन हरकेउदे
नस्तूरवेपुआरयोसजोन रामचंद्रदेखियें
विभातचंद्रकेसमान २४ सजनाकेउ:
वहभांतिवंदननाकरी हसिवोलियोन
हपाकरी रमभैंकहहिजदोयपहै जाने
कियोप्रभुरोहुहै २५ भरथ दोहरा म
नसावाचाकर्मनौं हमसेवकसुनितात
कौनउदोषनहिवोलियपनमैंकहिआप
बाम २६ श्रीराम केउ कहिहैंकहानक
हीयरे: कहिनेनजैवहनेउरे: नवरत
वातसवैकरी बहुभांतिदेहटसादरी २७
दोहरा सदासह प्रतिज्ञाउकीनिंदतने
छलनाल जैसेसुतहितभावहीपावही
सवकाल २८ दोहरा भवप्रपवादनितें
नसैयेंवाहनसीनाहि मेंाजामेंकेसजे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गतेंजोगीजनमनमनाहि २४ भरया रूप
मालाछंद मनमोंनिकेनमम्हइ सीनहिंश्री
निवैनिजधाम अवलोकयावज्यौं रविग्रंक
पंकजधाम कितिभांतनताहि निकारिहैअप
वादवादवषांन सिवसंभुपर्मसमेतधीपि
नसाहिवोलियम्रांन ३ छंद जेंमनादिके
अपवादकौंद्विजकोंदिहै कुपिलाहिं विरही
नकेउषदेनवैयोंहरुआविवडकलाहि यह
हाअसतजहांइगोअपवादसनाहनाप अभ
कोंतिसहहुधानपीवतिअपनेंविषहाप २१
दोहरा प्रियपावनप्रियवादिंनी पतिव्रता
अतिहइ जगकोगुरुअरुगवेनीछाउवेद
विरुद्ध २२ दोहरा वैमानावेसेमितनमसे
मैयापाइ भरयभयेअपलोककेभाननधू
नलग्राइ २३ श्रीरामहरिलीलाछंद सांची
कहीवानभरथसवैहजोंन सीतमदापरम
हइहुपानिधांन मेरकछूरछग्रविपरै
हरेरि कोकौंहतैवहरवानकहोजफेर २४

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा० लक्ष्मनदीपकछंद त्रषितजैनसदाकम
१४८ गंगनो छाडतिनाहिनजेंगमरेगा मापहिनि
दतिहैंसबजोगी बंधेतजिहैंभवभूपतिभो
गी ३५ गयासिनिनिंदतिहैमठधारी भाव
तिहैहरिभक्तिविभारी निंदनहैंतमनंमाहि
वोमो काकहिपतमग्रेतजोंमी ३६ दोहरा
तलसीवैंमानितप्रियागेतमवियग्रतिग्र
३७ सीताकोंछाडनिकहोकाहेकेसर्वगव ३०
मज्ञस्न रूपमालाछंद स्वमहेनदिछोडिप
त्रियगर्विनीपलटाइ छाडियोंतवहडसी
तहिगर्भमोचनहेइ पुत्रहोइकिपुत्रकाय
रुवानतजानिनजाइ लोकलोकनिमेंग्रलो
कविलोकिवैरघुराइ ३८ छंद रामचंद्र
जगचंद्रतमः दलफलफूलसमेन सीतापा
वनपद्मनीः म्याइनेहीउडदेत ३९ छंद दोहरा
वरवसेंमीतजगहषीः रामचंद्रकेराज अपनेही
वरकरतकतः सोकग्रलोकसमाज ४० श्रीराम
जी दीपकछंद तमवालकहेवरुधासवमें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्रतिउत्तरुफेरनदेहुहैमैं जुकहैहमवातसु
ताकरौ जियमैंकुविचारगगैरपरौ ५२ दो
हा गैरहोइमैजोनिपप्रभुसौंकहावसार
यहविचारिकैमनभ्रमरघुपतिप्रकलाइ ५३
श्रीराम:दोधकछंद सीतहिलेप्रवसनवर
नैजो राषिमहांवनमैंउनिपजै लछमन
जौफिरउत्तरुदेहौ सासनमैंगकेपानक
मैंहौ ५४ छंद लछमनलैवेनसीयहि
धाप थावरिजंगमहूंउषपाप गंगहिंदेषि
कलौयहसीता श्रीरघुनाथकुकीजहुगी
ता ५५ छंद पारभएजबहीननदोऊ भी
मवनीजंमजेछानकोऊ निर्जलनिर्जनको
नउदेषौः भूतपिसाचनिकौंग्रहलेषौ ५६
सीताजूनगखवरुयनीछंद रुनोनगांव
कारिकापढेरुकीनसारिका नहौंमरु
मदेषिय सुगंधवेधुलेषियें ५७ छंद सनौं
नवेरकीगिरानउठहोनहैप्पिरा रुषीनकी
कुटीकहो पतिव्रतावसैजहो ५८ छंद

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा मिलेनकोउबैकहूं नयावतौनजानतहूं ब
१५२ लैहूंमैकहालियेउरानहींमहाहियें ५२ दोह
रा ह्वनिसुनिलछमनउभीनयूतिसीतीन्हके
बैन उत्तरसुषयावैनहीजलिभतिच्यायेवैनन ५३
नगाजछंद विलोकिलछमनैनमधिविदेहजा
विदेहसी गिरीयुचेनहेमनौंवेनेचवैनतउह
सी कौरनकोंहूपकहापपकवाइकामसौं ५४
दोहरा सनकमोंनिलछमनजंहीमरनलगे
तिहकाल भईब्रकामवोंनौचरैंजाइजी
यैगीवाल ५ रूपमालाछंद रामकोजय
सिद्धिसीसियकौंचलेवेनछाडि छकोंहूप
कफांगीकरीफैलादेहमालनिमोडि वा
लिमीकविलोकियेविनेदवनाजेवजोंनि
कलहकलनाकिपौदिवतैगिरीभुवयो
नि ५६ छंद सीचमेवसजोवजीवनिजी
उठीतिहकाल इछियोगनिकोंजकी।
विरियावहू प्रहवाल ५७
॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सीताज हैं सुत्तामिथुलेसकी दसरथपु
त्रकलत्र कौंन दोषनजी नजानन कौं तुम्हा
पुत्रग्रत्र ५० मुनिउवाच पुत्रके सुनि मोहि
मानहू वालमीकद्विजान सर्वथा मिथले
सको गुरु सर्वथा सुभ भांत हों हिगें सुत
है सुधी पगधारि पममश्लोक रामचंद्र कि
तीसके यश गाइवेत्ति है लोक ५१ छंद॰
सर्वथा गत सुद सीनु हिं ले गय परिषरा २
श्रापनी तपसा निकी सुभ सिद्धसी सुद्धदा
२ पुत्रवै भपपक श्रीकृपा है सरै लव जो नि
जातिक मैं हिं आदि देस वाकि पवेद हथों निं ९०
दोहरा वेदपफापपा हि लव नयर्न्व देस
विसेष अ सुस सदीने सवै दीने मंत्र असेष ९१
इति श्री इंद्रजीत विरचितायां मनसकल
लोकलोचनचकोरचिंतामणि श्रीराम
चंद्रचंद्रकायां उत्पत्ति कुमलववर्ननं नाम
नैनीसमों प्रकास दोपककुंड पकस
मैं हू रियमसभामहिं सोभति हैं नरदेव

रा॰ सभामें संगसबैविप्रराजविराजै सोदरमे
१४२ त्रनिमित्रनिसाजे १ छंद हाजरकराकुमि
रादहिग्राये डुंडभीपभेऊ· मारवजाये चा
जतहींउदिलछमनउगाप स्वाँरनकौंकार
उपाय २ सो॰ऊ॰ छंद काहुकेकोपुविरोपन
देषो रामकोराजनपोमचलेषो नामहिमें
डुषदीरचपायो रामहिंदेशनिवेदनग्रायो २
लछमनउवाच धर्मसभामहिंरामहिंजो
नौ स्वाँनचलोनिजदुषवषानौं हुयउब
राजसभानहिंग्राऊं ग्रावतिकेसवसोभ
यपाऊं ४ दोहरा देवऊदेवचनिदेवचरपा
वनपलसषदाइ चनुवोलेग्रानंदमतिकुत
सितजीउनजाइ ५ छंद राजसभातवस्वा
नउलायो रामविलोकतहीसषपायो रा
मकहोनिजकाजकहोतेरे स्वाँननिसेककहो
उसमेरे ६ स्वाँनउवाच छंद नमहुसरव
गवसदासषदाई यतहुहेसबकौंसमरूपसदा
ई जगमेंवनहुंहुजगतीपतिजागै अपिनैअ
पिनैसबमारगलागैं ७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद नारिवनिपापपरेषरि जाके निसवा
सरहोननरछकता के गुन दोषनिकोज
गहोरनदरसी नवहीं प्रभुहोननिरे पगम
रसी ७ दोहरा निजस्वारथहीसिद्धिजमो
कोंअहारु विनुअपराधमनिताकोकहा
विचारु ८ नवताकहेंलैंनपनैंनधाप ने
नगरीमहितैंगहिलाप यहकुकरुवैसो
विनदोषप्रहारयो अपनैजियत्रासकछून
विचास्यो ९ वांभन दोहरा यहसोवतहै
पंथमैंहौंभोजननकोंजात मैंअपडरथकु
लाइकैयाकेकैनौघात ॥ श्रीरामः सभा
सनिस्वागताछंद ब्रह्मब्रह्मरिषराजवधू
नै धर्मकर्मवहुभातिनजानकू कौनदंडवि
जद्दिजहिजनदीजै वितविचारिकहौसोई
कीजै १० कलशछंद ईससीषयहया
कहदीजै कूकहीनअरियौनहिकीजै देशदं
डभुवदेवसदाई नत्रजनउहनिजैरिषराइ ११
श्रीरामनोमराछंद · हनिस्वांननहेकहिंदंडु ह

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा मदेहिंयाहिविशेउ कहिवातननेउरगारि जिय
१४५ मोकग्रासविचारि स्वांनः दोहरा मेरोभायो
१५५ नैकरोरोमचेरहिनमेरि कोजैयरहिजमद
परीअरूदंउसवबेरि १५ निसपालिकाबेउ·
पीनपहिराहिसिरबांधिनवेसीपरी बोरिये
गरामग्रेगयोरिवहूपागटी सजपरिपारम
हनाहिनवेहीदियौ मतगजराजचढ़िवि
ग्रमदकौंगयौं १६ दोहरा भयोरंकतेंराज
हिजकियौंस्वांउकरिनार भोगनिलागो
भोगवनवजननंडभीद्वार १७ सुंदरीबेउ·
हकनलोगसभासभस्वांनहि जांनतिनांहि
नपापरिमोनहि विसहितैजदरेपदवीवह
हैयहनिरहकैपोग्रउग्रः ह १८ स्वान दीपक
बेउ पककनोजहनोमटपारी देवचनरंज
कौग्रमिचारी नापहेकोडवजेजनवग्रावे ये
गवलीरचनाहिंवनावे १९ बेउ जादिन
केसवकोडनग्रावे जादिनपालिकनेंनउ
टवे भेरनिलेवहपांयेंनकीनैं ॥

निज्ञकरैवहुभोगनवीनैं २० छंद पकरितां
रघुपांडुनैंग्रायौं भोजनुतौवहुभांतवनायौ
नाहिपरोसनकौंपितमेरो वोलतियौं हित
मैं सबकेरो २१ छंद ताहितहाबहुभांतप
रोस्यो कौंहूकहूंनपमोफरलोछ्यौ नाहिप
रोसजबैचरग्रायो रोवतिहौंहंसिकेदलगा
यौं २२ चामरछंद मोहिमातहंरुपभांतत
मभोजकौंदियौं वानसौंसिराईतातकौंग्रं
गुलीछियौं ध्यौंछियैंभछ्योगयौमरैंग्रवे
कनकैगौ हौंग्रभ्योग्रनेकजोंनिहोपिग्रा
निस्वावभो २३ दोहरा वाकौ प्यारौ रोसुमें
दीनौंदेउग्रगाधु रामचराचरईसतुमछमि
यहुँपहुग्रपराधु २४ दोहरा इहिलोकक कि
यौग्रपविनुमैं उहिलोकनकैगनवाहछिये
जकोहमरपनिनताकेभंयविलाशि २५
रामगोजप्या ब्रह्मंस्वदेवद्रव्यंचः स्त्रीणांवा
लिपंनैवजन हृतेद्रस्तयौमोहादिपेसद्दूप
नमपः स्कंदपुराने द्रुस्वाचोन्यदेवस्पः के

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा सतास्वविसेषतः मादापमेतननकृत्वीतः स
१४५ वेपर्मवहिः स्कृतः २९ पद्मभूगाले पद्वे पुष्पे
145 फलेत्तोयं ह्रम्यमसमेमटस्वचः जोतिष्मीः॥ स
पचेश्लोगानरकौं नैक विं मनः २१ देवीगु
णैं ग्रभोज्यमदिनामुचैः भुक्ताचं वृद्ध यनेवरे
त् सप्तामटपतिविंग्रसवासजलमेभवेत् २८
दोहता गैरौं पककद्याकहीं कालरूपकीरे
म वैरेग्रजोध्याध्याव सतहूंवसकारकथा
म २९ वसंततिलकं वृत्तं राजाहूतोप्रवलउ
ष्प्रनेकरारी वागानसाविमलवृत्तनिवा
सकारी सोमकेतरहिंनोंमप्रस्तिडुहरो वि
द्याविनोदरतपमिविपानमूरो ३० वृत्तं प
मापिकारिपरपकहिजातकीनो संकल
इयवदपानिहिवोदिलीनों वेदीविनोदग
निकाविलेसकतो पावेदसोमहिनदं त्रय
सेषरतो ३१ वृत्तं राजाविदेसवदस्मानव
मृगयोहो नमोनहांजारसमकजोप्यांसोभ
योहो श्रापकालकिलकिंकरकलेसकारि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लीनेगयेंल्पालिद्विजहांदंडधारी ३१ धर्म
राज भुजंगप्रयातछंद कहाभोगवोगेमहा
राजहैमैः किधर्मकिधर्मंकिरेहूंरभूमैं रा
जा हहैदेवमोकोंकछूसहैनाही कहोश्रा
घहींपापेजामोहिमाहीं ३३ धर्मराजछंद॰
कियेतैंद्विजानीजधर्माधिकारी हतैगति
धसंकल्पविनापहारी दियेतुर्हंगनिवि
स्वीनिलेकलै महांपापमायेंजिहारेंसहै
दै ३४ छंद॰ दुतैतेंसबैदेसहीकोनिपेता
भलेकीबरेकीकरीकैवेबिना महांसूफमें
धर्मकीवातदेषीः जितेदाँतुंदीनोतिनै
पापुलेषे ३५ दोहरा कालसर्पसोसमुझेप
सबैराजकेपुँर्म लोंकनैंग्रतिविषमगति
रचनिरोतकेपुंर्म ३६ स्वान छंद भपको
रपानर्कसंपकन्ताकों हतेदोषसंसर्गके
सिहजाकों सबैपापभैछीनिमैंबकिले
षी रलोगंपिमेंग्रानिरकोलवेषी ३७

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ दीपकछंद बोलिउसौंदरबारविलासी हि
१४९ जहारलसैजेंमुनींनटवासी आदरसौंतिस
भामहिं बोले सजनुकैमगकेश्रमषोले ३०
श्रीरामछंद आपकहे सोइआरसदीजे आ
एमनोरथुसरउकीजे जीवनसौंसवराज्ञुनि
हारौ निर्भयह्वैअवलोकविहारौ ३१ रूप
मालाछंद सहद्वीसतनरावरेसोभेसवैंइहि
वारः ईसआगमसंगमादिकहैं अनेकप्र
कार धामधींवनहैगयपयरपमकेरापा
२ जन्महफलभयोसवेकजलदिहिहीमुनि
रा३ याहियश्रमनोंमहीभपसहदसीरषहाग्य
हिइलोचनरूपदेषतहींभपमुनिराग्य ना
सिकारसनोंविसदीनमैंहगंधसनोंम कर्म
कीजहिंहरसहूहिंतनिपिकुश्रियाम ३२
रिषवाच मरटाछंद हमहैंसवलारकश्री
रतुनारकुउपमादीजेकाहि तिनिमानसरे
ताजनकीयश्रेनाआदिनछंतनजाहिं मारै

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

लवनाहहजैसैंमधुसूदनमारेश्रीरघुनाथ
नगजनगरसभीनैश्रीशिवदीनौंहलाह
लीनौंहाथ्य ४ः दोहरा जाकहूँमेललिनिए
लवहहतिजैत्रिभुवनिराइ ताहिमसाकरि
सर्वथावाकेहीकरजाइ ४ा दोयकक्केउ
देवसेवनरहारिगपज गेरजितैनरदेवम
पज श्रीभगवंदनन्नउनमंझो सेकरकौ
गनिसेवकुक्केयौ ४ः दोहरा पाइरवहम
कौंदृशमपुरामंडलखाउ वापैवसननपा
वहीविनावसैंप्रतिपाउ ४३ श्रीरामःदोह
रा रक्षाहिगेसतुमकेहतनमकौंसवमा
ल वाहदेवहरवक्षहौं होतनमकौंतिहंकाल ४४
क्केतु वलौवेगसतुहतनाकौंसंघारौ वहै
देसतैभावतौहैहमारौ सदाहइहेदाव
नैंभूमलीहै तहांतेसमेरीविहारीथलीहै ४५
केहु यहैजांनिभूमैंद्विजन्मोंनिंदीनी व
सैजहहेदाशिदायेमभोंतीसनैगोंनिकी
भक्तिजौ जीयजागैमहादेवकौंहलना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा कौंनलागै ४९ छंद विदाह्वैचलेरामपैसत्रु
१४८ हंता चलेसाथह्वाथीरथीजइरंता चहुंघाव
सूचातिहूंगेरराजैवजैडुंडभींदीह्वदिस दंतिला
गै ५० दोहरा केसववासरवारहैरघुवरकेव
रवीर लवनासुरकोंजमनज्यौंमेलेजसुनीति
र मनोरमांछंद लवनासुरद्वारगयोजसुना
नट अवलोकह्वस्यौंरघुनंदकेभट पंडवानि
लियौंनिकसेरघुनंदन मदकेगजकौसुतके
सरकौंजंतु ५१ लवनासुरोवाच सुन्यौतेंनहै
तेरहूअकलश्रायो वडेभागमेरवडेअमकृपायो
सत्रुघ्न महराजश्रीराममैंहू जपतोसौं नजै
हेसकौंकेकरौजडमोसौं ५२ लवनासुर
वहेरांगुराजादसग्रीवहूंता सतोवंधुमेरोसुर
ह्वीरपता हुतौतोहिवाकौकरौं चित्तमा
रोंमहादेवकीसौंमहावैरूपायौं ५३ छंद
भयकुपदोउडवीनडरंता डुवौअस्तसती
प्रयोगीनियंता वलीविक्रमीधीरसोभाप्रका
सी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नसैंाँहरूँदोऊनवषैविनासी ५२ सवैया
दोहरा लवनासहरूसिवसलविहंगेनला
गेमोहि सलसिपविह्वलहैहैनमारि
हैंतोहि ५३ सोरठकछंड लीनौंलवना
सरुसलजहीं मारयौरघुनंदनवीनवही
कारयौसिरुसलसमेतगयौ सलीकर
सत्रुःत्रिलोकभयौ बाजेदिवदुंदुभिहा
रतवे आपहरुसमेतसवे ५४ देवकी
नोंअतिविकसप्यारेनमैं मांगोवलिदां
उरुवेमनमें ५५ सवैया नगसरूपनीके
उ सनाप्यहतजोहरैसदासमूलसोंज
रैः अकालमरनतेमरैं अनेकनकैसापरैः ५८
दोहरा सनाढ्यजानिसर्वदा जथाउनीत
नवेदा विरुद्धतेअसंपदा भजेसजेतिसंप
दा ५७ दोहरा मथुरामंडलमेपुरीकेस
वसभसवसा२ देषतवरीसत्रुघनैंरंम
चंदकेपा२ इतिश्रीरघुनीनविरचितायां
मतसकललोकलोचनचकोरिचिंताम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१४८

॥ श्रीरामरामचंद्रचंद्रिकायांअनरिषेदेलव
नास्तुरूवधोनाम चौतीसमोप्रकासः ३४
दोहरा विस्वामित्रवसिष्टसौं एकसमेरघुना
थ आरंभीके सवकरनग्रस्तमेपुकीगाथः १
चामरछंद मैंषलीसमेतजोअनेकदाँनमैं
दिए राजसूयआदिदैअनेकजगयमैंकिए
सीयत्यागपापमंत्रमहाहाँ हियैंसहौंडरौं जौ
रूपकुअस्वमेधजोंग्रकीविनाःकरौं २
वसिष्टदोहरा एकैकसुत्रकुकीजइ सुफ
लतरूनकेसाथ नाविनुजोइकीजइसोइ
निरफलिनाथ श्रीराम तोटकछंद क
रियजतसूषिनहूपरई मिथ्यलेससुता
सुभसनमई रिषराजसवैरिषवोललि
यें सुवसौं सवजगयविधाँनाकियें ५ छं
द रूपसालनितैहयकोतिलियौं ससिव
नेसवकेसरसोभरयौ सुनसोमतलमकविरा
जनतेरे ग्रलिसैंसरिसी हहलाजनहेरै ५ रू
पमालाछंद श्रजरोचनसवकुअनपहुवेपिषमाल

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भूषिभूषनसंजुतदूषनछोरियोतिन्हिकाल
मंगलैचवनरंगसैनासजैरैना साथ भांतिभां
तिनमोंजुदेपटपसभैरबुनाथ ६ छंद जा
नतैहजिनवाजकेसव जानतेहंजिनलोग वो
लविषनिदोनदीननजरनऊसभोग वैन
वीनसदेगवाजीनडेडभीवड्डभेव भांनभां
ननिहोतमंगलदेवसेनरदेव ७ कमला
छेडु राघवकीचनरंगचेंहूंचयंकोगवैके
सवएजसमाजनि सुरनरंगनिकेउरकैं
पगनेगपताकीनेकैंपरसानानि हूंटप
रैं शुकतानिनतेंपरनीवरनीउपमोकविरा
जनि विंडमनोंमुषफेंनानिकै किधौंरा
जनिरीषवैकैंगललाजनि ८ देऊकछे
उ नादहरपरसरनरवजनन छूटगिरसोष
सोषजलभूरभूरघलगाथकी केसौदास
शासपासदौरहौरराषिजेउतिनकीसंजि ५
सवशापनेंहीं साथकी सइनिसमुदसेन
सुडानिजनमुदनिकेसाईदिसटिसमीनसें

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा
१४९
149

नाम्रनाथकी उनैनववाइन तेमेननिवना
इरूपसत्रुनिकीजीवक्यानिमिञनिकेहाथ
की ९ दोहरा दिसविदिसनभ्रवगाहकैस
षंहीकेसवदास वालमीकके आश्रमहिंग
पहरंगप्रकास १९ दोपककेउ हरिहैनेस
निवालकपायें इजनवाजविलोकनिश्राम
भालकोपहुजहेलववांचौ वांधितुरंग
भ्रनेरमराचौ ।। श्लोक एकवीराचकौस
ल्याः नस्यभुजोरवहवः नेरोमेनमुकोसे
वाजी नेयहरूनमेवलं ।। श्लोकवेउ घोर
चमूचहैंआपनिगाजी कौनविरेयहवां
धौंवाजी वोलउहेलवमैंपहरवांध्यौं श्री
इपरेक्षिपदेलमैंपौ हरउहेनमहांत
ममैंप्यौं मारिभगाइदिये सिगरेयौं मन्त्र
थकेसरगधौनथनेजैौं १२ भुजंगप्रयातके
द जोधाभजैंवीरूसत्रुघ्नआप कोदंडलीनेंम
हौंरोषछायें: टापैौतहीपञवालैौं विलो
कैा रोकैोनहीजैौंनराचुमोकैंा १४ ।।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

सत्रुघ्नस्याव संदरीछंद वालवेगदेखाउन
रंगभूं नासौंकहा करौ संगसंगहतउपरवीन
ह्रियैकरुणारस विभ्रहैवारहनेनकहंजस
लव कछुवानवउनकहोसत्रुघ्यारें लवसौं
नजरेलवनासुरभोरें द्विजदोषनिहैंरीवलना
कौसेंचाहौं मारिहैनरसौसुकहातममा
हौ ९ चामरछंद रामदेवबांनतीनिछो
डियौंत्रिसूलसे भालमैंविसालभालिला
गियौंतिसूलसे लव बानकीनराजतान
गाहनेंकिसंजियौ कौत्रसत्रुनैंहस्यौंजना
उसत्रुहालियो १० निसपालिकाछंद रो
षकरिवांनबहुभांतिलवछोडियौ पकय
त्रिसूलनजगतीनरघुछंडियौं सहदसरघ
सुतसोधरैः नाहिसियपुत्रतिलतुलखंउन
करैः ११ तारकछंद लवनासुहकौरघुना
थकदीनौं लछनाहिविलोकनिहीहसिदी
नौं लवकेउरमेंउरकौंवहयत्री मुरकाइगि
सौंपरमैनवछत्री १२ मोटकछंद मोहेल

१५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा वधूंममपरेजवहीं जयडुंडभिवाग्निउववहीभु
१५० वतेरथऊपस्थोंनिपरे सत्रुघ्रहियैंकरुनोंनिभसेः २०
केउ॰ वोरोतवहीतिनकोशिलियों सत्रुघनिह
श्रानेंदचितभयो लेकेलवकोंनिचलेजवही
सीतापहितालगपतवंहो २१ बालक फूल
नाकेउ सनिमैपलीरपपककोलववोंपिश्रो
वरवाग्नि चतरंगसैंनभजाइकैतवजीतीयावह
श्राग्नि डरलागिकेसरपककोंभुवमेंगिरेमुर
छाइ वहवाजलैलववतेचलैोंनपडेउभीनव
छाइ वहवाजलेलवलेचलोंनप २२ दोहा
सीताजू सीतागीताप्रत्रकीसुनिहंनिमरे
श्रचेत मनोचित्रकीप्रत्रकामनक्रमवचनसमे
त २३ सीताजू छंद रिपुहाथश्रीरघुनाथके
सतकोंपरेकरतार पतिदेवतासवकालमें
लवजीमिलेशहिवार रिपुहीनहोंकसहीनहीं
लवलेरकोंनुखिकिउाइ वनमोंऊवातजहीस
नीकुसश्राईयो श्रकुलाइ २४ कुशदोहरा रि
पुनिमातिसंचारदलजेंमनेलेंउछुकाइ लवहि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मिलै हैं देषि हैं मानत नाते रे पार २५ विजय के
उ गाढ़ियो सिंधु मसो वरज्यौं जिन्ह बालवली
वरु सौं वरु यह सौ फारि दियै सिर रावन के
गिरसे गुरु जाते न जात न रहे सौ साल सम्
र उधारि लियौ लवना सुरु पीछे नैं जा रस
हे सौ राघव को दमन करी स्वरघे उर सहे क
सके सब पेके सौ २६ दोहरा कुशके टेर सु
ने नहीं फिर फल सत्रुघ्न दीप विलोकि पत
नमैं जदपि भयो बहु विघ्न २७ रघुनंदन कों
अवलोकन निर्हीं कुस उरमां जन्ह नै सर सहु
निरंकुस सुगिरे रथ पे उर लाग नहीं सकु गि
रुयरमौग जरा जकले वरु २८ सुंदरी के
उ नूकपरे ग्रसि हैं हो जनवं हैं रैंन भागि गय प्र
टके नवं हैं गगन का फिलियो जवं हैं तब को
सकु कं फूल गये नवं हैं उविसोद रु २९ दो
हरा मिले कुस लिलवकुस लसैं चौं षिवा
जि नरु मूल रैन मैं वाफे सो भिये सर पति
गगन पतिनल ३० इति श्री रामजी ति विर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ चिंतायंमसमस्तकललोकलोचनचकोर
१५। चिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्रकायंसतुम्नसे
मेहूनेनामपैतीसमोप्रकासः हूपमा
लाछंद नगपमेरलमैंहूनेंरघुनाथजूति
हकाल चर्मश्रेगक्रंगकोसभस्तनैकीसैं
गनाल श्रासपासतिषीससोहनसूरसोद
रसाथ श्रेनिभगुललेगवनैनजइकीस
बगाथ । भगुलदोपकछंद बालमीक
थलवाजिगपज विप्रकालकेनिचेरस
पद्म पककोचिपडचोटकुवांथौ दोरि
दीहथेनुसारकसोंथौ २ छंद भांतिभां
तिसबसैनसंथोसो आघहाथुजनईस
सपासो सहस्रसनववंधुजथारेषेडषं
रकसनाकहँगारेः ३ छंद रोषुवेषुवहू
बौडलयौनमू इंद्रजीनलेगिश्राधुदयोन
कालकुपअमोकहूयोजू वीरसूरकिति
संभयोनूथ तोमरछंद वहूवीरहलेवहूसा
नि नवरीचलेनतिश्रेनि नवीरबालक
श्रेनि दलतेकियोहतिकांनि ५

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद तिन्हिं मारियौं तव बंधु नवहै गये सब बंधु
धु बहुवा तिलै बहु वीरु रंनमैं रहौ रुधिरी
२९ दोहरा उपविक्रम मवल सील गुन रूप
तिन्हा रे रंण म काकपक्ष परिवाल है जो तेस
व संग्राम ७ श्रीराम चन्न पादी गुनगन भंति
पालक रिपुकुल घालक बालक तैं रन रंता
दसरथ नन्द पसन न ग्रहु मेरौ क्रोद हल वना सुर
को हैं तौ कोऊ है मुनि सति काकपक्ष त
मुनि अन है तिन्है मारे जगत जालके कर्म
कालके कुटिल भयौं न मेरे ८ लक्ष्मन उ
वाच मरहट्टा छंद रामजी उवाच मुनि जै
सुभ लक्ष्मन रघुकुल रक्षन लेहु बाज को
सोधु मुनि सिसु जिन मारहु बंधु उधारहु को
धुन करहु विरोध बहु सहित दक्षिनों दैस
दक्षनों चलौ परम रंन धीरु देषत सुन वा
लक सोदरा उपज्यौ करुनो ग्रदभुत नवीरु ९
दोधक छंद लक्ष्मन को दल दीरघ देष्यौ
कालहू ने श्रुतिभी मजलेष्यौ है मैं कहरेव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ कहालवकीजै गेंवगहो किधौंखोटकदीजै १०
१५२ लववाच ए कनहो नियहैमनकीजै मोग्रह
देवरूप्रस्वनदीजै लछमनकौदलसिंधनिहा
रै नाकहवाँनग्रगस्ननम्हारै ॥ पुन छंद
कौनयहैश्रीरिवैरे नोहिनैंहाथसरासनमेरै
नैकनहींडचनोचितकौनें सरवगेश्रुधी
पनुदीनौं १२ लेपंत्रवाँनवलीजवपायौं प
ल्लवज्यौंदलमारिभगायौ यौंदोउसोदरू
वीरूसंचारे ज्यौंवनमावकपौंनविहारे १२
छंद भागनहैमहयौंलवलागै रांमकेनौ
मनैंज्यौंग्रहभागैं नृपपनृपयौंमारिभगा
ये वानवडेमंनुमंवितराये १४ विजयछंद
प्रतिरिमसौंकरके सवश्रीरघुनायककौं
रनरीनसें निहिवरनवारमईनइवारनप
गाहनैनगनैंविसे नहेजेमभफरैनिचलेंव
हिस्रोनसिरोविरचैं परिहरनसरीयैनार
निनेंजुनुपीककपेरनिंकीकिरचैं १५ न
राजछंद भरीचपैंचमूचमूपकाडिलछम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मैं भगेरथीमहूंरथीगयंदहूंदकोगनैं ल
वैनिकुसेकुसैं विलोकवेयुरामको उद्योरि
साइकैहूटीवैंधोसलाजदामको १६ कुस
उवाच छंद नहोमकराहैचहौंइंदजीतवि
लोकिनसूरैंनहैंउनभीत सदाजमलछ
मनउनगाथ करौजिनश्राउनीमानश्रना
थ १७ लछमनउवाच छंद कहौकुशजो
कहिआवैवात तिलोकतिहौंउपवीतहि
गात इनेपरवालवहिकुमजोन हियेंउप
जेकरुनारसश्रान १८ छंद विलोचनलो
चनहैंश्रतितोहि नजोहरुश्रांनिभजोकिन
मोहि हियैंउपजाइनमानहियाउ छमौंश्र
पराधश्रजोंघरजाउ १९ हनौछंद हौंहनि
हौंकवहूंनहितोहि नूवकवांननवेपहि
मोहि वालकुविप्रकहाहनियें लोवश्रलो
कनिमैंगनियैं २० लव छंद लछमनहा
थिहथ्याहूयरै जगपहपापश्रकोनकरै
मैंरूपकौंकवहूंतैंजो महुवंध्योंसोरेइवं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा॰ विलजै॥ २१ ॥ दोपक छंद ॥ वोत्रुपक्षनवलक्ष
१५२ मन्नछंछयो चर्मुवम्रुवद्रूपात्तिहृदैछयो ॥ ताहिरि
15 येंक्रशचित्तहि मोहै ॥ प्रेमैंमित्रजनत्रयावक्रसो
है ॥ २२ ॥ छंद ॥ रेषवेषनववात्रुलयो ज्ञ ॥ योनव
क्रजिमचित्तभयो ज्ञ ॥ मोहि मोहि रयछपरसो
प ॥ ताहिरे षिजनउंजेगमरोप ॥ नराज छंद ॥ २३ ॥
विरांमुरांमुजांनिकैंभरथसौंकथ्याकहै ॥ वि
चारिचित्तमांकवीरवीरवैकहोंरहै ॥ सरोषदे
षलक्षमनैंत्रिलोकनौविलमहो ॥ ग्रुदेवदेव
तात्रसैंकहातिवालिदीनदो ॥ २४ ॥ श्रीरामह
नवत्ति जाहूसरहतलक्षमनैहैनहींइहका
ल जाइकैंपहवातविनवद्वरक्षियो भ्रुतिवा
ले हैसमस्यसनाणवैप्रसमण्डुंऔरुप्रनाण्ड
देषवेकहैंलाइयोपरभ्रुत्रउनमगाण्ड ॥ २५ ॥ छं
द ॥ भगालक्ष्मांदागपनवहीवद्रू ॥ वारखकार
नक्षारनरक्ष्म ॥ वैवद्रुभोननिसैंनसैंचोंरहल
क्षमन्न नौतिन्ह जद्रसैंचारारह ॥ २६ ॥ छंद ॥ वा
लकजांनित्तनैकरुनोंकरि ॥ वैभ्रुतिठौटम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पदलसंचरि वैसोंहूंनभाजनगाजनतैंहूंरेन
वीरसुनाथ्यभपविनुलछमन २७ छंद जो
नैनजीउनिकौंमुनिवालक वैकोऊहैंजग
तीप्रतिपालक हैंकोऊरांवनकेकिसहाइक
कैलवनाहरकेसुषदाइक २८ भयछंद
वालकरांवनकेनसहाइक नालवनाह
रकेसुखदायक वैनिजपातकहैछनिके
फल २९ छंद जीतहिकोरेणमेसत्रुघ्न
नहिं कोकरैलछमनकेवलविचनिहिं
लछमनसीपतमीजवतेवेंन लोकमुलो
कनिहूरहैतेंन ३० छंद छाडोईचाहत
तेंनबतैतउ पाइनिमित्तकियौमनुपावतु
सत्रुघनतजोतनसोदरूलाजनि सुनभपू
तजिपापसमाजनि ३१ छंद पातककौं
नतजीतमसीता पांवनहोंतसबैजगगी।
ता दोषविहीनहिंदोषजिलावहि सोप्रभु
पफलकाहैनपावैं ३२ छंद मातनकेंन

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंदु रनमहंनिहतीरथजाइमैरेगे अवसेग
तिदोषअसेषहूरेंगे वानरनिछनवानरसेव
निमारे गर्ववढेरखुवेसहि मारे नालगि
कैयहवानविचारी हेप्रभुसेनतिगर्वप्रहा
री ३२ चेचरीछंदु जोधकैअतिमहुअंगदु
अंगसेगरकैंचले जांमुवंतचलेविभीष
णरभूपभलेभले कोगनैचनरंगसेनति
सेदसीन्रपत्नाभैंरी जाइकैअवलोकियौं
रंनमैंगिरिगिरसेकरी ३ इतिश्रीरंद्रजीतवि
रचितायांमनसकललोकलोचनचकोर
चिंतामणश्रीरामरामचंद्रकायांलक्ष्म
नसेमोहनंनामछत्तीसमः प्रकास ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐ रूपमाला छंद॥ जो मवंत विलोक जैरंजभी १३
मेम्हन वेन श्रोनि कीन लिमा सुनंत सुनंतरू ४४३
पडुरेत जवत चघुना परे भटदीह दीह नम्हप टू
टहूट मनौं गिरेसु भहद्ध नाल सुरूप १ छंद ३
जंझ जरित बसिंदन सोभिजै जनरूव टेल
टेल चले गिरीस निपेल श्रोन नसूर यारू जेय
नंग काछप वारु वर्म विसाल चक्र सेवथ वक्र
पेर निगी इन्हू इमाल २ छंद केकवे करबा
रूमीन गावंद सुडा भजेग वेरचौंर सदेस केस
वषग समान सुरंग वाल का बक्र भांत है म
ति माल जाल प्रकास पेरि पारि भए ति हैम
नि वाल के सब दास ३ दोहरा नाम वर्न लघु
वेषलषु कहन रीवंत इतौ बडौ विक्रम्नु कियौ
जी तैसो जइ सुनंत ४ भर्तृ हनवंत सुनंत नदी
श्रवनाथौ रघुनाथ महोदर जी अभिलषौ ज
व आन मेर हनुमत्कि हुहिं नाषि गपेरो श्रवना
थ इस सौकन भीति भए है ५ हनूमंत उवाच दोह
रा सीतापग मनमष इहुतेवा रामसिंहकेमार वि

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा सुष्रभमपकौजानहै भर्थेसनैसहूवार ९
१५४ बेउ पंतवानपरे सुनिवालकग्राप जंनम
नमथकेजगतलपसहाप करिवेकहं सरनि
कोमडहीनी रघुनाइकमानइ होविपकी
नै७ भरथउवाच सुनिवालकहैतमजगप
करावौ सकियौंवरवाजनिबायनपावौ
ग्रपवाथ्रबमोसत्र ग्रामिपुरीजे वरवाजन
मोतिपरोसनकीजे ८ दोहरा वाथौंपट्
नसीसपरबरनिकाजप्रकास रोसकरो
विप्रकाजनसमूहं भविप्रनिकेदास ५ उस
उवाच दोपककडः पालकासबकहोनम
कासो देहनिसोकियौजीवप्रभासो हैज
उदेहकहै सत्रु कोई जीउसवालउहइ न
होइ ९ कै वोउ जीउमरेनजरेनहिछीजे ताको
हसो बुकहोकहिकीजे जीवहिविप्रनछियजानै ११
केतमदेहहमैंकछुसिखा केहंमदेहेतनेहवह
सिखा विनविचारिपरे सोईकीजे दोषहमै
नकछग्रबदीजे १२ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

छंद विश्वभालकनिकीमनिवानी ऊपमुर
सनभैप्रभिमानी विश्वपुत्रनमसीससम्हारी २५५
राषिलेहिप्रबनाक्लिपुकारौ ४ लवउवाच ॥
छंद सुग्रीवकहातमसोरंनमझौ नैकोंप्र
तिकातनजानिकेबंधो बालनम्हेसबना
चनवाए मोमोवकोरनेमंडनआए ५ छं
द फलहीनसनकहवानचलायौं अनिवि
नभ्रमौंवद्धधामरिकायौ नबहोरिकेवांन
विभीषनलीनौं लवताहिविलोकनिदीह
तिदीनौं ६ लवउवाच छंद आउविभी
षनतेंरणहूषन एकनहीजलकोकिला
हूषन ज्यजरेनभजेभयजीके मत्रहिआ
निमिलेतमनीके ७ छंद देववभजवहोह
तिल्यायौ कौतवसीवहिताहिनआयौ
नौअपनौंजियकेडरआए छंदसवैजलछ
इबनाए ८ दोहरा जेगेभथाभ्रन्नदाराज्ञा
पितासमान नाकीगिलेनैकरीपतनीमात
समांन ९ दोहरा कोजानेकेबारतेकही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा न हैहै माइ तो ऐतैं पतिनी करी ह्वनि पापनि के रू
१५९ प १९ छंद मिगरे जगमाहं है सावन है रघुवं
156 सहिं पाप लगावन है पितुलोक हंत अंगन्ह हूजु
जियो घलजाइ हलाहल कौन पियो २० छं
द काकु है सब लोक अंलाज हिये कहि कौन
विचारि ह्यथा तिलिये अबजाइ कहौ कौ अगि
जरौ गल बंधि के सागर बूडमरौ २१ दोहरा
कहा करौं हौं भरथ सौं नौंन नहैं सब कोइ
तो से पापहि संग्रहै कौन पराजय जो होइ २२
विजय छंद ऊखमारि विभीषन ह्रास निहौ
अरुअंगन निमेसर गाजि गहौ रा भूमंत्र मे उट वे
टतंडी अति मअति रोम के मारे मरूप सोह
तिदंतनि की किरचें विचक्षोउ तिलोह केलो
लद रूप घइनें मोरतदंतके से गा सकवै जनु
कामी कपर कहूरा २३ दोहरा बहुतज्जुइ भो
भरथ सों देव अदेव समान मोह महारथ पर
गिरे मारे मोहन बांन २४ इति श्री इंद्रजीत वि
रचितायां मनसकल लोकलोचन चकोर चिंता

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

मतिश्रीरामचंद्रचंद्रिकायां भरथसंमोहनंनाम
पैंतीसमोप्रकास दोहरा भरथहिंजानविलंब
कलुश्रापगापरघुनाथ देष्योवरूसंग्रामथल ज
रुपह्योसविसाय १ छंद रघुनाथहिआवति
आश्रगाय रनमैमुनिबालकरूपराए गुनरूपि
सुसीलसोअपनेमैं प्रतिबिंबमनोनिजदर्प
नमैं २ श्रीरामउवाच उपेंद्रपज्जाछंदु सीता
समानमुषचंदविलोकराम एवोकहौवस
तहौतुमकोनग्रांम मातापिताकवनकवन
हिकमैकीन विद्याविनोदसिषपाकिहूप्रस
वीन ३ ऊशः चंचरीछंद राजराजकहा
म्हैममवंससैसबकोंम सवतीजहंसलो
गनजीतसेवसंग्राम ४ श्रीराम हौनजड
कहौकहैविचविप्रवेषविलोकि वेगवीरकथा
कहौतुमअपनीसिसरोकि ५ ऊशउवाच॥
कन्यकामिथलेसकी हमप्रज्जायदोष बाल
मीकअसेसकर्मकरेकृपाकरिमो६ अस्सस
मवेदियसववेदभेदवडाउ वापकौनसीना

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा उज्ञाननमाजलैरघुराइ ५ दीपकछंद जाउ
१५८ कीकेमुषअछरअने गंमनहीअपनेमतजाने
157 विक्रमसाहसमीलविचारे जउहथ्यागाहिअ
इथुडारे ६ श्रीरामछंदु अंगदजीनइनैगाह्निला
वौ केअपनेबलमाभिमगावौ वेगतुफाबद्ध
वितिविनाकौं आज्ञतिलोदऊदेह पिताकौं
छंद अंगदतौअंगअंगअंगनिफूलेपौनकेपुत्र
केहीअतिभूले जाइजरेलवमौनरुलेके वा
नकहीमनतषेडनकेके ८ लवउवाच ॥ छंद॥
अंगदजीनमनमैं बहुतैतो नौवहुसुतजकौ
हनकोतौ देषतहीजननहीजगतिहारी सोवत
वांसंगजनेवौंबरनोरी ९ छंद जादिनतेजव
राजकहाप विक्रमबुद्धविवेकवहाप जीउ
नपकिमरैचदिजैहै कौंपिनकौंसुतिलोद
ऊदेहै १० छंद अंगदहायगहेनरुजोइ जा
नतिनैतिलसोकटिसोई पर्वतपुंजनतिअंगद
मेले फलकेनलजोवाननिफले ॥ छंद वा
ननिवेषरहीसबदेही वांनरतेबरहुंमयौसही

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

भूतलतें सरमारिउडायो षेलकीकिटु
पायो ९२ बंदु सोभहीहै श्रप ज्ञरपरीसौ
हौतबदानटकोक्षमजैसो जांनकहुंनरे
नैउतपायो गौबलुविलुदसोदिसपायो
९३ बंदु वोलषषोज्ञमयोसुरमंगौ कैग
योश्रृंगारिसंककौसंगौ हावबुनायकहौं
जनतैसो राघज्ञगर्वगयोसबमेरौ ९४ बं
दु दीनसनीज्ञनकीजबवानी जीकहुना
लबवांननिश्रानी बादिदयोगिरमूमप
र्योई विहबलहैमन मायो मर्योई ९५
श्रीराम भैरवसेमटम्हरमरेबलषेतधरे
करिकरेको भारीभिरेरनमूपनमूपर
नरेटरेरुमकेविश्रेरेके वोससोपगाहू
नेऊसकेसबमृमगिरेनकटेहूगरेके
रामाविलोककत्यारसश्रद्रुतधायेमरे
नगनागमरेके ९६ बंदु वांनरादिकजि
तेनिसचारी सुनसबैरुकवानसंचारी
वानविषेमबहौजवजोप सिंदनमैरा

रा घुनंदनसोए ॥ गीतकाछंदु ॥ रत्नजोर
१५८ केसवकीसम्भूषनसंयहेजभलेभले दूनवं
तकौंजामवंतद्दीकौंवानिसौंअसिलेवले
रणजीतकैलवमयले हूसिमानकेऊरु
पायरे सिरुद्दषककेट लंगार आनन्दचूम
गोदडवोच्चरे ९२ इतिश्री इंद्रजीतविरचिता
यांश्रीमन्सकललोकलोचनचकोरचिंता
श्रीरामचंद्रचंद्रकायां ऊशालवविजवर्न
नेनामअष्टतीसमोप्रकास ३८ छंदु ॥ ची
न्हेरेवरकेविभूषनदेषिकेहूनवंतअब
हौविपवाकरीतमककेकीनहुरंत वाप
कोश्रवमारिकेरणमारिमाधुसवारि आ
नियोहूनवंतवोधिनआदिपैमहिगारि
दोहरा मानाअरुनकाकीकरीविपवाप
केहीवार मोतेअरनपापनीजापवेसऊ
दार २ दोधकछंद पापकहाहतिवाप
हिजैसे लोकचर्तदसटौरनपैहो राज
ऊमारकेहूनहिकोऊजारजजारककाव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

कुदोऊ ४ कामउवाच मोकहदोषकहा
मुनिमाता गाधिलियोजन्मत्योंजबधाम
होतमहीतिहवेरपटायो रामसिताकेव
मोहिसुनायो ५ दोहरा मोहिविलोक
विलोककेरथपरपोढे राम नीवनिछांडे
जड़मैंमाताकरिविश्रीम ५ छंद आप
गएनवहींमुनिनाइऊ श्रीरघुनंदनके
गुनगाइऊ वातविचारकही सिंगरीऊ
म उपुःकियोमनमैकलिंहस्रजंत ६
मुनिवालमीकउवाच छंद कोउमन
विलेवुनसंततसीने भावीकहुनमि
टेसुभगीते तूपरदेवनकीगुरुवेटी तेरी
जगुमितकहावनचेटी ७ छंद सिंगवेर
नमंडलमोंकगए अवलोकितहीअतिथी
नभए उहंवालनकोअतिअद्भुतविक
मअवलोकभयोमनकेमनमैश्रम ८
दंडकछंद ओनतसललिबरवाननस
ललचररसगिरवांतहतविषविभीनस

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा डारेगो है चवरपताकावडीवाड वाग्रनल
१५८ समरोगति भुजंगमवंतकेसववि चाखोहै
159 वाजस्तुर वाजस्तर गजसे ग्रनेकगजभर
घुसवधुरंडग्रस्तनिनिहाखेहै सोहै
निसदिन सेवरांम चंद्रकृपालवजीतकेसम
वसिंधसाचेहसपाखोहै ४ सीताजूउवाच
दोहरा मनसावाचाकर्मनाजोमेरेमनरा
मतौसववैमनाजीउटदोइचरीनविराम १०
दोपकछंद जीइउठौसववैनसभागी
केसवमोवतितेजनजांगी सोहतसीत
हिलेसुषकारी राघवकेमनिपाइनपा
री ॥ छंद मोदरंसदरभुवमिलेजहं व
रषावरषीस्मफूलनिकीतहं वहुघा
दिवदुंदुमिकेगनवाजत दिगपालग
येदनकेगणगाजत १२ ग्ररगड छंद ॥
रामदेवतमगर्वप्रहारी निमतछग्रति
उहहमारी जइदेदथमतेकहि ग्रायो
दासजानिप्रभुमारगलायो १३ रूपमालाछं

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

उ सुंदरी सतन मैं लह्यो दरबाजि लै सब पाइ साथ
लै मुनि वालमीक हि दीहू उथन माइ राम धाम च
ले भले जस लोकलोक पटाइ भांति भांति सुदेस के
बहु इंडुभी नि वजाइ १४ छंद भरथ लछमन स
त्रुहा धरभी रटारी न जात चौरङ्गवतन है उहांदि सब
र सुंदरू गात छत्रु है कर इंद्र के सम भो भिजे बहु भे
व मननंदन वडे पडे जप सहू देवनन्द देव १५ छंद ॥
जग पथली रघुनंदन देष श्राप धाम नि धाम नि
होत न बपार श्री मिथले सम सनाबड भागी सौं
सुत सा मनकी पग लागी १६ दोहरा वारि शत्र
हो पुत्र सुतन को सनमान न बदेषि पायो परमानंदु म
नदिगपाल निसम लेषि १७ छंद रगपर सन
कै रमापति दान देत ग्रसेष हीरनीर जवीर मान
कि वषि वारदि वेष श्रंगराग गनराग बाग फले
फले बहु भांति भोन भूषन भूम भाजन भूरमा
सरसात १८ दोहरा पञ्चम्र पुत्त गजवाज द्वै
तीन सरभि सुभवर्न एक एक विप्रहि दएके
सब सहित सवर्न १९ दोहरा देव ग्रदेवन्द देव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा अरु जिन ने जीव त्रिलोक मन भायो पायो सब नि
१८० कौ नाम सबै असोक २० दोहरा अपने अरु सोदर
16 नि के पुत्र विलोकि समान न्यारे न्यारे देस के न्द
पति करे भगवान २१ दोहरा कुसलव अपने
भरथ के नंदन पुष्कर तिछ लछमन के अं
गद भरा चित्र रन दछ २२ छंद भले पुत्र सत्रु
घन है दीह जाए सदा साधु सूरे बडे भाग पा
ए सदा मित्र पोषी हुने सत्रु छाती सवा है ब
डो हु सरो सत्रु घाती २३ दोहरा कुस को दई
कुसावती नगरी कोसल देस लव को दई अ
वंति का उत्तर उत्तम वेस २४ दोहरा पश्चिम
पुष्कर को दई पुष्करावती नाम तिछसिला ति
छ को दई लई जीत संग्राम २५ दोहरा अंगद
कौ अंगद नगर दीनो पश्चम ओर चित्रकेतु
चंद्रावली लीनी उत्तर जोर २६ दोहरा म
थुरा दई सुबाहु को पुरन पांपन गा प
सत्रु घात न कीन्ह पकै स्वास सबदी पमिर बुना
थ २७ छंद श्रीभगवान सर्व तिसू मम भई स

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वपुत्रभतीजनिवारिदई सबपुत्रमहाप्रभ
बोलिलिए वहुभांतनिकेउपदेसदिये २७
बामरछंद बोलिएनकूटहीनुमंडमैनकीजई
दीजीएसवातनातम्हूहनलीजई नेहतोरि
पनदेहुडछमंत्रमित्रकौं जेवतनरनाहृपैपमा
हनाभ्रमित्रकौं २८ नराजछंद नूपानषेलि
येकहूजवानवैडराखिये भ्रमित्रभममोरमो
ननाभ्रमछाखिये करौनमंत्रमूढमौनगूड
मंत्रषोलिये सपुत्रहोहूजेहूटैमटीनसौंन
बोलिये सपुत्रहोहूजेहूटैमटीनसौंनबोलि
ये २९ छंद हुषानपीरीपैप्रजाहितसमान
पारिये अपापसाधवृह्निकैजथापराधमारि
ये अगाधसाधवृह्निकैजथापराधमारिये ऊ
देवदेवनारिकोनवलीवनलीजई विरोध
विप्रवंससोसवषत्नकीजई ३० भजंगप्रया
तछंद परद्रव्यकौंनौंविषीसायलेषौ गुरस्त्री
निसौंजीवरसौनिदेषौ वढौकामक्रोधमदौ
मोहलोभे ३१ छंद जैसेंसंथहौनियहोजउ।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रा जोपा करौ मापु संसगै जेवु इवोपा हित होइ
१६८ सोपम जो देइ सिद्धा अपमीनि कौ देहु जेवा क
भिद्धा २२ छंद हित श्री ऊवादी परसी विहा
री करौ विप्रलो भीनंद पमौ पिकारी सदा द
या संकल्प को राखि लीजै द्विजानी तितो आप
ही दान दीजै २३ विजय छंद नेरह मंडल मे
इ तिन्ह नल भूपति जो जम ही सत्रु माथे केसे
हूं सत्रु निमित्र न ता कहुं केसब दास उदास न वा
पे सत्रु समीप परे तिहि मित्र हू सत्रु उदास ह रा
स कै जो वै विग्रह संधि निधान निसिंधु लो लो
वह हू वार नितो सुख सो वै २४ दोहरा राज श्री
हि वासि के सिंह हो इन उर अव दात जे सें तेसे
आपु व सताकं हे बीज हू नात २५ दोहरा १
दि विपसि घर पुत्र सब विहा करें देराज राज न श्री
रघुनाथ संग सोह ति वधु समाज २६ छंद
राम चंद चरित्र को जु सुनै सदा सुख पाइ ताहि
पुत्र कलत्र संपति देति श्री रघुराय २७ अस्नान
दान अनेक तीरथ कान को फल होइ नारि नर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्रहविग्रहक्षिद्रियवैसहृदुज्जिकोर ३७ विमला
केतु ग्रेसम भूमपापके कमलापग्रापमैंव
हाइ विदेहराजसैंसनेहभकरांगुकोकहा
२ लेहि हगुलकलोकलोकुग्रंतगुक्तिहोइता २८
हि पढैगुनैंकहैहैनैं जरांमचंद्र चंद्रकाहि
इतिश्रीइदजीनविरचतायांमत्तललोक
लोचनचकोरचिंतामणिश्रीरामचंद्रचंद्र
कायांश्रीरामसीतासमागमोनामउनता
लीसोंप्रकास ३९ ॥ इतिश्रीरामचंद्रका
यांसंपूर्णसमाप्तम् ॥ ॥ ॥ ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग
१८२

16

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ॐअथप्रकृतिकविचिंतामणिकौपिंगलकाप्र
स्तारादिकलिख्यते दोहरा गजमुखजननी
जनककेपगनिनाइनिजसीस चिंतामणि
कविसाहकौंदेतवनाइअसीस १ छपै मुक
तमालउरमेंगाइतहिंउतमेंगगेगगनि उतसि
तचंदनआउइतहिंसितकरलिलाटमनि उतहि
भालमनिलालइतहिंदगअनिलविराजत उ
तकसरतनलेपभसमइतिअतिछविछाजत
कहिचिंतामणिसमवेषपरिअतिअनूपसोभास
हित जयसाजकुसरजासाहिकौंगिरजाहरअर
धंगनित २ दोहरा सूरजवंसीभैसिजालसतसा
हमकरंद महाराजदिगपालजिमभातमुदसहत
चंद ३ कवित्त कविनकौंराजेभोजभ्रोजकोस
रोजवंधुदीननिकोदयासिंधुलाजसीलकोजहाज
कोटिकामसुंदरहैसाहिवीपुरंदरहै मंदरहै वेरु
वलुवारिधमथनकाज जेगमेजालमअवलंब
कुलआलमकौंवालमपराकोसवसूरनिकोसि
रताज विक्रमअपारसतसाजसेकोपारावारभा
रीभीरथंमनसमस्यसाहमहाराज ४ कवित्त।

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

पिं
१९३ 163

गाफेगाफेगाढगजपक्कनिढहावततनपावत
प्रतापसमताहिसकग्रक्कवै चिंतामणिभनत
गनततवेनेग्रनिगनसारदागनेससेसप्पक्कन
ग्रप्पक्कवैः नीरपिज्यों महिमानधीरमहाधीर
वीरपावकप्रतापक्षीरक्षीरपिकोंपक्कवैः प
पउनपपनसमस्यपानसाहनकोसुरनरनाह
चहचक्कनिचक्कवै ५ दोहरा चिंतामणिक
विकोहकमकीयोसाहमकरंद करोलछल
छनसहितभाषापिंगछंद ६ दोहरा साहन
पलिकेहुकमतेंमोमतिकोपरगास नैननि
कोंरविकेउयेंग्रंपकारकोनास ७ दोहरा कहि
मनिकविग्रउदीपहैजानबगावरलेहु सुभप्रका
सतवकरतजबपावतस्वरननेहु ८ दोहरा
तातेंचिंतामणिकरतनीकोछंदविचार पिंग
लकोमतदेषकैनिजमतिकेग्रनुसार ९ दोहरा
जयजयपिंगलनागजिनमगटितछंदप्रकास
जाहिमिलेवानीलहेवहुविधिविमलविलास १०
दोहरा संजोगीतेंपथमजोदीरघविंदसमेत सोग
रुवंकउमतहैकेंद्रचरणांतउपेत ॥ दोहरा श्री

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अथगणमे

रकह्यौवनलघुवरनस्तुपपककलजान गुरुवर
नौंलघुकरपढैहैतनकहूलघुग्रान १२ दोहरा ट
ठडढणछहयपांचयैचार तीनद्वयमेत चिंतामनि
गणपांचयपिंगलकहतग्रनेत १ अथमात्राप
स्तारः दोहरा प्रथमहिगुरुग्रपपरतलयग्रागेर
षसमान उबरेगुरुलघुदीजियेयौंप्रस्तारविधा
न १४ अथसंज्ञावर्नने दोहरा लकेकहेलघुजा
नीयेगकेकहैगुरुजान ग्रायुधनाममनिपंचक
लनरगवनकलमान १५ दोहरा गुरुद्वैकर्न
बषानीयें द्विजवरचौलघुजान द्वैलघुप्रियधन
लघुगुरुगुरुद्वकाहमबषान १६ दोहरा त्रिगु
रुमत्रिलघु नआदिगुरुभलघुआदियबषान
गुरुमध्यजरलमध्ययतग्रंतगलघुउरग्रान
चारभस्सेहैंआदिकेकवितग्रादिसुभजान १७
दोहरा महिजलग्रगनिरुपोनकहिव्योमसु
रफ़निरेउ नागसूर्यगणादेवताभनिप्रस्ता
स्तारफनिंड १८ दोहरा मगणकहतवसु
वरणहैगनकहावतहूय नायकन्नपतिप
योधरोजगनकहतसमरथ १९ दोहरा मग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र०
१६४ ननगानहैमित्तहैं यभदैभत्तवषान उदासीन
जगगनगानोरमैदैसत्रुजमान २० कवित्त:
मित्रमित्रसिद्धिजयमित्रजैसेवकमिलैं मित्र
उदासीनमैनलत्तितिरपारीये पीउमित्रवै
रीकाजसिद्धिमित्रभत्तभपंभत्ताभत्तसकल
विनासनविचारीये भत्तउदासीन हानि हनि
वहैभत्तवैरीउदासीनमित्रनीसपारन विहारी
ये उदासीनभत्तनिविपनि उदासीनदोऊविफ
लैहैवैरीविरोपनहिटारीये २१ दोहरा सत्रुमि
त्रमैसनफलसत्रुभत्तनीयनास सत्रुउदासैह
निहैग्रहिग्रमुक्वयग्ररमास २२ ग्रप्यमात्राउहि
२ दोहरा ग्रथमपकक्रनिहमरोहैहैवक्री
मिलाइ देहग्रंकमत्तानकेयहविधिग्रुपिविल
साइ २३ दोहरा रोषग्रंकमैमेटिपग्रुसिरके
जेग्रंक वच्योग्रंक उहिहजेहंजानलेङनीसंक २४
ग्रप्यमात्रानह दोहरा नहमाहकविलग्रुक
लात्योंहीग्रंकमिलाइ रोषग्रंकमैफ्रुनितहा
हच्योग्रंकमिलाइ २५ दोहरा तामैग्रंकग्र
फ्रुनिचरैतानीचेकीमन परमनालैहरयु

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

रकहतसकविप्रउरत २६ दोहरा मत्ताकोउ
द्दिष्टग्ररुनष्टकहोनिरधार वरननिकोउद्दिष्ट
ग्ररुनष्टकलेसनिरधार सकहतविचार २७ ग्र
थवर्नउद्दिष्ट दोहरा हेनकमदेग्रंक लघुग्रंक
निपकमिलाइ वर्नउद्दिष्टवनाइकेताहीछिन
ह्वैजाइ २८ ग्रथवर्ननष्ट दोहरा नष्टग्रंककमे
बांटिकरसमवांटेलघुहोइ विषमएकदेवां
टीयेगुरुतेह्यानौलोइ २९ ग्रथमात्रामेरु
दोहरा द्वैद्वैकोटासमलिषह्रएकग्रंकताग्रंत
ग्रादिएकद्वैयकनीपकुचारियोंसंत ३० दोह
रा सीसग्रंकतासीसकेग्रंकजुगलहमिलाइ
मत्तमेरुकेग्रंकयोंग्रौरोंभैरोबनाइ ३१ ग्रथव
र्नमेरुः दोहरा ग्रछरगनतीकोटकरिग्रादि
ग्रंतपरिएक धरियै ३२ सिरग्रंकजुगवर्नमेरु
सहविवेक ३२ ग्रथमात्रापताका दोहरा ग्रं
करीतिउद्दिष्टकीदेकरिताकेग्रंत एकैएक
मिटाइकरिसमफलेह्रुपिवंत ३३ दोहरा
शेषग्रंककहरवनरेपरिकैउवरेग्रंक द्वैद्वैवग्रारि
मिलाइकैमेटोग्रौरनिसंक ३५ दोहरा वाम

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र
१६५
165

रवउवरेवद्धरिग्रंकपरेनिरधार याविधिजी
मेचारिक्कनिश्रोरेंमेटिविचार ३६ दोहरा प
कग्रंकलोपीपैंगतिहोनपकानिरधार केसव
गुरुकैपकगुरुकैलघुकेप्रस्तार ३७ दोहरा
प्रबैउतरमेकुलदिदीजैबुधिउदार गुरुप्यान
हैलोपैनेहिगुरुपलुयाविधिगेरनिहार ३८ दो
हरा मनपताकाभातयहलीजेसुजननिहा
र पिंगलमतिसवसमुफिकविकविमानिक
हतिविचार ३९ ग्रथवर्नपताका दोहरा उदि
ष्टसमग्रंकदैमेषमिटावद्धग्रोर याविधिवर्नप
ताकउरचतिसवद्धिसिरमोर ४ दोहरा ग्रंक
उदिष्टकेईहांग्रावतगुरुबलकाज वर्नपता
कारीतियहरचतिसवद्धिसिरनाज ४१ ग्रथ
मात्रामरकटी दोहरा पांतिब्रकोटाकीजी
येंमनसंख्यप्रमान पकादिकनहग्रादिदैष्ट
रवपंकतिविधान ४२ दोहरा हजीमेंउदिष्ट
केपरीयेंग्रंकवनाइ गुनिदोउरविजीसरीक
विमनिकहतिसनाइ ४३ दोहरा चौथीपंकि
कोग्रंकलैसोपिजीसरीपांति चौथीष्टीये

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

अ्रपिपंकतिमिषअंकयाभांति ४४ दोहरा चौ
थीपैंचईजोरि करछवी पांतिनिरधार मतम
रकटीभांतियहकविमनिकहतिविचार ४५
दोहरा प्रथमपांतितेंएककलहिकलादिक
कोहान हजीतेंप्रस्तारकीगन तीजानतजान ४६
दोहरा सकलकलाप्रस्तारकी समकतीसरी
पांति चौथीमैंगुरुपांचईलघुजानोयाभांति ४७
दोहरा छटीपांतिमेवृद्धिवलवरनसकलपहि
चान कविचिंतामनिकहतिहैपिंगमतियौंग्रा
न ४८ प्रथवरनमकरटी दोहरा वरनसंख्य
तहकोटरचिपंगतिसतहाविचार एकादिक
देअंकतेंहप्रथमपांतिनिरधार ४९ दोहरा मो
तिहसरीद्वैवहूरिइगुनीदीजैअंक प्रथमहिंथ
तिफनितीसरीद्वैगुनग्रौरनिसंक ५० दोहरा
चौथीपैचईपंकतिफुनिअ्ररपअंकसहान क
रिकैतीसरीपांतिकेहरैकहतिप्रमान ५१ दो
हरा तिगुनीकरिकैपांचईछटीपांतिभरिले
हु वरनमरकटीयौंरचौयामैनहिंसंदेहु ५२
दोहरा वरनज्ञानपहिलीपंगतिदूजीहैमता

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र॰ र तीजीवरनकितेकयहचौथीगुरुनिरधार ५२
१९९ दोहरा पैंचईमैंलघुजानीयेंमनोंबढतीनिहार
166 कविचिंतामनिकहतिहैंबुधिबललेहुविचार ५४
इतिमात्राप्रस्तारादिकज्ञाननष्टावर्णप्रस्तारा
दिकथानसमाप्तं ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ॐस्वस्तिश्रीगणेशायनमः अथयाकुदिलास
लिख्यते गर्भरोलाछंद बालकदानरूपकेसु
खसोजोहूटेलैपरियेंआदितवारमदापरूप
मेतियभुजनाइनकरियें जोतिनकेरेपुरुष
मिलकोटिककामिनगर्भनपरिये तामेंतो
कछुसंसानोहितिहकोकोंमपचारे पुनःदो
हा नोसादरअरुफटकरी पीसबराबरलेपको
हाकरकेकामिनीभगकेअंदरदेय तरणीजा
पनिजीवहो यथातननहासमायगर्भपरेनाह
कामनीसोपुरुषनपेजाइ चौ पुरषनिवल
कामनिमहमेंतदोनोअंगारमिकरिरेन निवल
पुरुषसध्यापरहहेवहनिकाममनकोचहे
ताकारनकीनोउपचार तानेंकामअंगरइडा
रपकटंककर्पूरकरीजेटंकनखारलैतामेंदी
जैपीसोयहनानाकरदोऊमाजादोऊषापजो
कोऊनावावेलसोताहिखिलावेकामरहित
कामिनीहोइजावै कोमहरणविध चौ॰ का
मिनीअतिकामीजोहोई ताकेपुरुषनपरहैवे

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

ग्र कोई जोदशापुरुषसूरतमिलकरे कामिनत
१९० नहिनधीरजुधरे वांध्यावेलसुश्राजोकोई ताके
लिंग‥ हिलेवेजोईक्काकासक्षुहकावे सोईसके
नवलगभैदोहोईताहीकोवहमीकरलीजेदो
कपपरमानकरीजेनागरवेजहिसंगखिलावे
जन्मांतरदीपुरषनभावें अथगर्भपाता वा
हकामिनीगर्भजदोरेनानरलाजजक्कमेहावें
जारगर्भकेलहकहीननाजेकरेगर्भकोएी
नग्रेसाकर्मकरेजोकोईगर्भपातसोपातक
होई तीनमासावालकनिर्जीव चौथेमासमा
नेपरजीव निर्जीवगर्भगिरेनोगिरि चतुरही
मासदीचित्तमेंधरेनोयहियत्नचित्तमेंसोंचे
जोचाहैगर्भह्रिमोचेतवलीजेमदरंडमूलकु
टतेलजानेसमतूल इंद्रायनमूहूगुंदालेईतो
कसीसमवदायकोरेइ इकरकमंकवलीजिप
सवें लैमिलवारपीसियेतवें वातीकरेजोनि
मेलेर गर्भतात्विणमोचकरे पुनःचौ सोवा
सागसुकावैकोई पुनमेथ्यीताहिसमहोई

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नागरवीजसहतामेघरैं बंधुवीजपकंतरकरैंस
लिताकेजलमांहिसकावैं दसमेभागनीरसुषा
निपावैं तोलो नीरसेरदशमानपकसेरजोर
हैनिधान वीसटांकमासेसमवीजैतवयहका
ढाकरकरपीजै काहेगर्भविनाहिपीरचौवी
दिनजोपीवेनीर ८ इतीद्रावन चौ कीटसर
दइरतजिनपरपवसैं सुषतेफेनग्रपिकमोलहि
पीहेफेनग्रपिकसौसानैंगोलीगंजवरावरटानैं
नागषलसेकामनिवाईतगलिनकामषालिनहु
इजई जामैंतोककुसंसानाही कविजनकहत
ग्रंथकेमांहि ७नः वैंगनपक्कपीतरंगहोई उर
तेरलेग्रावेकोर शूद्रकादजगहरकरै पांच
टांकलेपीपरपरै कपरोटमांटीलपटावैं सात
परतकरधूपसुकावैं नाहिग्रग्रमेलेद्रपचा
ई सोरंगलालहोइतवजाई पीपरकाढसुका
वेकाहि ओषधलेमेलेतामांहि टालचनेकीता
समलेई ग्रापाभागफटकरीदेई पीसछान
मैदाकरपरैंमधुसोंगेटसगोलीकरें इतीलेप

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

नीरघ्यसलावैं सुरतकरनकामिनसुखपावैं के
शहद्वचौहरसी पाननजला३केकारजोकोइग्र
जासखीरमिला३केसीसहिलावैसोईसातो
तीनलगायकेपाछै श्रोवरनीर वपेग्रलेभुवं
गसमषपामधूपकीभीर कल्पचौ॰ बीसटं
कलहहरणलीजैपांचतासिमैमटटीदीजै ३
समैटंकपांचहीकरा यहग्रमाणग्रंथ्यनमेल
साहकेपाननीलकेलहिये उवसावाहिज
गतमेकदिये जदाजदासममैदाकैहीतेव
सझानकरयैरं दोहा ग्रचरग्रोवरग्रानिकेरमे
रपरादिननीन नेवेवसमेपानिकेकरलीजैरं
गीन पीसी गैषपवाहिकरनीरग्रोवरेलोहप
त्रमेंमेलकरघसैलोहसोंग्रानि चौ॰ जबलग
घसैनमनउकताई नवलगषपामहोपवह
जाई यहरदोषकामर्दनकरैं नवउटायग्राछी
विधधरैं दोहा तिलकातेललगायकैमस
लेकेसमूछ गाफावसहाथ्यलेडारेकेशसमूछ
लेपकरेतवकेशपरनीरग्रोवरेघोरेरेनजवी

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

तेह्वोतयहह्जुगतह्वोयसुजवलगभोर पानलपे
टपरंडकेवस्तरपरेलये ८ पीवेजवलगभोरऊं
चकेनाह्निसहेटतातानीरमगायके धोवेश्वा
वेरेनीरश्यामकेशशोभाकरेभाऊरूपकीभीर
केशग्रहार सोरठा चनाकलीरलाइकेलावे
कदलीनीरसौं केशहरहोइजाहूनाग्ररुहहरता
मिल सिरकसौंघसिलापलेपकरेजोकेशप
रनन वाररहइजाप मध्यमकेशकोहरकरि
तेलकरकरालापकुचलीजलसोधोइयेकेश
हरहोइजापप्रकुनगुणपंडिकसोऊंउलिश्रो ॥
पंडितगुनीसुजानसुनविनतीकरजोइसीस
निवापकरविनवोहियेहाथ्यजुगजोर हिये
हाथ्यजुगजोरिसुरनरसमुमरनकीनाचेदक
कुपाइचापचितजोपमदीना कविनमलेङस
म्हाजहांजानेकछुपंडितमोह्निदोषजिनदे
उपरमतानगुनपंडित चौपई कोईब्रह्मचर्य
दिषरावे कोईनाटकचेटकलावे कोईइंद्रजा
लदिषलावेकोइकायाकल्पबनावे कोईमो
हनलोकाविषकैरे कोईचित्तकामरनिहरे ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र कोईरूपपलटकेवदे कोईदेषजेरडोरकछु
१६८ कहैकोईउड्डाविद्याउडचलैकोईफूलअरितमे
169 फलेकोईजलवैरहेमज्जनवासीकोईअग्नसे
नकाउासीकोईतिनीवसजीवदिषावे कोई
चित्ररोकेअनगावैसमगुनीमिलकौतककी
नाजिनदेष्यासोअचरजभीना दोहा पअचरज
षेलेमिलेपकौतकपज्यान पकपकवर्ननक
रोरीजेचतरसुजान चौ जोचाहेमोकौतक
करेधीरजधरेनमनमोहरेसाजोगीजोजगत
हिजानेपंडितसोजोवेदवषाने जगततनहुकेनो
मधिआवै नातरजोगअकारपजावे हूकेनग
तकायनहिहोयमोकोदोषनदीजेकोय हरी
जगतहितैतेकामनववंदेकालीजेनामअव
हनकहेसकलकाअंग पकपकजेसामरसंग
जैसागुनमैकहोवषान पकपकसमलीजे
जानन मेराबेनतमदे जोजानेनाहर पसभमे
दवषाने दोहा सेवत्सोलहसैगनेअरुपचा
सवैसाष ग्रंतकालतिनलीजिपवेदभेदकामा
ष अथवशीकरन चौ सेवनअकेकामूलमग

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वैकुंठमजाइलीजै पतीनोसमकुंटवरावर १
नकाहूरनकीजै चिडाषानगीविसमलकीजैउ
सकाभेजषाने शेगरीचारशोणिनकाडेचार
वस्तुमिलसानेमरचवरावरगोलीकीजै तांको
कारुसकावै पहिलीजगतनहकेकोई नव
पङ्खेलहिपावैगोलीपकषिसावैनिसकोम
नसोमिटैमोहानिसदिनफिरसगहीलागा
मोचुंवकसंगलोहा पुनः कुसपतचौंदश
कैं पुरुषमस्तुजोहोवैउलीपकहरतालम
गावैतिसकेमुखमोपावै विनितेनहोयनि
मावसहलीकाफकरिसालीजै सोहरिता
लनीरसोयसकरमाथेतिलककरीजै जोव
हतिलकनैनभरिदेषैसंगलगाहिआवै सोव
तजागनपलकनलागेमायासोदउपजावै रा
जायरजावशवगानामाउधोइकेपीवै सोमू
रतचितनैनदिविसरेजवलगजगमेजीवै
पुनः पुष्पनक्षत्रमेजोकोइयेसादाउजोपा
वै आपेनाककोनजोकातीनाभीकाटमगा

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र॰ वै मुउदाजहांजोजलनाहोवैमेटानेलगगावै
८॰ पाछेतेलकढाहीवाहू पांचोवस्तुपकावै नवज
170 रक्षारहोपवहूपांचोतेलरक्षानकरलीजे पवंक
चहूलीक्षाहूरकतरपमाजतत्तजुकीजेलीतेल
हूपेलीभरकरमुषछुपरे ग्रहमाहूं राजापरजा
सजामित्रकेजापषराजोहोहू तेनोतेनमिलावै
हूसकरमुषसन्मुखदिषलावै जोदेषे मुषते
रावहूसंगलगाहियावैजोकवहुंनहि देषनपा
वैतोवहूवहूग्रहडलावै नवहूमुषतेरादेषनवव
हूवहूसुषपावै पुनः पावैरातसूदरावनैजहि
नवपहूपनवनावै ककैटकीचरबीग्रानेको
ईरोकनहिपावै ग्रहमसानकाकपडाग्राने
तिसकीवानीकरियेचरवीमाहूभिगावैवा
निदिपामाहूलैवरियेग्रानषापरीमानसकी
तिसमेदीपकवारेचढवैदेपिप्पलकेरु परतहूं
सोकाजरपावैसोकाजरआषनमेंआंजेद ग्रुतम
नकोमोहूदेवीदेरहूवसतरेमानसवपराकोहू
भटकीतेनलषेमुषजिसकाउदरकरपाछेला

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

गे जलवगवैनन मनसोउन्तेरशाहूगुरुकाजागेजा
मेजोकछुमसानाहिंयंग्रनदियोवनाई नाहरक
हूनसाचकरमानोकरकैदेषोभाई पुनः जोवा
हूवसकियाईकामनीरसवशकरसोलीजै चुके
नाहिंसिद्धकरनयोसावधानहूईकीजें कंगहिंसं
गकाम नीकादेहूटवालजेग्रावें कंगह्निमाहिंजो
केशकाठियनवयहूजननवनावे फिरयहूपत्न
कहोसनिलीजे नापाछेयहूकरिये जिसका
मनिकेपाजलावेनाहिंसोरतिमानी रोमरोम
तेरेवशहोई जानमोलकीग्रानीपुनः विल
हिकाकानकाटकरतहांसोलोहू ग्रावेतिस
मेवाहेमदनजलकोनहूकरयकमिलावे दे
नोवस्तरलायमिटाईजिसकोषानेदीजे जब
लगजीवे नमनसोविसरेयनननोवनहूरलीमे
पुनः उदरग्रानेविसालकी जैंतिसकाग्रोणि
तलीजेमदनग्रमनानिसमेंमावैजिसकोसा
नेदीजेषानेवेरनलागेरकमलननाषिनहूश्व
मनेरेजबलगजीवेनविसरेकवहूंरातिरेहूर

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

प्र सनैर जिसकेजाननकरेनरनारीसदारहैसव
१०८ समें सर्वग्रंथकह्योहै योविषमें वह्रविषवनला
ई नाह्रारकहनपोचाहै करकेदेषोन्तमभाई पु
नः जोकोईअपनेहाथ्यपाउकेवीसोनषउनंर
वि ग्रानग्रंगारकथररासेङ्कारदोपजोजावे न
षकीङ्कारमिलायषांडसोलेकरैजिमेंषिलावें
दिनदिनहैनिद्रियेकावाधे जीवननहिविस
रावे पुनः वाई ग्राषविह्लाकीग्रोने निशग्रादि
सकीलीजे पांनमिटाईमाप्यषिलावेषातेव
रनलावे नेरसवमहोई जोपसाषीरषाद
ज्यौंपांउपुनः जोकोईनारपुरुषसोविछुरेनि
सकोवसकरलीजे चमगीदरविउषानगी
देहकोविमलकीजे दोउकामासमकाय
पकरापीसह्रटकेपूरियै जवयह कामिनि
पियसंगसोवैपेंसिवियनवकरियें निपकी
पीवमसलसोईमेषसहूरजोपरियें लागत
ग्रंगसंगउटपावै जोवोदिनसंगकरियें जव
लगजीवद्विजगतमै जवलगैनेनभावे जव

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

वाहीकोदेषे नहीयातहिवहडषपावै पुनः चा
हैनारभुरुषवसकरने पैसीविपतवकीजे मूल
कनेरललकीअंने आदिनवारझलीजे पीसकु
टकेगोलीकीजैआनसकावै काहिआगेतजेन
कहोगाजैसानि समेंपोष्यनादितिलकोतेल
वारकरजोरजैसें छारदिषावै तववहतेलका
नइकवस्त्ररसीतलकरतनलावै जैंकामिनि
तनतेलहिमईनकरिकरिपिपसंगसंगसोवैपु
रुषहोयकामिनिकेवसकपटहियेकाषोवै
पुनः दानादोईसेत ॥

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

174

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri

© Dharmartha Trust J&K. Digitized by eGangotri